9591

आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

वर्ष 60

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

अंक 4

अप्रैल 2003

चैत्र 2060

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

स्वर्ण आभूषणों को
सौंदर्य का मंगल प्रतिक
माना गया है।
समय समयानुसार
इन गहनों के रूप बदले,
जिन में हमारी
वैभवशाली एवं शालीन सभ्यता
की छवी स्पष्ट होती है।
ऐसे ही कुछ अलंकार शिल्पोंका
अनुपम दर्शन संजो लाये है।
देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण निर्माता
''रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स'' जलगाँव
नई ऋतु एवं त्योहारों के स्वागत हेतु
सोने - चांदी एवं हीरों के
यह सुंदर अलंकार शिल्प!

सोने के गहने, हीरों के आभुषण
सब कुछ एक ही छत के नीचे

व्यापारियों के लिए सोने के गहने एवं
चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सुविधा

अवश्य पधारिए!
जहाँ विश्वास हि परम्परा है!

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी भांडी शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक, जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

सावधान : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नही!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● **प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● **सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● **सम्पादक मण्डल**
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तओ पुट्ठो पिवासाए,
दोगुञ्छी लज्जसंजए।
सीओदगं न सेविज्जा,
वियडस्सेसणं चरे।।
–उत्तराध्ययन सूत्र २.४

पापभीरु संयम-तत्पर,
अत्यन्त तृषा-पीड़ित होकर।
शीतोदक सेवन करे नहीं,
लाए प्रासुक जल शोधन कर ।।४।।

अप्रेल 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
चैत्र, 2060

वर्ष : 60 **अंक** : 04

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

निज विवेक का आदर क्यों?	: तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	7
विश्व क्या है?	: डॉ. (श्रीमती) मंजुला बम्ब	17
जैन विद्याओं में शोध (1983–1993) एक सर्वेक्षण	: डॉ. नन्दलाल जैन	24
अहंकार है विनाश का मूल	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	34
निन्दक नहीं प्रशंसक बनिए	: श्री नितेश नागोता 'जैन'	44
महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन (5)	: श्री चंचलमल चोरड़िया	47

विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय

ब्रह्मचर्य (2)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
प्रत्याख्यान	: श्री पी.एम. चोरड़िया	12
दशवैकालिक सूत्र (6)	: डॉ. अमृतलाल गांधी	15
प्रार्थना कैसी हो?	: सौ. कमला सिंघवी	23
मिश्र गुणस्थान और मिश्रयोग	: श्री धर्मचन्द जैन	40
स्वाध्याय की महत्ता	: श्री चेतनप्रकाश डूंगरवाल	43

कविता/प्रेरक-प्रसंग

रत्नवंश के मूल महापुरुष (2)	: भंडारी सरदारचन्द जैन	11
जीवन सफल बनाएँ	: श्री नितेश नागोता 'जैन'	16
जीवन मात्र जीना नहीं	: श्री प्रकाश कर्णावट	33
गुणों के सागर : गुरु हस्ती	: श्री मनमोहनचन्द बाफना	46
समझौता	: श्री गजमल लोढ़ा	48

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	49
समाचार-संकलन	: संकलित	50
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	58
बधाई / चुनाव	*: संकलित*	59
श्रद्धांजलि	: संकलित	60
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	68
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	72

स्याद्वाद का अर्थ

डॉ. धर्मचन्द जैन

वीतराग भगवान् महावीर का स्याद्वाद सिद्धान्त प्रसिद्ध है। 'स्यात्' शब्दपूर्वक कथन ही स्याद्वाद है। 'स्यात्' शब्द एक निपात है, जिसका अर्थ है- 'किसी अपेक्षा से', अपेक्षा विशेष से, कथंचित्, किसी दृष्टिकोण से आदि। 'स्यात्' (प्राकृत में 'सिय') का अर्थ शायद, संभवतः आदि नहीं है। 'स्यात्' का अर्थ शायद या सन्देहपरक लेकर कई भारतीय दार्शनिकों ने स्याद्वाद का खण्डन किया है या उसे अनुचित बताया है, किन्तु इसका सही अर्थ पकड़ने पर कोई भी दर्शन स्याद्वाद का खण्डन करने में समर्थ नहीं। यही नहीं प्रत्येक दर्शन अपेक्षा विशेष से कथन करने के कारण जाने अनजाने 'स्याद्वाद' को अपनाता हुआ प्रतीत होता है। किन्तु स्याद्वाद सिद्धान्त का स्पष्ट प्रयोग, चिन्तन एवं विकास जैन दर्शन में परिलक्षित होता है। व्याख्याप्रज्ञप्ति आदि सूत्रों में भगवान महावीर की यह कथनशैली खूब प्रयुक्त हुई है।

स्याद्वाद निर्दोष कथन की शैली है, जिसमें श्रोता को अनाग्रह बुद्धि से अपेक्षा विशेष के साथ कथन का अर्थ हृदयंगम करना होता है। 'स्याद्वाद' सिद्धान्त भगवान महावीर की भाषा समिति एवं उनके व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है। स्याद्वाद के मूल स्वरूप को समझने के लिए आगमों के कतिपय उदाहरण उपयुक्त रहेंगे-

जीवा णं भंते! किं सासता? असासता?
गोयमा! जीवा सिय सासता, सिय असासता।
से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'जीवा सिय सासता, सिय असासता?
गोतमा! दव्वट्ठताए सासता, भावट्ठयाए असासता। ते तेणट्ठेणं गोतमा! एवं वुच्चइ जाव सिय असासता

—व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र, शतक 7, उद्दे.2, सूत्र 36

भगवन्! जीव शाश्वत हैं या अशाश्वत हैं?

गौतम! जीव कथंचित् शाश्वत हैं और कथंचित् अशाश्वत हैं।

भगवन्! यह किस कारण से कहा जाता है कि जीव कथंचित् शाश्वत हैं, कथंचित् अशाश्वत हैं।

गौतम! द्रव्य की दृष्टि से जीव शाश्वत हैं और भाव (पर्याय) की दृष्टि से अशाश्वत हैं। हे गौतम! इस कारण से ऐसा कहा गया है कि जीव कथंचित् शाश्वत हैं, कथंचित् अशाश्वत हैं।

इस उदाहरण में जीव की शाश्वतता एवं अशाश्वतता अपेक्षा विशेष से प्रतिपादित है। द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा जीव शाश्वत एवं पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा जीव अशाश्वत है। जीव की शाश्वतता एवं अशाश्वतता का स्पष्टीकरण भगवती सूत्र के ही नवम शतक के ३३वें उद्देशक में किया गया है, जिसके अनुसार जीव शाश्वत है, क्योंकि वह कभी नहीं था, ऐसा नहीं है, कभी नहीं है, ऐसा भी नहीं है और कभी

न रहेगा, ऐसा भी नहीं है। वह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अवस्थित और नित्य है। जीव अशाश्वत भी है, क्योंकि वह नैरयिक होकर तिर्यंचयोनिक होता है, तिर्यंचयोनिक होकर मनुष्य हो जाता है तथा मनुष्य होकर कदाचित् देव हो जाता है। इस प्रकार अपेक्षा या दृष्टिकोण विशेष से जीव की शाश्वतता एवं अशाश्वतता का कथन स्याद्वाद को स्पष्ट करता है।

भगवान महावीर की यह कथनशैली संदेहवाद या शायदवाद भी सूचक नहीं, अपितु एक ही वस्तु को विभिन्न दृष्टियों से देखने एवं कहने की निर्दोष शैली को इंगित करती है।

लोक शाश्वत है या अशाश्वत तो उसका भी समाधान भगवान महावीर ने इसी प्रकार स्याद्वाद की शैली में करते हुए फरमाया-

सासए लोए जमाली! जं णं कयावि णासि ण, कयावि ण भवति ण, कयावि ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे। असासए लोए जमाली! जओ ओसप्पिणी भवित्ता उस्सपिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ।

अर्थात् हे जमालि! लोक शाश्वत है, क्योंकि यह कभी नहीं था, ऐसा नहीं है, कभी नहीं है, ऐसा भी नहीं और कभी न रहेगा ऐसा भी नहीं है, किन्तु लोक था, है और रहेगा। यह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। हे जमालि! लोक अशाश्वत भी है, क्योंकि अवसर्पिणी काल होकर उत्सर्पिणी काल होता है, फिर उत्सर्पिणी काल व्यतीत होने पर अवसर्पिणी काल होता है।(भगवती सूत्र शतक ३३, उद्देशक ६)

उपर्युक्त आगमवाणी में यद्यपि स्यात् (सिय) शब्द का प्रयोग नहीं हुआ, पर उत्तर स्याद्वाद की शैली में ही दिया गया है।

गौतम गणधर ने भगवान महावीर से प्रश्न किया- भगवन्! वायुकायिक जीव मरकर सशरीर (दूसरी पर्याय में) जाता है या अशरीर? भगवान् ने उत्तर दिया- **गोयमा! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ। (व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक 2 उद्देशक1)** गौतम! कथंचित् सशरीर(शरीर सहित) निकलकर जाता है और कथंचित् अशरीर जाता है। पुनः पृच्छा करने पर भगवान ने फरमाया- वायुकाय के चार शरीर कहे गए हैं- औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण। इनमें से औदारिक एवं वैक्रिय शरीर को छोड़कर जाने से उसका अशरीर जाना तथा तैजस एवं कार्मण शरीर के साथ जाने से उसका स्यात् सशरीर जाना कहा जाता है।

लोक सान्त है या अनन्त? स्कन्द परिव्राजक के इस प्रश्न का समाधान करते हुए भगवान ने द्रव्य एवं क्षेत्र की अपेक्षा लोक को सान्त तथा काल एवं भाव की अपेक्षा अनन्त प्रतिपादित किया है। जयन्ती श्राविका के द्वारा पूछने पर कि जीव का सोना अच्छा या जागना? तो भगवान ने फरमाया कि जो जीव अधार्मिकवृत्ति के हैं, उनका सोते रहना अच्छा है, क्योंकि वे उस समय किसी को दुःख नहीं देंगे, अधार्मिक क्रिया नहीं करेंगे और जो जीव धार्मिक वृत्ति वाले हैं उनका जागना अच्छा है, क्योंकि

वे जागृत अवस्था में जीवों को सुख देंगे, धर्म-जागरणा में लगे रहेंगे।

इस प्रकार नानाविध प्रश्नों का समाधान आगम में भगवान ने स्याद्वाद शैली में किया है, जो प्रश्नकर्त्ता के उत्तर को स्पष्ट करता है, सन्देह में नहीं डालता। इसलिए स्याद्वाद को शङ्कराचार्य, डॉ. राधाकृष्ण आदि के द्वारा शायदवाद, संभावनावाद या संशयवाद मानना उचित नहीं है।

आगम में निरूपित स्याद्वाद की यह शैली जैनदर्शन के स्वरूप एवं विकास का महत्त्वपूर्ण आधार बनी। जैनदर्शन में प्रत्येक वस्तु को '**सिय सासया सिय असासया**' एवं '**उप्पनेइ वा विगमेइ वा, धुवेइ वा**' आदि वाक्यों के आधार पर नित्यानित्यात्मक स्वीकार किया गया। प्रत्येक वस्तु द्रव्य की दृष्टि से नित्य एवं पर्याय की दृष्टि से अनित्य स्वीकार की गई। आगम वाक्य के आधार पर वाचक उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र में सत् (वस्तु) का लक्षण दिया-'**उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्**' अर्थात् जो उत्पाद,व्यय एवं ध्रौव्यात्मक है वह सत् है। उत्पाद एवं व्यय से पर्याय का तथा ध्रौव्य से द्रव्य का बोध होता है-इसलिए वस्तु को द्रव्यपर्यायात्मक भी प्रतिपादित किया गया। द्रव्य में समरूपता या समानता दृग्गोचर होने के कारण उसे सामान्य एवं पर्यायगत भेद के कारण विशेष स्वीकार कर वस्तु को सामान्य विशेषात्मक कहा गया। इसी प्रकार उसे एकानेकात्मक,भावाभावात्मक आदि विभिन्न स्वरूपों से व्याख्यायित किया गया। इस व्याख्या का कारण रहा-वस्तु की अनेकान्तात्मकता। वस्तु को अनेकान्तात्मक (अनेक धर्मों वाली या अनन्त धर्मों वाली) मानने से जैन दर्शन में अनेकान्तवाद प्रसिद्ध है। अनेकान्तात्मक वस्तु को जानने के लिए नयवाद एवं उसका कथन करने के लिए स्याद्वाद की प्रतिष्ठा बढ़ती गई। भगवान ने जो दृष्टि प्रदान की उसके आधार पर जैनाचार्यों ने अनेकान्तवाद, नयवाद एवं स्याद्वाद की प्रतिष्ठा में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। आचार्य सिद्धसेन एवं आचार्य समन्तभद्र के नाम इस दिशा में प्रमुखता से लिए जाते हैं। मल्लवादी क्षमाश्रमण, जिनभद्रगणि, हरिभद्रसूरि, अभयदेवसूरि, हेमचन्द्रसूरि आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं। दार्शनिक युग में एक समय ऐसा आया कि स्याद्वाद, अनेकान्तवाद एवं नयवाद जैन दर्शन के पर्याय बन गए। जैनदर्शन के अध्ययन का तात्पर्य स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद का अध्ययन हो गया।

आज भी अनेकान्तवाद, स्याद्वाद एवं नयवाद की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है। अनेकान्तवाद मात्र वस्तु के स्वरूप का सिद्धान्त नहीं है, अपितु यह आचारशास्त्र से भी जुड़कर मानवीय व्यवहार एवं उसके विभिन्न आयामों की व्याख्या में प्रयुक्त होकर समन्वय स्थापित करता है। स्याद्वाद उस अनेकान्तवाद के प्रतिपादन, प्रतिष्ठापन एवं विकास में सहायक सिद्ध हुआ है तथा नयवाद ने वस्तु को विभिन्न कोणों से जानने का सामर्थ्य प्रदान कर मानव-समुदाय का विकास किया है। जहाँ अनेकान्तवाद, नयवाद एवं स्याद्वाद हैं, वहाँ आग्रहवाद एवं संकीर्णता को कोई स्थान नहीं है। वहाँ तो व्यापकता एवं विशालता के साथ दृष्टिकोण में उदारता का समावेश सहज होता है।

ब्रह्मचर्य (२)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

❋ दुराचारी व्यक्ति आत्म-गुणों को ही नष्ट नहीं करता, वरन् भावी पीढ़ी को बिगाड़ कर समाज के सामने भी गलत उदाहरण प्रस्तुत करता है। अतएव कहा है- "शीलं परं भूषणम्" अर्थात् सोने-चाँदी आदि के आभूषण एवं वस्त्रादि बाह्य सजावट की वस्तुएँ वास्तविक आभूषण नहीं हैं, किन्तु शील ही मानव का परम आभूषण है।

❋ जिस मनुष्य के मस्तिष्क में काम-सम्बन्धी विचार ही चक्कर काटते रहते हैं, वह पवित्र और उत्कृष्ट विचारों से शून्य हो जाता है। उसका जीवन वासना की आग में ही झुलसता रहता है। व्रत, नियम, जप, तप, ध्यान, स्वाध्याय, संयम आदि शुभ क्रियाएँ उससे नहीं हो सकतीं। उसका दिमाग सदैव गन्दे विचारों में उलझा रहता है। पतित भावनाओं के कारण दिव्य भावनाएँ पास भी नहीं फटकने पातीं। अतः जो पुरुष साधना के मार्ग पर चलने का अभिलाषी हो उसे अपनी कामवासना को जीतने का प्रयास प्राथमिकता से करना चाहिए।

❋ आज इस विषय में अनेक प्रकार के भ्रम फैले हुए हैं और फैलाये जा रहे हैं। एक भ्रम यह है कि कामवासना अजेय है, लाख प्रयत्न करने पर भी उसे जीता नहीं जा सकता। ऐसा कहने वाले लोगों को संयम-साधना का अनुभव नहीं है। जो विषय-भोग के कीड़े बने हुए हैं, वे ही इस प्रकार की बातें कहकर जनता को अधःपतन की ओर ले जाने का प्रयत्न करते हैं। 'स्वयं नष्टः परान्नाशयति' जो स्वयं नष्ट है वह दूसरों को भी नष्ट करने की कोशिश करता है। ऐसे लोग स्थूलभद्र जैसे महापुरुषों के आदर्श को नहीं जानते हैं, न जानना ही चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि ब्रह्मचर्य आत्मा का स्वभाव है और मैथुन विभाव या पर-भाव है। स्वभाव में प्रवृत्ति करना न अस्वाभाविक है और न असंभव ही। भारतीय संस्कृति के अग्रदूतों ने, चाहे वे किसी धर्म व सम्प्रदाय के अनुयायी रहे हों, ब्रह्मचर्य को साधना का अनिवार्य अंग माना है।

❋ सम्पूर्ण त्यागी साधुओं के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का अनिवार्य विधान है और गृहस्थ के लिए स्थूल मैथुन त्याग का विधान किया गया है। सद्गृहस्थ वही कहलाता है जो पर-स्त्रियों के प्रति माता और भगिनी की भावना रखता है।

निज विवेक का आदर क्यों?

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

मनुष्य अपने ज्ञान का आदर नहीं करता, उसे आचरण में नहीं लाता। यही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। यदि वह आचरण में ले आए तो जीवन बदलते देर नहीं लगती। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती विद्वान् सन्त तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के द्वारा 9 नवम्बर 2002 को बालकेश्वर, मुम्बई में फरमाया प्रवचन इसी बिन्दु का विवेचन एवं पाठकों का मार्गदर्शन कर रहा है। प्रवचन का अंश ही हमें स्वाध्याय संघ के माध्यम से प्राप्त हुआ है। *-सम्पादक*

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुम्हें रिझायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये।।
जबसे जन्म लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा।
सद्बुद्धि को है हमने, रखा सदा दबाये।।1।।
निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं।
तेरा ध्यान जब लगायें, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये।।2।।
जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
इक दूसरे के सुख में, खुद को बड़ी जलन है।
कर्मों का लेखा-जोखा, कोई समझ न पाये।।3।।
जब कुछ न कर सके, तो तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजा ये।
अब ज्ञान हमको दे दो, कुछ और हम न चाहें।।4।।

अहंकृति का नाश करने के लिए गुरुकृपा रूपी शस्त्र से सुसज्जित हो संपूर्ण कर्मों का नाश करने वाले वीतराग भगवन्त और वीतराग भगवन्त द्वारा प्ररूपित वीतराग वाणी के आलंबन से गुरु पद का शरणा लेकर गुरु पद को सुशोभित करने वाले आचार्य भगवन्त को वन्दन।

निज विवेक का अनादर करता हुआ प्राणी निरन्तर अपने पर कुठाराघात करता चला जा रहा है। विवेक को ठुकराने वाला ठोकर खाता है और विवेक के प्रकाश से कोई रूपान्तरण कर सच्चा धर्मी बन जाता है। धर्म कोई सीखने की वस्तु नहीं।

साधना और सीखने में अंतर रहा है। जैन महर्षियों ने शिक्षा के दो भेद किये- ग्रहणा और आसेवना। ग्रहणा शिक्षा मात्र सूचनाओं का समूह है। जब साधक अपने भीतर को रूपान्तरित करता है तब वह साधना या आसेवना शिक्षा कहलाती है।

जिस क्षण निज विवेक का आदर होगा तो मात्र साधु जीवनचर्या की आवश्यक जानकारी रखने वाला साधक भी चार घनघाती कर्मों का क्षय कर सकता है। ५ समिति ३ गुप्ति वाला भी कर्मों को नष्ट कर सकता है। किन्तु केवल सीखनेवाला पूर्वों का ज्ञान प्राप्त करके भी पहले गुणस्थान से ऊपर नहीं उठ पाता। निज विवेक का अनादर ही कर्म बंधन कराता है। जिसको निज विवेक का पूरी तरह आदर है, उसको बंध नहीं हो सकता। ज्ञानावरणीय का बंध १०वें गुणस्थान तक है। जब तक जाना हुआ है (यथाख्यात=यथा आख्यात) जीवन में समिति या प्रवृत्ति कैसे करनी? पाप से निवृत्ति, गुप्ति कैसे करनी? शरीर के लिए आवश्यक प्रवृत्ति कैसे करनी? इतनी बातों को जानने वाला , जानकर उन्हें माथे का बोझ न समझने वाला कर्मों को नष्ट करता है।

ज्ञानावरणीय के बन्धन का पहला कारण है ज्ञान को ठुकराना। जानता हुआ व्यक्ति अपने ज्ञान को ठुकराता है, ज्ञान से प्रत्यनीकता करता है। सब जानते हैं, हिंसा नहीं करनी चाहिए। फिर भी हिंसा करते हैं। जो निजविवेक का आदर नहीं करता, वह गुरु का क्या आदर कर पायेगा? गुरु के पास जाकर या भगवान के पास जाकर भी वह क्या तिरेगा?

एक व्यक्ति की आत्मा ऊपर उठती है तो बिना बोले ही अन्य को प्रकाशित करती है। मेरा जीवन प्रकाशित होगा तो हर जीव को प्रकाश मिलेगा। किसी भी दुःखी को देखकर करुणा-बुद्धि से दुःखी होना अर्थात् अनुकंपा, करुणा का हृदय में होना ही सम्यग्दृष्टि है। परन्तु आज हमारी प्रवृत्ति अहं से होती है। प्रवृत्ति का राग जीवित है इसलिए वीतराग वाणी कहती है ''अप्पा कत्ता विकत्ता य'' आत्मा ही आठ कर्मों की कर्ता और भोक्ता है। सुख-दुःख की भोक्ता है।

पुण्य पाप का तू है कर्ता
सुख, दुःख फल भी तू ही भोक्ता
तू ही छेदनहार, ज्ञान से तत्त्व विचारो।
समझो चेतनजी अपना रूप, यो अवसर मत हारो।।

किसी कार्य के साथ अहंकृति जुड़ी नहीं कि उसकी प्रतिकृति अंतर में अंकित हुई नहीं। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं अशुभयोग के निमित्त से हेतुपूर्वक जो किया जाता है वह कर्म है। जिस स्थान पर सिद्ध भगवान रहते हैं वहाँ पर भी अनन्त कार्मण वर्गणाएँ हैं। फिर भी सिद्ध भगवान के कर्म नहीं। न्यौता देने पर ही पुद्गल चिपकते हैं। स्वयमेव जीव न्यौता देता है, विवेक का अनादर करता है। परिवार, समाज के आवरण में अहं नहीं छोड़ता। अहंकार से की गई तपस्या मात्र Zero है, पहले का १ है तो १०,१००,१००० है।

अठारहवाँ पाप मिथ्यादर्शनशल्य छूटे तो हर जीव के प्रति आत्मीयता होती है। परन्तु भीतर में अहं छिपा बैठा है। कहा है-

'सद्बुद्धि को है हमने रखा सदा दबाये'....

विवेक की बुद्धि को दबाने वाला अहंकार है। 'न मोह नमो' यह 'मैं' कैसा सवार होता है, कैसा हावी होता है, जान भी नहीं पाते।

परिग्रह दो प्रकार का है- बाह्य और आभ्यंतर। भीतर का परिग्रह राग-द्वेष की परिणति है। हमने ऐसा कर लिया, बस अहंकार करके हमने अपने को चिन्मयता से जड़ता की ओर खींच लिया। सनत्कुमार, मरीचि, भरत आदि कई उदाहरण हैं। मरीचि को कितने भव करने पड़े?

किसी ने जरा-सी प्रशंसा की नहीं कि गुद्गुदी हो जाती है। प्रशंसा कब जहर बनती है, जब व्यक्ति अपने आपको प्रशंसनीय मान लेता है। गुण का अहंकार भी अवगुण है। क्रिया, धर्म का करना बहुत मुश्किल है। भूख , प्यास आदि परीषह सहना कठिन नहीं है। सबसे कठिन है सत्कार पुरस्कार परीषह। वंदना की, महाराज साहब की नजर नहीं पड़ी? कहाँ-कहाँ जीव की कैसी अपेक्षा लगी है?

इस कर्म सिद्धान्त को माथे का बोझ नहीं बनाएँ। हर परिस्थिति में साधना करनी है। हमारे पास योग्यता है, सामर्थ्य है, गुरुकृपा के लिए कहा है-

'यह तन विष की बेलड़ी , गुरु अमृत की खान।
सीस दिया जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।'

'गुरु प्रजापत सारीखा, निश्चय काढे खोट।
अंतर से रक्षा करे, ऊपर मारे चोट।।'

परन्तु जैन दर्शन इससे आगे कहता है-

'गुरुहिलणाए णत्थि मोक्खो' गुरु की हीलना से मोक्ष नहीं होता। बाहर से माथा टकराने वाला बच सकता है, बाहर में कोई सांप से, सिंह से बच सकता है, परन्तु गुरु हीलना करते हुए मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

'मिच्छतमोहियमणा पावपसत्तावि पाणिणो विगुणा।
करिं हो दगं व गुणिणो हवंति वरगुरुपसायओ।।'

अर्थात् मिथ्यात्वमोहितमन वाले, गुणरहित एवं पाप में प्रसक्त प्राणी को भी श्रेष्ठ गुरु की कृपा गुणवान बना देती है। पुद्गल पर्याय परिवर्तनशील है। गंदे नाले का पानी पर्याय बदलने से सुस्वादिष्ट बन जाता है। (वर्णन ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र-सुबुद्धि प्रधान) ऐसे ही गुरु के प्रसाद से मिथ्यात्व मोहित प्राणी भी तिर जाता है। गुरुकृपा की नितांत आवश्यकता है। हम गुरु की भक्ति से ईमानदारी से आत्म-साधना में बढ़ना चाहते हैं क्या? हमें किस जगह पीछे

हटना है? द्वेष कम हो, राग कभ हो।

जो तुम्हे छोड़ता चला जाय, तुम उसे छोड़ते चले जाओ। जो छोड़ सकता है वह मालिक है। यह आध्यात्मिक दृष्टि है। अतीत की विस्मृति करते जाएँ।

जैन कौन? जिन का उपासक। **जयति इति जिनः**- जीतेगा कब? लड़ाई करेगा तभी न? लड़ना था भीतर में हम लड़ बैठे बाहर में। हम लड़ रहे हैं घर में, लड़ना था कर्मों से। लड़े बिना चैन नहीं।

संघ में, समाज में, देश में कहीं न कहीं अहंकार है ही। अहंकार किस बात का? लक्ष्मी तो चंचल है-

'लच्छी सहाव चवला, तओ वि चवलं जीवियं होइ।
भावा तओ वि चवला, उवयार विलंबणं कीस?'

लक्ष्मी स्वभाव से चंचल है, जीवन उससे अधिक चंचल है। भाव उससे भी अधिक चंचल हैं तो उपचार में विलंब क्यों? भावों की चंचलता को समझें।

एक चीज पर अवस्थित परिणाम सात समय से ज्यादा नहीं रह सकता। ४८ मिनिट में १६७७७२१६ आवलिका होती है। ४८ X ६०=२८८० सैकण्ड।१ सैकण्ड में ५८२५ आवलिका। १ आवलिका में असंख्यात समय। इतनी तेजी से परिणाम बदलते रहते हैं। भगवान की वाणी कहती है क्षमा मांगने वाला वीर है। जो क्षमा मांगता है वह आराधक है। मन से भी द्वेष नहीं गजसुकुमाल की तरह 'साहिज्जदिण्णे'। अज्ञानी अपनी विफलता का दोष दूसरों पर (निमित्त पर) डालता है और सफलता का श्रेय स्वयं लेता है। मेरे साथी, मेरा शहर, ऐसा मिला, क्या करूँ मैं? जो सफलता का श्रेय निमित्त को देता है, विफलता का श्रेय अपने उपादान को देता है वह ज्ञानी है। आगम में कर्मसिद्धान्त समाया हुआ है।

अनेक भव से संचित कर्म को चुकाने में सोमिल ने सहायता दी। द्रव्य कर्म से भाव कर्म, भाव कर्म से द्रव्य कर्म अनादिकाल से चला आ रहा है। १० भव तक कमठ एवं पार्श्वनाथ का वैर, श्रेणिक एवं कोणिक का वैर, समरादित्य कथा में अग्निशर्मा एवं राजा का वैर कई उदाहरण हैं। भर्तृहरि ने पिंगला के कारण दीक्षा ली। फिर भी गुरु ने राग-द्वेष की गांठ खोलने हेतु भिक्षा लेने पिंगला के पास भेजा। जीव उसी को नहीं छोड़ता जो छोड़ना चाहिए। अपूर्वकरण में अपूर्व उत्साह जग जाए, दुर्भेद्य ग्रन्थि खोल दे तो अपूर्वकरण होता है। राग-द्वेष की गाँठ खुल जाए तो सम्यक्त्व की प्राप्ति से कोई रोक नहीं सकता।

'रागो य दोसो वि य कम्मबीयं....'

सारे कर्मों का मूल है राग और द्वेष। ज्ञानावरणीय आदि कर्म को बांधने वाला कर्म भी मोहनीय है। १४८ में से सिर्फ एक कर्म की स्थिति मिथ्यात्व मोहनीय की ७० कोटाकोटि सागर है। १६ कषाय की स्थिति ४० कोटाकोटि सागर है। मिथ्यात्व और कषाय की स्थिति सबसे अधिक है।

एक मुनि ने गुरु से पूछा, मैं सेवा करूँ या स्वाध्याय? गुरु ने सेवा में लगाया, तो क्या गुरु के ज्ञानावरणीय कर्म का बंध हो गया? नहीं, यह होशियार नहीं बन जाए, इसलिए उसे स्वाध्याय से रोका, सेवा में लगाया तो ज्ञानावरणीय का बंध। भीतर के परिणाम से कर्म बंध होता है। साधक का जीवन वहीं होगा जहाँ रागद्वेष से दूर रहा जा सके। संयम, सामायिक, स्वाध्याय AllProof हैं।

सीखना सूचनाओं का समूह है। ग्रहण करना अंतर की साधना है। हमें सोचना है, क्या हम मात्र स्वाध्यायी बनकर रह जायेंगे? तीसरे मनोरथ दूसरे मनोरथ पर कभी चिंतन करते हैं?

जो छोड़ सकता है वह पा सकता है। द्वेष केवल एक चीज देता है शक्तिशाली होने का भ्रम। द्वेष के छोड़ने पर ही चित्त की स्वस्थता, बुद्धि की शांति सम्भव है।

क्रमशः (2)

रत्नवंश के मूल महापुरुष

भंडारी सरदारचन्द जैन

द्वितीय पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री रत्नचन्द्रजी म.सा.

माता-जन्म माता हीरादेवी जी, गोदमाता गुलाबबाई जी
पिता- श्री लालचन्द जी बड़जात्या, गोद पिता श्री गंगारामजी सरावगी
जन्म- वि.सं. १८३४, वैशाख सुदि ५, कुड़ग्राम (नागौर) राज.
दीक्षा- वि.सं. १८४८, वैशाख सुदि ५, मंडोर (जोधपुर) राज.
स्वर्गवास- वि.सं. १९०२, ज्येष्ठ सुदि १४, सिंहपोल, जोधपुर (राज.)

तृतीय पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हमीरमल जी म.सा.

माता-ज्ञानदेवीजी
पिता- श्री नगराज जी गांधी, ओसवंशीय
जन्म- वि.सं. १८५२, कुड़ग्राम नागौर (राज.)
दीक्षा- वि.सं. १८६२, फागण सुदि ७, बिराटिया कला (बर के पास) राज.
स्वर्गवास- वि.सं. १९१०, कार्तिक वदि १, नागौर (राज.)

-त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर

प्रत्याख्यान

श्री पी.एम. चोरड़िया

(1)

1. **प्रश्न**— पच्चक्खाण किसे कहते हैं?
   उत्तर—तप के द्वारा भोग-उपभोग की वृत्तियों एवं क्रोध आदि कषायों का त्याग करना ही पच्चक्खाण कहलाता है।
2. **प्रश्न**— प्रचलित भाषा में प्रत्याख्यान किसे कहते हैं?
   उत्तर—पापों के त्याग के लिए जो व्रत, नियमादि लिए जाते हैं या प्रतिज्ञा की जाती है, उसे प्रत्याख्यान कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो भविष्य में लगने वाले पापों से निवृत्ति हेतु गुरु या आत्म-साक्षी से हेय वस्तु को छोड़ना प्रत्याख्यान है।
3. **प्रश्न**— प्रत्याख्यान शब्दों का चिन्तन किस प्रकार किया जाता है?
   उत्तर—'प्रति' एवं 'आ' उपसर्ग पूर्वक+'ख्या' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने पर प्रत्याख्यान शब्द निष्पन्न होता है। इसका अर्थ होता है- असंयम का त्याग करना या उसकी प्रतिज्ञा करना।।

(2)

1. **प्रश्न**— श्रीमद् यशोदेव सूरि ने प्रत्याख्यान-स्वरूप में प्रत्याख्यान की व्याख्या क्या की है?
   उत्तर—अविरति भाव से प्रतिकूल (विरोधी) होना अर्थात् अविरति से पीछे हटने की भावना एवं विरति भाव के सम्मुख अर्थात् पास होना तथा त्याग की ओर अग्रसर होने के सम्यग् कथन को प्रत्याख्यान की संज्ञा दी गई है।
2. **प्रश्न**— अनुयोगद्वार सूत्र में प्रत्याख्यान का क्या नाम आया है?
   उत्तर—गुण धारण अर्थात् व्रत रूप गुण धारण करना आया है।
3. **प्रश्न**—प्रत्याख्यान कौन से काल का होता है?
   उत्तर—प्रत्याख्यान भविष्यकाल का होता है।

(3)

1. **प्रश्न**—पच्चक्खाण क्यों करते हैं?
   उत्तर—व्रत में लगे दोषों की आलोचना करने के बाद पुनः दोषोत्पत्ति न हो, इसलिये मन पर अंकुश रखने के लिये पच्चक्खाण किये जाते हैं।
2. **प्रश्न**—पच्चक्खाण में आगार क्यों रखते हैं?
   उत्तर—भूल-चूक से अथवा बड़ों की आज्ञा से अगर कुछ खा लिया

अथवा खाना पड़ा तो पच्चक्खाण में दोष लगता है, परन्तु भंग नहीं होता, इसलिये पच्चक्खाण में आगार (छूट) रखते हैं।

3. **प्रश्न**—पच्चक्खाण से क्या लाभ होता है?

उत्तर— पच्चक्खाण करने से इच्छा का निरोध होता है। इच्छा का निरोध ही तप कहलाता है। इससे विषय के प्रति आसक्ति छूट जाती है।

(4)

1. **प्रश्न**—भगवन्! कोई सम्यग्दृष्टि शुद्ध मन, राग-द्वेष से रहित, दया-धर्म से सहित एक उपवास करके अष्ट प्रहर का पौषध करे, तो उसका क्या फल होता है?

उत्तर—हे गौतम! २७ अरब, २७ करोड़, ७७ लाख, ७१ हजार, ७ सौ पल्योपम झाझेरा नारकी का आयुष्ट टूटता है। देवता का शुभ आयुष्य बंधता है।

2. **प्रश्न**—हे भगवन्! कोई आधे मुहूर्त का संवर करे, उसका क्या फल होता है?

उत्तर—हे गौतम! ४६ करोड़, २७ लाख, ६१ हजार, ६ सौ पल्योपम झाझेरा नारकी का आयुष्य टूटता है, देवता का शुभ आयुष्य बंधता है।

3. **प्रश्न**—हे भगवन्! एक मुहूर्त (४८ मिनट) की सामायिक करने से क्या लाभ होता है?

उत्तर—हे गौतम! ६२ करोड़, ५६ लाख, २५ हजार, ६ सौ २५पल्योपम झाझेरा नारकी का आयुष्य टूटता है, देवता का शुभ आयुष्य बंधता है।

(5)

1. **प्रश्न**— पोरसी किसे कहते हैं?

उत्तर—सूर्योदय के बाद एक प्रहर तक चारों आहार का त्याग पोरसी कहलाता है।

2. **प्रश्न**—प्रत्याख्यान के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तर—पच्चक्खाण, नियम, अभिग्रह, विरमणव्रत, विरति, आस्रव-निरोध, निवृत्ति-ये सब प्रत्याख्यान के पर्यायवाची शब्द हैं।

3. **प्रश्न**— श्री ठाणांग सूत्र में प्रत्याख्यान कितने प्रकार के बताये गए हैं? उनके नाम बताइये।

उत्तर—(१) अनागत प्रत्याख्यान (२) अतिक्रान्त (३) कोटि संहित (४) नियन्त्रित (५) आगार (६) अनागार (७) परिमाण कृत (८) निरवशेष (९) संकेत (१०) अद्धा।

(6)

1. **प्रश्न**– "अप्पाणं वोसिरामि" का अर्थ क्या है?

उत्तर–अपनी आत्मा को पाप से अलग करता हूँ।

2. **प्रश्न**–निम्न पच्चक्खाणों के आगारों का क्या तात्पर्य है?

(१) गुरु-अब्भुट्ठाणेणं (२) आउंटण-पसारेणं(३) महत्तरागारेणं

उत्तर–(१) गुरु-अब्भुट्ठाणेणं-गुरु के आगमन पर उनके सत्कार के लिए खड़ा होना पड़े।

(२) आउंटण्ण-पसारेणं- हाथ पैर का संकोचन या प्रसारण करना पड़े।

(३) महत्तरागारेणं-माता, पिता आदि बड़ों का आग्रह हो जाए।

3. **प्रश्न**–पच्चक्खाण के पाठों में निम्न शब्दों का अर्थ क्या है?

(१) पच्चक्खामि (२) गंठिसहियं (३) मुट्ठिसहियं

उत्तर–(१) पच्चक्खामि- त्याग करता हूँ।

(२) गंठिसहियं-गांठ सहित यानी जब तक गांठ बंधी रखूँ तब तक।

(३) मुट्ठिसहियं- मुट्ठी सहित यानी जब तक मैं मुट्ठी बंद रखूँ तब तक।

(7)

1. **प्रश्न**–पच्चक्खाण कितने प्रकार के हैं?

उत्तर–पच्चक्खाण दो प्रकार हैं- (१) मूल गुण पच्चक्खाण (२) उत्तर गुण पच्चक्खाण।

2. **प्रश्न**– मूल गुण पच्चक्खाण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर–यह दो प्रकार का होता है। प्रथम सर्व मूल गुण पच्चक्खाण और द्वितीय देश मूल गुण पच्चक्खाण। सर्व मूल गुण पच्चक्खाण ५ प्रकार का है। सर्वथा पांच प्रकार के हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह का त्याग करना अर्थात् महाव्रतों का पालन करना। देश मूल गुण पच्चक्खाण के भी ५ भेद हैं। इसमें स्थूल प्राणातिपात से लेकर स्थूल परिग्रह का त्याग करना अर्थात् पाँच अणुव्रतों का पालन करना होता है।

3. **प्रश्न**–देश उत्तरगुण पच्चक्खाण के सात भेद कौन-कौनसे हैं?

उत्तर–तीन गुणव्रत (१) दिशा परिमाण व्रत (२) उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत (३) अनर्थदण्ड विरमण व्रत।

चार शिक्षाव्रत- (१) सामायिक (२) देशावकाशिक (३) पौषधोपवास (४) अतिथि संविभाग व्रत।

-89, Audiappa Naicken Street, Ist Floor, Sowcarpet
Chennai-600079

(क्रमशः 6)

दशवैकालिक सूत्र : अष्टम अध्ययन

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र के अष्टम अध्ययन का शीर्षक 'आचार प्रणिधि' आचार में मन, वचन और काया की स्थिरता से संबंधित है। यह एक प्रकार से तृतीय और षष्ठ अध्ययन का विस्तार एवं स्पष्टीकरण है। तृतीय अध्ययन में संयमी के निषिद्ध आचारों का विवेचन है तथा षष्ठ अध्ययन में आचार के १८ स्थानों का सहेतुक वर्णन है। इस अध्ययन में आचार की उपर्युक्त जानकारी के अनन्तर करणीय कार्यों का निर्देश है।

साधु समस्त षट्कायिक जीवों के प्रति मन, वचन और काय द्वारा अहिंसक भाव से रहे। छोटे से छोटे जीव की भी उपयोग पूर्वक हिंसा नहीं करे अथवा कष्ट नहीं देवे। संयमी साधु सचित्त, शीतल जल, ओले, वर्षा तथा हिम के पानी का सेवन नहीं करे, सदैव अचित्त जल ही ग्रहण करे। साधु का शरीर सचित्त जल से गीला हो जाय तो उसे पोंछे नहीं तथा हाथ से शरीर को मले भी नहीं। तथाभूत सचित्त जल से गीले शरीर आदि का संघटन नहीं करते हुए यतना से चले। साधु अग्निकाय की रक्षा को दृष्टिगत रखकर कोयले, लकड़ी, अग्नि या उसकी ज्वाला आदि को जलावे नहीं, घर्षण करे नहीं और बुझावे भी नहीं। अग्नि का जलाना जैसे हिंसाजनक है, वैसे बुझाना भी हिंसा का कारण है। भगवती सूत्र में जलाने को महाआरम्भ और बुझाने को अपेक्षाकृत अल्पआरम्भ कहा है। साधु वनस्पति की रक्षा के लिये किसी तृण और वृक्ष का छेदन नहीं करे तथा किसी वृक्ष के फल एवं फूल को भी नहीं तोड़े। जीव रक्षा के लिये साधु अपने पास की वस्तुओं का नित्य अवलोकन करे तथा उनकी विधिपूर्वक प्रतिलेखना करे।

आगे कहा है कि साधु छोटे-बड़े अनेक घरों में भिक्षार्थ जाता है। वह बहुत देखता और सुनता है, परन्तु उसकी मर्यादा है कि वह जो कुछ आंखों से देखता है या कानों से सुनता है उसकी किसी के समक्ष चर्चा नहीं करे। भिक्षार्थ गये हुए साधु को भिक्षा में सरस मिले या नीरस, अच्छा मिले या बुरा, परन्तु इस बाबत गृहस्थ की हल्की लगे वैसी बात नहीं करे। साधु कभी क्रोध नहीं करे। साधु को कोई गाली दे तो सोचे कि यह गाली ही देता है, पीटता तो नहीं है। यदि कोई पीटे तो सोचे कि पीटा ही है, मारा तो नहीं और मारने पर यह सोचे कि इसने मेरा धर्म तो नहीं लूटा। इस प्रकार ज्ञानभाव से क्रोध का शमन करे। साधु को सहिष्णुता की शिक्षा देते हुए कहा है कि भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी,

विषम शय्या और सप्तविध भयों को मुनि बिना व्यथा के सहन करे। आगे कहा है कि मुनि दूसरे का तिरस्कार और अपनी प्रशंसा नहीं करे। श्रुतलाभ, जाति, तप अथवा ज्ञान से मद नहीं करे, क्योंकि गर्व करने से नीच गोत्र का बंध होता है। साधु गुरु के समक्ष बालक की तरह सरल भाव से दोष की आलोचना कर गुरुप्रदत्त प्रायश्चित्त से आत्मा को शुद्ध कर ले। आगे गाथा ३७ का हिन्दी पद्य है-

क्रोध, मान, माया एवं है लोभ पापवर्द्धक जग में।
जो चाहते अपने हित को, ये चार दोष तज दे भव में।।

आगे कहा है- **उपशम से क्रोध भाव जीते, मृदुता से जीते, मान सदा।**
ऋजुता से माया को जीते, संतोष भाव से लोभ सदा।।

साधु कोमल शय्या आदि से निद्रा को आदर नहीं दे। हंसी मजाक या अट्टहास नहीं करे। परस्पर इधर-उधर की कथा-विकथा में समय नहीं गंवाते हुए वाचना, पृच्छना आदि स्वाध्याय में सदा रमण करे। मुमुक्षु श्रमण आलस्य रहित होकर दस प्रकार के श्रमण धर्म में निरन्तर मन, वाणी और काय योग से जुड़ा रहे।

शिष्टाचार की शिक्षा देते हुए कहा है कि साधु बिना पूछे गुरु के समक्ष नहीं बोले, गुरु के बराबर या अधिक निकट नहीं बैठे। भाषा संबंधी विवेक के बारे में कहा है कि जिस प्रकार के वचन से सुनने वालों में अप्रीति उत्पन्न हो या सुनने वाला कुपित हो या परस्पर उत्तेजना फैले, ऐसी भाषा नहीं बोले। गाथा ५३ का हिन्दी पद्य है-

एकान्त उपाश्रय हो मुनि का, वह नारी से न कथा करे।
ना करे गृहस्थों से परिचय, मुनियों से परिचय सदा रहे।।

आगे गाथा ५६ में साधु को ब्रह्मभाव में दृढ़ता के लिये पूर्ण सतर्क रहने की शिक्षा देते हुए कहा है कि जिसके हाथ पैर कटे हों, नाक, कान आदि अंगोपांग भी काट लिये हों, वैसी शतायु वृद्धा नारी की भी संगति, साधु कदापि नहीं करे।

-७३८, नेहरू पार्क रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

जीवन सफल बनायें

प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'

धर्म प्रचार से नहीं, आचार से फैलता है।
सच्चा साधक सदा-सदा समभावों में रहता है।
प्रभाव जींभ का नहीं, जीवन का पड़ता है।
धर्मनिष्ठ के करुण हृदय में, दया का झरना बहता है।
हम पहचानें निज की शक्ति, त्याग-सेवा अपनायें।
जिनवचनों पर रखकर श्रद्धा, जीवन सफल बनायें....

-१७५, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.)

विश्व क्या है?

डॉ. मंजुला बम्ब

जैन दर्शन में विश्व के लिए 'लोक' शब्द प्रयुक्त हुआ है। लोक का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'जे लोक्कइ से लोए' जो देखा जाता है, वह लोक है। यह लोक की स्थूल परिभाषा है। लोक की व्याख्यात्मक परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जिसमें छह प्रकार के द्रव्य हैं वह लोक है। इन छह द्रव्यों के नाम इस प्रकार हैं-

१. धर्मास्तिकाय	: गति-सहायक द्रव्य
२. अधर्मास्तिकाय	: स्थिति-सहायक द्रव्य
३. आकाशास्तिकाय	: आश्रय देने वाला द्रव्य
४.काल	: परिणमन में सहायक द्रव्य अथवा अद्धाकाल
५. पुद्गलास्तिकाय	: मूर्त जड़ पदार्थ (Matter)
६. जीवास्तिकाय	: चैतन्यशील आत्मा (Soul)

इन छह द्रव्यों की सह-अवस्थिति 'लोक' है। इन छह द्रव्यों में से काल को छोड़कर शेष पाँच द्रव्य अस्तिकाय कहे गये हैं। अस्तिकाय का तात्पर्य है कि ये द्रव्य सप्रदेशी या सावयवी हैं। काल द्रव्य के प्रदेश नहीं होते हैं, अतः उसे अस्तिकाय नहीं कहा गया है। इस कारण से कहीं-कहीं लोक की चर्चा करते हुए लोक को पंचास्तिकाय बताया गया है।

द्रव्य की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि 'गुणपर्यायाश्रयो द्रव्यम्' अर्थात् गुण और पर्यायों के आश्रय को द्रव्य कहते हैं। अर्थात् द्रव्य वह है, जिसमें गुण और पर्याय (अवस्थाएँ) होते हैं। प्रत्येक द्रव्य में दो प्रकार के धर्म रहते हैं एक तो सहभावी धर्म (गुण) जो द्रव्य में नित्य रूप से रहता है, दूसरा क्रमभावी धर्म (पर्याय) जो परिवर्तनशील होता है। गुण भी दो प्रकार के हैं सामान्य गुण और विशेष गुण। सामान्य गुण वे हैं, जो निश्चित रूप से होते हैं। जैसे अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशवत्व और अगुरुलघुत्व -ये छह गुण सामान्य गुण हैं। अतः प्रत्येक द्रव्य में ये गुण होते ही हैं।

अस्तित्व गुण– जिस गुण के कारण द्रव्य का कभी विनाश न हो अर्थात् द्रव्य सदा विद्यमान रहे, वह अस्तित्व गुण है।

वस्तुत्व गुण– द्रव्य का सदा किसी न किसी प्रकार की अर्थक्रिया करते रहना उसका वस्तुत्व गुण है। प्रत्येक द्रव्य अन्य पदार्थों के साथ अनेक प्रकार के संबंधों से जुड़ता है और अन्य पदार्थों के द्वारा प्रभावित भी होता रहता है।

किन्तु इन क्रिया-प्रतिक्रियाओं में भी द्रव्य वस्तुत्व गुण के कारण अपनेपन को नहीं छोड़ता।

द्रव्यत्व गुण– जिसके कारण द्रव्य गुण और पर्यायों को धारण करता है, वह द्रव्यत्व गुण है। प्रतिक्षण प्रत्येक द्रव्य की अवस्था बदलती रहती है। इन अवस्थाओं में परिवर्तन से द्रव्य में उत्पत्ति और विनाश का क्रम चलता रहता है।

प्रमेयत्व गुण– इस गुण के कारण द्रव्य ज्ञान द्वारा जाना जाता है जो प्रमाण (यथार्थज्ञान) का विषय बनता है।

प्रदेशवत्व गुण– इस गुण के कारण द्रव्य के प्रदेशों का माप होता है। प्रत्येक द्रव्य का विस्तार उसके प्रदेशवान होने के कारण होता है।

अगुरुलघुत्व गुण– इसके कारण द्रव्य में अनन्त धर्म एकीभूत होकर रहते हैं। बिखर कर अलग-अलग नहीं हो पाते। इसी गुण के कारण प्रत्येक द्रव्य के स्वरूप की अविचलता होती है।

इस प्रकार से छह सामान्य गुण प्रत्येक द्रव्य में होते हैं, विशेष गुण प्रत्येक द्रव्य के अपने-अपने होते हैं।

धर्मास्तिकाय द्रव्य

धर्मास्तिकाय वह द्रव्य है, जो लोक में सभी पदार्थों की सभी प्रकार की गति में असाधारण रूप से सहायता करता है। दूसरे शब्दों में यह गति का असाधारण (मीडियम) माध्यम है। इस द्रव्य के विषय में गौतम स्वामी और भगवान महावीर के प्रश्नोत्तर इस प्रकार हुए थे-

गौतम– हे भगवन्! धर्मास्तिकाय (गति में सहायक द्रव्य) से जीवों को क्या लाभ होता है?

भगवान– हे गौतम! धर्मास्तिकाय न होता तो गमनागमन कैसे होता? शब्दों की तरंगें कैसे फैलती? आंखों का उन्मेष कैसे होता? मानसिक, वाचिक और कायिक क्रियाएँ कैसे होती? यह विश्व अचल ही होता। विश्व के सभी पदार्थ धर्मास्तिकाय की सहायता से ही चल होते हैं। गति में सहायता करना धर्मास्तिकाय का लक्षण हैं।

अधर्मास्तिकाय द्रव्य

यह वह द्रव्य है जो सब पदार्थों की स्थिति या अगति में असाधारण रूप से सहायता करता है। इस द्रव्य के विषय में गौतम स्वामी और भगवान महावीर के प्रश्नोत्तर इस प्रकार हुए थे-

गौतम– हे भगवन्! अधर्मास्तिकाय (स्थिति सहायक द्रव्य) से जीवों को क्या लाभ होता है?

भगवान्– हे गौतम्! अधर्मास्तिकाय नहीं होता तो सब प्रकार के स्थिर भाव

खड़ा रहना, बैठना, सोना, मन को एकाग्र करना, मौन करना, शरीर को निस्पन्द बनाना, आंखों का निमेष होना आदि कैसे सम्भव होते? यह विश्व गतिमान ही होता। जो स्थिर है, उन सबका आलम्बन अधर्मास्तिकाय है। स्थिति में सहायता करना अधर्मास्तिकाय का लक्षण है।

आकाशास्तिकाय द्रव्य

ऊपर बताये गए छह द्रव्यों में तीसरा द्रव्य आकाशास्तिकाय आकाश (स्पेस) का सूचक है। इसकी परिभाषा करते हुए कहा गया है- अवगाहलक्खणे णं आगासत्थिकाए। वह द्रव्य, जो अन्य सब द्रव्यों को अवगाह अथवा आश्रय देता है, वह आकाश है। भगवान महावीर के शिष्य गौतमस्वामी ने उनसे प्रश्न किया-

भगवन्! आकाश द्रव्य से जीवों और अजीवों को क्या लाभ होता है? तब भगवान महावीर ने उत्तर दिया-

गौतम! आकाशास्तिकाय जीव और अजीव द्रव्यों के लिए भाजनभूत हैं। अर्थात् आकाश नहीं होता तो ये जीव कहाँ होते? ये धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय कहाँ व्याप्त होते? काल कहाँ बरतता? पुद्गल का रंगमंच कहाँ बनता? यह विश्व निराधार ही होता। आकाश वास्तविक द्रव्य है अतः द्रव्य में बताये छह सामान्य गुण आकाश में भी होते हैं।

समस्त आकाशद्रव्य अन्य द्रव्यों के द्वारा अवगाहित नहीं है, अतः एक होने पर भी अन्य द्रव्यों के अस्तित्व के कारण वह दो भागों में विभाजित हो जाता है- लोकाकाश २. अलोकाकाश।

आकाश का वह भाग जो धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय- इन पाँच द्रव्यों पर अवगाहित है, वह लोकाकाश है। शेष भाग, जहाँ आकाश (स्पेस) के अतिरिक्त और कोई द्रव्य नहीं होता वह अलोकाकाश है। अलोकाकाश के प्रदेशों की संख्या अनन्त है। ससीम लोक चारों ओर से अनन्त अलोक से घिरा हुआ है।

भगवान महावीर को उनके प्रमुख शिष्य गौतम द्वारा पूछा गया कि भगवन्! अलोक का संस्थान (आकार) कैसा है? भगवान महावीर ने उत्तर दिया- हे गौतम! शुषिर (खाली) गोले में रही हुई पोलाई जैसा उसका आकार है अर्थात् अलोक एक विशाल गोले के समान है, जिसकी त्रिज्या अनन्त है। इस कथन से यही अर्थ निकलता है कि धर्म-अधर्म आदि पाँच द्रव्यों को धारण करने वाला वह विश्व (लोकाकाश) अनन्त आकाश समुद्र में एक द्वीप के समान है। आकाश, लोक और अलोक के रूप में एक और अखण्ड द्रव्य है,

अन्य द्रव्यों के अस्तित्व के कारण ही हम आकाश के दो विभाग करते हैं। अलोकाकाश का अस्तित्व तर्क के आधार पर निम्न प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है। लोकाकाश अथवा सक्रिय विश्व के अस्तित्व के विषय में कोई संदेह नहीं करता, क्योंकि वह इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्षतया जाना जाता है और सबके द्वारा ग्राह्य है। किन्तु यदि लोकाकाश का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है तो अलोकाकाश का अस्तित्व स्वतः प्रमाणित हो जाता है, क्योंकि तर्कशास्त्र के अनुसार "यो यो व्युत्पत्तिमच्छुद्धपदाभिधेयः स स सविपक्षः। यथा घटोऽघट विपक्षकः यश्च लोकस्य विपक्षः सोऽलोकः।" (न्यायावतार वृत्ति) जिसका वाचक पद व्युत्पत्तिमान और शुद्ध होता है वह पदार्थ सत् प्रतिपक्ष होता है। 'घट' शब्द विधिवाचक है, अघट निषेधवाचक है। इसी तरह अलोकाकाश लोकाकाश का निषेधवाचक है, विपक्ष है, अतः अलोकाकाश का अस्तित्व लोकाकाश के साथ स्वीकृत हो जाता है।

आकाश द्रव्य का अस्तित्व अधिकांश दर्शन निर्विवादरूप से स्वीकार करते हैं। आधुनिक विज्ञान भी इसे अंगीकार करता है। जबकि धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय का अस्तित्व केवल जैन दर्शन ही स्वीकार करता है। जैन आगमों में इनके लिए तर्क पर आधारित प्रमाण दिये गये हैं। कार्य-कारणवाद के अनुसार प्रत्येक कार्य के लिए दो प्रकार के कारण आवश्यक हैं-उपादान और निमित्त। उपादानकारण वह है, जो स्वयं कार्य रूप में परिणत हो जाए। निमित्त कारण वह है जो कार्य के निष्पन्न होने में सहायक हो। यदि किसी पदार्थ की गति होती है, तो उसमें उपादान कारण तो वह पदार्थ स्वयं है। किन्तु निमित्त कारण क्या है? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए हमें कोई ऐसे पदार्थ की आवश्यकता हो जाती है, जिसकी सहायता पदार्थ की गति में अनिवार्य हो। ऐसा लोकव्यापी द्रव्य धर्मास्तिकाय है। इसी प्रकार अन्य द्रव्यों की अगति में सहायक द्रव्य अधर्मास्तिकाय है।

कालद्रव्य

सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त समय 'काल' का ही सूचक है। जहाँ द्रव्यों की गणना आई है वहाँ काल को भी गिनाया गया है। जहाँ अस्तिकायों का वर्णन है वहाँ काल को नहीं गिनाया गया। 'अस्तिकाय' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म तथा आकाश ये पाँचों द्रव्य विद्यमान हैं इसलिए इनको 'अस्ति' (है) ऐसा कहा गया है और ये काय के समान बहु प्रदेशों को धारण करते हैं, इसलिए इनको 'काय' कहते हैं। अस्ति और काय दोनों को मिलाने से 'अस्तिकाय' होता है अर्थात् ये पाँच द्रव्य केवल

अस्तित्ववान ही नहीं हैं या केवल प्रदेश समूह ही नहीं हैं, किन्तु दोनों ही हैं। धर्म, अधर्म, आकाश और जीव के स्कन्धों के परमाणु जितने काल्पनिक विभाग किये जाएँ, तो आकाश के अनन्त और शेष तीनों के असंख्य विभाग होते है। ये विभाग प्रदेश कहलाते हैं। इस प्रकार आकाश अनन्त प्रदेशात्मक और धर्म, अधर्म और एक जीव असंख्यात प्रदेशात्मक है। पुद्गल के परमाणु जब जुड़ते हों तब स्कन्धों का निर्माण होता है। दो परमाणुओं के मिलने से द्विप्रदेशी पुद्गल स्कन्ध बनता है यावत् अनन्त परमाणुओं के जुड़ने से अनन्त प्रदेशी स्कन्ध बनता है। इस प्रकार काल को छोड़कर शेष पाँचों ही द्रव्यों के प्रदेश होते हैं, केवल काल अप्रदेशी है। काल केवल वर्तमान समय ही अस्तित्व में होता है। भूत समय तो व्यतीत हो चुका है, नष्ट हो चुका है और अनागत (भविष्य) समय अनुत्पन्न है। वर्तमान समय एक होता है इसलिए इसका तिर्यक्-प्रचय नहीं होता अर्थात् काल अस्तिकाय नहीं है।

भगवान महावीर से उनके शिष्य गौतम स्वामी द्वारा प्रश्न पूछा गया- हे भगवन्! काल किसे कहते हैं?

तब भगवान महावीर ने उत्तर में कहा- हे गौतम! जीव को भी और अजीव को भी। जो जिस द्रव्य की पर्याय है वह उस द्रव्य के अन्तर्गत ही है अतः जीव की पर्याय जीव है और अजीव की पर्याय अजीव। वर्तनागुण काल का लक्षण है। वर्तना का अर्थ है वर्तमान रहना। किसी भी पदार्थ के वर्तमान रहने का अर्थ यही है कि उसका अस्तित्व कुछ अवधि तक होता है। यह अवधि शब्द काल का ही सूचक है। यद्यपि काल किसी भी द्रव्य को अस्तित्व की अवस्थिति प्रदान नहीं करता, फिर भी जिस अवधि तक पदार्थ रहता है वह काल के उन सब क्षणों की सूचक है, जिसमें पदार्थ का अस्तित्व बना रहता है। जब किसी पदार्थ में परिणमन होता है तब स्वाभाविक रूप से उस परिवर्तन की कालावधि का सूचन हमें होता है।

व्यावहारिक काल गणनात्मक है। काल के सूक्ष्मतम अंश समय से लेकर पुद्गल परावर्तन तक के अनेक मान (आवलिका, प्राण, स्तोक आदि) व्यावहारिक काल के ही भेद हैं। इनमें घड़ी, मुहूर्त, अहोरात्र, मास, वर्ष आदि (अथवा सैकिण्ड, मिनिट, घण्टा आदि) के भेद भी समाविष्ट हैं। सूर्य, चन्द्र की गति के आधार से इनका माप किया जा सकता है। किन्तु जैन दर्शन के अनुसार विश्व के सब स्थानों में सूर्यचन्द्र की गति नहीं होती है। एक मर्यादित क्षेत्र को छोड़कर शेष स्थानों में जहाँ ये आकाशीय पिण्ड अवस्थित हैं वहाँ दिन, रात्रि आदि कालमान नहीं होते, इसलिए यह माना गया है कि व्यावहारिक काल

केवल समय क्षेत्र (अढ़ाई द्वीप) तक सीमित है। नैश्चयिक काल अन्य द्रव्यों के परिवर्तन का हेतु है। जीव, पुद्गल आदि द्रव्यों में प्रत्येक समय में जो परिणमन होता रहता है, पर्याय बदलती रहती है, वह नैश्चयिक काल के निमित्त से है। दूसरे शब्दों में नैश्चयिक काल को जीव और अजीव की पर्याय कहा गया है।

इस समग्र विवेचन का सारांश यही है कि काल स्वयं में कोई स्वतंत्र सापेक्ष वस्तु या सापेक्ष वास्तविकता नहीं है, किन्तु वस्तु-सापेक्ष वास्तविकताओं का ही एक अंग या पर्याय है।

जीवास्तिकाय द्रव्य

छह द्रव्यों में केवल जीव द्रव्य ही चैतन्य युक्त माना गया है 'जीव' शब्द आत्मा (Soul) का पर्यायवाची है। चैतन्य (Consciousness) इसका प्रमुख लक्षण है। द्रव्य की दृष्टि से जीव की संख्या अनन्त है और प्रत्येक जीव अथवा आत्मा स्वतंत्र इकाई है। क्षेत्र की दृष्टि से एक स्वतन्त्र जीव कम से कम लोक के असंख्यात भाग प्रमाण, किन्तु असंख्यात प्रदेशात्मक आकाश का अवगाहन करता है और अधिक से अधिक समग्र लोकाकाश का अवगाहन भी कर सकता है। समग्र जीव द्रव्यों की अपेक्षा से समग्र लोक में जीव द्रव्य व्याप्त हैं। काल की दृष्टि से प्रत्येक जीव अनादि और अनन्त है। स्वरूप की दृष्टि से जीव वर्ण आदि गुणों से रहित अमूर्त और चैतन्ययुक्त है। ज्ञान चैतन्य की ही प्रवृत्ति होने से जीव का गुण है।

जीव और विशेष प्रकार के पुद्गल स्कन्ध जिनको कर्म कहा जाता है, परस्पर संबंधित होते हैं। जीव की विविध प्रवृत्तियों और क्रियाओं के कारण कर्म-पुद्गलों का जीव के साथ संबंध होता है और उन क्रियाओं के अनुसार कर्म पुद्गल विविध रूप में जीव को प्रभावित करते हैं। विश्व में जितने भी प्राणी (जीव) हैं, वे सभी जहाँ तक कर्म पुद्गलों से युक्त होते हैं सुख, दुःख, जन्म-मृत्यु आदि परिणामों को भोगते रहते हैं और कर्म पुद्गलों से जो मुक्त हो जाते हैं वे इन सभी परिणामों से भी मुक्त हो जाते हैं तथा परमात्मा अथवा सिद्ध की संज्ञा को प्राप्त करते हैं।

पुद्गलास्तिकाय द्रव्य

'पुद्गल' शब्द जैन दर्शन का पारिभाषिक शब्द है। जो वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श इन गुणों से युक्त है वह पुद्गल है। पुद्गल का आधुनिक पर्यायवाची शब्द जड़ अथवा भौतिक पदार्थ हो सकता है। किन्तु ऊर्जा, जो कि वस्तुतः जड़ का ही रूप है, पुद्गल के अन्तर्गत आ जाती है। पुद्गल के सूक्ष्मतम अविभाज्य अंश को परमाणु कहा जाता है। विश्व (लोकाकाश) में परमाणुओं की संख्या अनन्त है और प्रत्येक इकाई स्वतन्त्र इकाई है। जब ये परमाणु परस्पर जुड़ते

हैं, तब स्कन्ध का निर्माण होता है। स्कन्ध में दो से लेकर अनन्त परमाणु हो सकते हैं। लोकाकाश के जितने भाग को एक परमाणु अवगाहित करता है, उतने भाग को प्रदेश कहा जाता है। किन्तु पुद्गल की स्वाभाविक अवगाहन-संकोच शक्ति के कारण लोकाकाश के एक प्रदेश में अनन्त प्रदेश (अनन्त परमाणुओं से बना हुआ) स्कन्ध ठहर सकता है। समग्र लोकाकाश में (जो कि असंख्यात्मक प्रदेशात्मक है) अनन्त 'अनन्त' प्रदेशी स्कन्ध विद्यमान हैं। इस प्रकार द्रव्यसंख्या की दृष्टि से पुद्गल द्रव्य अनन्त हैं, क्षेत्र की दृष्टि से स्वतन्त्र परमाणु एक प्रदेश का अवगाहन करता है और स्वतन्त्र स्कन्ध एक से लेकर असंख्यात प्रदेशों का अवगाहन करता है तथा समग्र पुद्गल द्रव्य समस्त लोक में व्याप्त हैं। काल की दृष्टि से अनादि और अनन्त हैं स्वरूप की दृष्टि से वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि गुणों से युक्त चैतन्य रहित और मूर्त हैं।

-3, रामसिंह रोड़, जयपुर (राज.)

प्रार्थना कैसी हो?

सौ. कमला सिंघवी

प्रार्थना कैसी होनी चाहिए? कविवर विनयचन्द्र जी कहते हैं- "भगवन्! आपकी प्रार्थना करूँ तो कैसे करूँ? आपके पारमात्मिक गुणों की तुलना करने के लिए संसार में कोई वस्तु ही दृष्टिगोचर नहीं होती। सागर-सागरोपम की उक्ति के अनुसार आपका स्वरूप, हे प्रभो! आपके ही स्वरूप के समान हैं।" इस प्रकार विचार कर वे प्रभु प्रार्थना का तरीका बतलाते हैं-

मन, वचकाय, प्रभु के चरणों मे,
निश दिन, धर्म शुक्ल ध्यान से।
मधुर-मधुर स्वर से गुण गाएँ।। संभव जिनजी के...

भक्त कवि ने यहाँ सत्य या सिद्धि प्राप्त करने की सफल कुंजी हमारे समक्ष रख दी है। समस्त पापों-सन्तापों से मुक्ति पाने का मार्ग है- एकाग्रता से प्रार्थना। कवि ने अपनी आन्तरिक भावना व्यक्त करते हुए कहा है- "प्रभु जैसे आप शान्त हैं, दान्त हैं, निर्मल व निरंजन, निर्विकल्प हैं, चिदानन्दमय हैं उसी प्रकार मैं भी हूँ। अतः इस प्रार्थना के माध्यम से हे प्रभु! आत्मानन्द का जो स्रोत आपके भीतर अजस्र गति से प्रवहमान है, वही स्रोत मेरी आत्मा में भी प्रवाहित होगा।

इस प्रकार प्रभु स्तुति का आश्रय लेकर व आगम प्रतिपादित अर्थ के अनुसार चलकर ही हम अपने कल्याण का द्वार खोल सकते हैं।

संकलन-अध्यापिका, ज्ञान मंदिर पाठशाला, भड़गांव

जैन विद्याओं में शोध (१९८३-१९९३)
एक सर्वेक्षण-३

डॉ. नंदलाल जैन

डॉ. नन्दलाल जैन के द्वारा 1963 से 1973 एवं 1973 से 1983 तक के शोध सर्वेक्षण पर लिखित आलेख जिनवाणी पत्रिका में पहले प्रकाशित हो चुके हैं। उसी शृंखला में यह लेख प्रकाशित है। -*सम्पादक*

सामान्यतः जैन विद्याओं में शोधकार्य के तीन रूप उपलब्ध होते हैं। १. उपाधि निरपेक्ष २. उपाधि सापेक्ष एवं ३. उपाधि-उत्तरी शोध। यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम और तृतीय कोटि की शोध का अनुपात उपाधि-सापेक्ष कोटि की तुलना में २:१ होता है, तथापि विद्वत् जगत् उपाधि सापेक्ष शोध को ही प्रधानता देता है। इसके दो कारण हैं - १. शिक्षा संस्थानों द्वारा मान्यता तथा २. आजीविका प्राप्ति में वरीयता। यही कारण है कि जब भी शोध की चर्चा होती है या उससे संबंधित जानकारी की जिज्ञासा होती है, तो उपाधि-सापेक्ष शोध का ही विवरण दिया जाता है। दूसरी बात यह भी है कि उपाधि-सापेक्ष शोध 'यूनिवर्सिटी न्यूज' या विश्व की अन्य संस्थाओं द्वारा संप्रसारित की जाती हैं जबकि अन्य शोधों के संप्रसारण की कोई व्यवस्था नहीं होती। इस दिशा में किंचित् व्यवस्था होनी चाहिये। हाँ, आजकल कुछ विद्वानों के शोध-निबंधों का प्रकाशन होने लगा है, युगवीर निबंधावली, उपाध्ये पेपर्स, सागर जैन भारती आदि। यह अनुकरणीय परम्परा है। उपाधि निरपेक्ष जैन विद्या शोध का एक संक्षिप्त विवरण जगन्मोहनलाल साधुवाद ग्रंथ में अवश्य प्रकाशित हुआ है। पर यह अपूर्ण है। उसे आधुनिक स्तर तक लाने की आवश्यकता है। फलतः हम यहां केवल जैन-विद्याओं में उपाधि सापेक्ष शोधकार्यों की चर्चा करेंगे।

विगत तीस वर्षों में जैन विद्याओं के अध्ययन और शोध के क्षेत्र एवं विषय निरंतर वर्द्धमान हो रहे हैं। देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में इसका अध्ययन-अध्यापन होने लगा है और अनेक अज्ञात पक्षों पर भी शोध की जा रही है। इस शोध का विवरण १९७३ (डॉ जी.सी. जैन) १९८३ (डॉ. सागरमल जैन) एवं १९९१-९३ (परिशिष्ट सहित, डॉ के.सी. जैन) की शोध नामिकाओं में प्रकाशित हुआ है, जिससे इसकी वर्तमान स्थिति का अनुमान लगता है। इनमें प्रथम विवरण तो प्रदेशवार दिया गया है जिसमें १५ प्रदेशों के ५० विश्वविद्यालयों में की गई शोध दी गई है। इसके विपर्यास में, सर्वाधिक नवीन कैलाशचन्द्र जैन स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित शोध संदर्भों में ६४

विश्वविद्यालयों में की गई विषयवार शोध की सूची दी गई है, जिसमें २१ विषय समाहित हैं। इन तीनों विवरणों में यह सूची प्रस्तुत विवेचन के लिये अधिक उपयुक्त है। सारणी-१ में उपर्युक्त तीनों विवरणों से संबंधित तुलनात्मक आंकड़े दिये गये हैं। इस सारणी के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि जहां १९७३ तक २०४ शोधकार्य हुए हैं, वही १९७४-१९८३ के बीच २२५ अतिरिक्त शोधकार्य हुए हैं अर्थात् इस कालखण्ड में पिछले वर्षों में हुई शोधों में शत-प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। इसके विपर्यास में, १९८३-१९९३ के बीच शोधों की कुल संख्या ७८० है जो ७३-८३ के दशक से ३५६ अधिक हैं। इससे स्पष्ट होता है इस दशक में पिछले दशक के २२५ की तुलना में ३५६ शोधकार्य हुए हैं, अर्थात् १३१ अधिक या प्रायः १५६ प्रतिशत अधिक शोध हुई है। ऐसी आशा है कि १९९३-२००३ के दशक में यह वृद्धि और भी अधिक होगी। यह लगभग २०० प्रतिशत की सीमा पार सकती है। उदाहरणार्थ, अकेले जैन विश्वभारती से ही १९९६-२००१ तक २० शोध उपाधियाँ प्रदान की गई हैं और प्रायः ५२ शोधार्थी पंजीकृत हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जैन विद्याओं के अध्ययन और शोध के प्रति नयी पीढ़ी का रुझान बढ़ रहा है। यह और भी महत्त्वपूर्ण है कि जैन विद्या के शोधकों में दो तिहाई से अधिक जैनेतर शोधक ही हैं। साथ ही, इस शोध सूची से यह भी स्पष्ट है कि शोधकर्ताओं में प्रायः ३० प्रतिशत जैन एवं जैनेतर महिलायें, जैन साध्वियाँ या आर्याएं हैं। जैन साध्वियों में भी श्वेताम्बर साध्वियाँ लगभग ९० प्रतिशत हैं। दिगम्बर ब्रह्मचारिणी एवं आर्यिकाएं तो १० प्रतिशत से भी कम हैं। यह आशा की जाती है कि दिगम्बर ब्रह्मचारी एवं आर्याएं इस दिशा में और प्रगति करेंगी।

१९९३ के उत्तरवर्ती दशक में जैन विद्या अध्ययन एवं शोध को प्रेरित एवं अधिक सुविधा सम्पन्न बनाने के लिये राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक शोध एवं शिक्षण संस्थायें सामने आई हैं। इनमें जैन अकादमी, जैन अकादमी संघ, लंदन, इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी- लंदन, जैन अकादमिक फाउण्डेशन-अमरीका, डी-मोन्टफोर्ट एवं लंदन के जैन विद्या विभाग, हॉलैण्ड का इंटरकल्चरल विश्वविद्यालय, जैन विश्वभारती (मान्य) विश्वविद्यालय, कैलाश सागर ज्ञान-मन्दिर, बी.एल. इंस्टीट्यूट-दिल्ली आदि समाहित हैं। लंदन के डॉ. नाटूभाई शाह, बेलजियम, हॉलैण्ड एवं ब्रिटेन के कुछ विश्वविद्यालयों में जैन विद्या अध्ययन को प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्होंने स्वयं भी जैन विद्या में पी-एच.डी. की है। कनाड़ा के डॉ. कुमार भी अपनी पत्रिका एवं व्याख्यान मालाओं के माध्यम से इस ओर प्रेरणा दे रहे हैं। इन सब प्रयासों

से जैन-विद्या के विविध पक्षों में शोध का विस्तार हो रहा है और इसका भविष्य और भी उज्ज्वल है। उदाहरणार्थ जैन समाज का मानव शास्त्रीय अध्ययन होने लगा है (विशेषकर विदेशों में) और अर्थशास्त्र, राजनीति तथा समाजशास्त्र आदि के समान विषयों से संबंधित जैन सामग्री भी समालोचनात्मक रूप में सामने आ रही है।

जैन शोध की परिमाणात्मक स्थिति को जानकर अब हम उस पर किंचित् विश्लेषणात्मक रूप से विचार करें। इसके लिये हमें विविध विषयों पर की जाने वाली शोध को आनुपातिक रूप में परखना होगा। यह विवरण सारणी-२ में दिया गया है। इसके आधार पर हमने सारणी-३ भी प्रस्तुत की है। इससे स्पष्ट होता है कि पिछले दो दशकों में लंबित साहित्य, व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा अन्य भाषागत साहित्य की शोध का संयुक्त प्रतिशत ५६.५० है। इसमें बहुत ही कम परिवर्तन आया है। परन्तु कला, पुरातत्व एवं इतिहास विषय की शोध का अनुपात प्रायः पचास प्रतिशत बढ़ा है। अर्थशास्त्र आदि आधुनिक विषयों की शोध में भी वृद्धि हुई है, जबकि उसे और भी वर्धमान होना चाहिये। तुलनात्मक अध्ययन की शोध में न केवल कमी हुई है, अपितु इसका क्षेत्र भी केवल वैदिक योग तथा बौद्धों तक ही सीमित है। जैनधर्म में भौतिक विज्ञान से संबंधित विषय वस्तु पर शोध अभी भी १.६० प्रतिशत ही है जबकि प्रत्येक सैद्धान्तिक ग्रंथ में लगभग एक-तिहाई विवरण उसी से संबंधित होता है। इसी विषय-वस्तु में भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, आहार एवं औषधि विज्ञान, ज्योतिष और गणित आदि की सामग्री आती है। आज के तुलनात्मक धर्म-दर्शन के युग में आधुनिक एवं वैज्ञानिक विषयों पर अधिक शोध की आवश्यकता है। इस संबंध में जैन- विद्या से संबंधित अनेक उपाधि-निरपेक्ष विद्वान कुछ काम कर रहे हैं। इनसे मार्गदर्शन पाकर शोधार्थियों का जैन-मान्यताओं की वैज्ञानिकता को पल्लवित करने का प्रयत्न करना चाहिये।

ललित साहित्य संबंधी शोधकार्य

हम ललित साहित्य के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक कृतियां, साहित्यकार एवं भाषाविज्ञान को सम्मिलित कर विचार करेंगे। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, चंपूकाव्य, संदेश काव्य, प्रबंध काव्य, भक्ति काव्य, रूपक एवं शतक साहित्य, संत और रीति काव्य, विलास एवं पूजा तथा स्तोत्र साहित्य, जैन उपन्यास तथा प्रेमाख्यान काव्य और कथाकोष, पुराण एवं बारहमासा पर इस दशक में अच्छी शोध हुई है। इन शोधों में बीसवीं सदी के (१)जयोदय (२) मूकमाटी (३) अन्य काव्य भी समाहित हुए हैं। वीरेन्द्र जैन के उपन्यास भी शोध

के विषय बने हैं। जिनवाणी, १९८७ के सर्वेक्षण में जो काव्य ग्रंथ छूट गये थे, उनमें से प्रत्येक पर एकाधिक शोध-निबंध प्रस्तुत किये गये हैं। इनमें सर्वाधिक संदेश काव्यों (प्रायः १०) पर शोध हुई है। हम्मीर काव्य पर ही ३ शोधें हुई हैं। द्विसंधान महाकाव्य ने भी पाँच शोधकों का ध्यान आकृष्ट किया है। चंपूकाव्यों पर भी शोधकों का ध्यान गया है। प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी के विविध कोटि के साहित्य पर पर्याप्त निबंध प्रस्तुत हुए हैं। तमिल के तीनों काव्य ग्रंथों पर भी अनेक शोधकों ने काम किया है। रामकथा संबंधी शोधों में पउमचरियं के साथ अनेक तुलनात्मक अध्ययन हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह क्षेत्र अब संतृप्त हो गया है। पर अन्य देशों की तथा दक्षिण की रामायणों की परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। पुराण साहित्य में भी अभी पर्याप्त शोध की आवश्यकता है। पिछले अनेक वर्षों (उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ से) में अनेक विदेशी भाषाओं में भी जैन साहित्य एवं शोध ग्रंथ प्रकाश में आये हैं। इस संबंध में लेख तो अनेक आये हैं, पर उनकी शोधात्मक समीक्षा अभी उपेक्षित है। एतदर्थ शोध संदर्भ में लगभग ५० शोधों की जानकारी है। यह अपूर्ण तो है पर यह निरंतर वर्द्धमान है। इसकी विश्लेषणात्मक शोध अपेक्षित है। एतदर्थ विदेशी भाषा में उपलब्ध जैन साहित्य और शोध ग्रंथों के एकत्र संकलन की आवश्यकता है। यह काम कौनसी संस्था करेगी, यह विचारणीय है।

व्यक्तित्व और कृतित्व के अंतर्गत हरिभद्र, उमास्वाति, विद्यानन्द, समयसुन्दर एवं हेमचन्द्र पर एकाधिक शोध प्रबंध आये हैं। इसके अतिरिक्त इन पर इनकी स्वतंत्र कृतियों से संबंधित अनेक शोधों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें कुंदकुंद, उमास्वाति एवं समंतभद्र प्रमुख हैं। इस कोटि में लगभग एक दर्जन अन्य प्राचीन कवियों पर भी शोध हुई है। बीसवीं सदी के गणाधिपति तुलसी, युवाचार्य महाप्रज्ञ (अब आचार्य) एवं आचार्य विद्यासागर जी भी अनेक शोधों में समाहित हुए हैं।

जैन व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के अंतर्गत अलंकार ग्रंथों, काव्यानुशासन (५), जैनेन्द्रव्याकरण, वररुचि, बिम्ब योजना, छंद योजना एवं भाषाकोषों पर काम हुआ है। अभी इनमें शाकटायन एवं कातंत्र व्याकरण सम्मिलित नहीं हुए हैं।

आगम विषयक शोध

आगम संबंधी शोधों में आचारांग के विविध पक्षों ने सर्वाधिक ध्यान पाया है। उपासकदशा, भगवतीसूत्र, विशेषावश्यक भाष्य, निशीथचूर्णि एवं ऋषिभाषित भी शोध के विषय बने हैं। दिगम्बर साहित्य में मूलाचार, भगवती

आराधना, कुंदकुंद साहित्य, अष्टपाहुड, समंतभद्र साहित्य तथा ज्ञानार्णव ने भी शोधकों का ध्यान आकृष्ट किया है। कुंदकुंद साहित्य पर पांच शोधकों ने काम किया है। सर्वमान्य तत्त्वार्थ सूत्र और उनकी टीकाओं पर लगभग आठ शोधकार्य हुए हैं जिनमें उसके विविध पक्षों का अध्ययन हुआ है। आगम संबंधी शोधकार्य इस दशक में काफी अपूर्ण लगता है। पूरे उपलब्ध ग्यारह अंगों पर अनेक दृष्टियों से शोध होनी चाहिये। दिगम्बर ग्रंथों-षट्खण्डागम पर अभी तक कोई शोध नहीं हुई है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा अभी अछूता है। श्रावकाचार का समीक्षात्मक अध्ययन भी अभी एक खुला विषय है। अब तो अनेक नये विषय भी सामने आ रहे हैं-१. सिद्ध शिला का आकार २. आर्यिकाओं की समकक्षता ३. भट्टारक प्रथा, ४. पद्मावती आदि का पूजन आदि। प्राचीन सिद्धांत ग्रंथों के साथ ऐतिहासिक एवं जैनधर्म संवर्धन के परिप्रेक्ष्य में भी इन पर शोध होनी चाहिये।

जैन न्याय-दर्शन और तुलनात्मक अध्ययन

इन विषयों की सम्मिलित शोध प्रायः १५-१८ प्रतिशत है। इसके अंतर्गत विभिन्न जैन सिद्धांतों एवं दार्शनिक मान्यताओं का अध्ययन किया गया है। इनमें द्रव्य (३) जीव, आत्मा (३), कर्म(३), ज्ञान (३) बंध-मोक्ष, निश्चय-व्यवहार, सर्वज्ञता, नास्तिकता, गुणस्थान, लेश्या एवं अतीन्द्रिय ज्ञान, पंचपरमेष्ठी- जैसी दार्शनिक मान्यताएँ और नयवाद, अनेकांतवाद, प्रामाण्यवाद, तर्कशास्त्र, ईश्वरवाद आदि के विषय समाहित हुए हैं। तुलनात्मक अध्ययनों में जैन, बौद्ध, सांख्य, योग, वेदांत एवं वेद के प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन समाहित है। इनमें पश्चिमी धर्मों (मुख्यतः यहूदी, ईसाई तथा मुस्लिम धर्म) के साथ तुलनात्मक अध्ययन समाहित नहीं है। इन पर शोध अनेक कारणों से अपेक्षित है। इन अध्ययनों से यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि इनसे प्राचीनतर जैनधर्म सामान्य जन को आकर्षित कर विश्व के बहुसंख्यक धर्मों में स्थान क्यों नहीं प्राप्त कर सका। इस कोटि के अध्ययन में विभिन्न कोटि के साहित्य का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

नीति, आचार और धर्म

आलोच्य दशक में इस कोटि में पूर्व की अपेक्षा कम अनुसंधान हुए हैं। फिर भी, इसमें योग के विविध पक्षों पर सामान्य और तुलनात्मक अध्ययन अधिक हुए हैं (७)। मंत्रविद्या, ध्यान, अनुप्रेक्षा पर भी शोध हुई है। श्रावकाचार एवं मूलाचार ने भी शोधार्थी को आकृष्ट किया है। पंचशील पर भी एक शोध हुई है। शाकाहार ने भी इस दशक में आकर्षण पाया है। आचार संबंधी कुल शोध

आगम साहित्य के अंतर्गत भी आई है। अहिंसा ने इस दशक में नगण्य स्थान पाया है। कुछ धार्मिक सिद्धांतों के मनोवैज्ञानिक पक्षों पर भी अध्ययन हुए हैं। इन शोधों की विषय-वस्तु से ऐसा लगता है कि यह भूतकालीन दृष्टि को ही अधिक प्रतिबंबित करती है, इसमें वर्तमान वैज्ञानिकता से तुलनात्मकता कम है। आहार-विज्ञान धार्मिकता का एक अभिन्न अंग है, इस पर स्वतंत्र शोध नहीं हुई है। अभक्ष्य शास्त्र का भी शास्त्रीय एवं आधुनिक समीक्षण अपेक्षित है। नव-विकसित एवं विदेशों में प्रचलित खाद्यों की कोटि का निर्धारण भी एक अच्छा विषय है। अन्य पद्धतियों की आचार संहिताओं का भी तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। क्रियाकाण्ड भी शोध से निर्लिप्त रहे हैं। ये मनोविज्ञानतः धार्मिकता के प्रेरक हैं। यह माना जाता है कि उत्सव-प्रेम ने ही उत्तरवर्ती काल में धर्म के अभिन्न अंग के रूप में स्थान पाया।

कला, पुरातत्व और इतिहास

इस क्षेत्र की शोध में पर्याप्त वृद्धि हुई लगती है। इसके अंतर्गत मूर्तिकला, प्रतिमा विज्ञान, अभिलेख अध्ययन, खजुराहो एवं श्रवणबेलगोला, पांडुलिपि कला पर शोध कार्य हुए हैं। जैन साध्वियों एवं प्रमुख जैन महिलाओं पर अच्छी जानकारी मिली है। विभिन्न प्रदेशों में जैन धर्म पर काफी शोध कार्य हुए हैं। संभवतः केरल अभी छुटा हुआ-सा है। भट्टारक सम्प्रदाय पर एक ही काम हुआ है। इस पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। वस्तुतः जैन इतिहास, कला और पुरातत्व का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। इस पर अच्छी शोधों की आवश्यकता है। ऐतिहासिक आचार्यों एवं राजतंत्रों या अन्य माध्यमों से जैन धर्म संवर्धन में योगदान विषय पर शोध अतीव आवश्यक है।डॉ. ए. चटर्जी ने अपने अंग्रेजी में लिखित जैन इतिहास में अनेक ऐसे साधुओं का उल्लेख किया है। यह विषय किंचित् व्यय एवं यात्रा साध्य है। पर यह जैन धर्म की भूतकालीन प्रभावकता प्रकाशित करेगा, साथ ही वर्तमान प्रवृत्तियों को भूतकाल से जोड़ेगा एवं उन्हें प्रेरित करेगा।

आधुनिक विषय

आधुनिक विषय के अंतर्गत वर्तमान में मानविकी संकाय के अनेक विषय आते हैं। इनसे संबंधित शोधों में १९८३ की तुलना में पर्याप्त (लगभग २०० प्रतिशत) वृद्धि हुई है। इनकी संख्या १८ से ४१ हो गई है। इनमें राजनीति और समाजशास्त्र से संबंधित शोध अधिक हैं। अन्य में वृद्धि कम ही हुई है। इस सूची में जैन भूगोल एवं पत्रकारिता विषय नये जुड़े हैं, पर संगीत विषय भी छूटा हुआ है। आगमों एवं अन्य ग्रंथों में स्फुट रूप से ये विषय पर्याप्त

मात्रा में वर्णित हैं। इन विषयों पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। जैन परम्परा की दृष्टि से ये विषय ऐतिहासिक हैं, पर इनके आधार पर ही वर्तमान प्रगति का मूल्यांकन किया जा सकता है।

विज्ञान .

जैन आगम,आगम-तुल्य,धर्म,दर्शन एवं विशिष्ट ग्रंथों में भौतिक जगत् से संबंधित पर्याप्त सामग्री पाई जाती है। इस कोटि में अनेक विषय समाहित होते हैं : भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, आहारविज्ञान, औषध/ चिकित्सा विज्ञान, गणित आदि। सामान्यतः यह पाया गया है कि विभिन्न ग्रंथों में औसतन एक चौथाई से अधिक ये विषय किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। इसका विषयवार एवं आधुनिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। इन विषयों में शोध का अनुपात २ प्रतिशत से भी कम है, यह सोचनीय है। यह स्वीकार करने में अनापत्ति होनी चाहिये कि इन विषयों से संबंधित शास्त्रीय विवरण तत्कालीन ज्ञान के निरूपक हैं। तथापि, इनकी ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मक प्रामाणिकता नयी पीढ़ी की धार्मिक आस्था को बलवती बना सकती है।

आलोच्य दशक में इस क्षेत्र में पिछले दशक के समान ही शोध हुई है। पर इस बार सैन्य विज्ञान, सृष्टिविद्या, पुस्तकालय विज्ञान के विषय नये जुड़े हैं। गणित, ज्योतिष परमाणुवाद एवं आयुर्वेद परंपरागत शोध के विषय हैं। इस क्षेत्र में शोध की अनेक संभावनाएँ हैं। विशेषतः वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति को प्रदर्शित करेगा और हम जैन धर्म की वैज्ञानिकता को परिपुष्ट कर सकेंगे। इस दिशा में शोध को स्पष्टतः प्रेरित करने के लिये वरीयता से छात्रवृत्तियां प्रदान की जानी चाहिये। इस दिशा में मार्गदर्शन के लिये उपाधि-निरपेक्ष शोध-निर्देशक पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। वे ही अभी इन क्षेत्रों में स्फुट काम कर रहे हैं। वस्तुतः हमारे विद्यालयों में एवं प्राचीन या अर्वाचीन महाविद्यालयों में विज्ञान से संबंधित विषय नाम मात्रेण ही पढ़ाये जाते हैं।अतः विद्यार्थियों की रुचि इस दिशा में विकसित नहीं हो पाती है।

यह बताया जा चुका है कि इस क्षेत्र में उपाधि-निरपेक्ष शोध पर्याप्त हो रही है। मध्यप्रदेश तो इस दिशा में प्रारंभ से ही अग्रणी रहा है। अब इस क्षेत्र में अनेक दिगम्बर और श्वेताम्बर साधु व विद्वान् सामने आये हैं जिन्होंने अनेक शोध-लेख, पुस्तकें व पुस्तिकाएँ लिखी हैं। इनका कुछ रूप कुछ अभिनन्दन ग्रंथों के विज्ञान खण्डों में देखने को मिल सकता है। ये विषय ऐसे हैं जिनका सत्यापन भौतिक या यांत्रिक चक्षुओं से भी हो सकता है। विज्ञान के इतिहास की पुस्तकों में अभी तक जैनों के योंगदान का नाम तक नहीं आता। फलतः इस दिशा में की

गई शोध जैनों की प्रतिष्ठा ही बढ़ायेगी।

विदेशों में जैन विद्या शोध

हमने पूर्व सर्वेक्षण में संकेत किया था कि विदेशों में भी जैन विद्या के प्रति रुझान बढ़ रहा है। पिछले विवरणों की तुलना में इस दशक में उपलब्ध सूचनाओं से ज्ञात होता है कि १९७३-८३ की अपेक्षा इस दशक में विदेशों में जैन विद्या संबंधी शोधकार्य पर्याप्त मात्रा में वर्धमान हुआ है। इसमें निरंतर वृद्धि भी हो रही है। यद्यपि विदेशी विद्वानों की यह शोध-सूची पूर्ण जानकारी के अभाव में अपूर्ण है, फिर भी, इनमें जैनों के समाज शास्त्रीय, साहित्यिक एवं सैद्धान्तिक विषयों का पश्चिमी विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन अत्यन्त रोचक है। आजकल विदेशों में जैन विद्या/भारत विद्या अध्ययन के अनेक केन्द्र खुल गये हैं। इनसे पश्चिम में होने वाली जैन विद्या शोधों का यथासंभव पूर्ण विवरण प्राप्त करते रहने का उपक्रम होना चाहिये। हमने अपने इस समीक्षण में इन शोधों को भी विषयवार वर्गीकरण में समाहित किया है। तथापि, यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि विदेशी शोधों में श्वेताम्बर साहित्य पर अधिक कार्य हुआ है, दिगम्बर सम्प्रदाय डॉ. डुंडास के अनुसार अभी भी उपेक्षणीय स्थिति में है। इसका कारण दिगम्बरों के साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद नहीं हुए हैं और न ही उन्हें देश से बाहर भेजने में रुचि जगी है। विदेशों में धर्म-प्रचार के पुरोधा डॉ. कामता प्रसाद जी बडब्लेइंसवर्ग(जर्मनी) के पुस्तकालय में जैन साहित्य भेजते रहते थे। जब वह पर्याप्त मात्रा में हुआ तो अतिरिक्त साहित्य के लिये वहां से एक आलमारी की मांग आई। डॉ. बाबूजी ने अनेक धर्मप्रेमी श्रेष्ठिजनों से इस विषय में चर्चा की, पर उन्हें निराशा ही हाथ लगी। यह १९६१ की बात है। इस मनोवृत्ति में अभी कोई विशेष परिवर्तन हुआ है, ऐसा नहीं लगता। विभिन्न संस्थायें साहित्य-संप्रेषण या धर्म संवर्धन के काम में उपेक्षा ही प्रदर्शित करती हैं। विदेशी विद्वानों का यह मत है कि जैनी भाषा (प्राकृत) की अज्ञानता उन्हें जैन धर्म की समग्रता के अज्ञान में डुबोये हुए है। इसके लिये यह आवश्यक है कि हमारा अधिकाधिक साहित्य अंग्रेजी में अनूदित कर विदेशों में भेजा जाय।

शोध प्रबंधों का प्रकाशन

अनुसंधान एवं शोधकार्य स्वयं में तो महत्त्वपूर्ण है ही, पर उसका समुचित रूप में संचारण उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। शोध तो व्यक्ति आधारित होती है, लेकिन उसका संचारण न केवल शोधकों के लिए ही उपयोगी होता है, अपितु यह पूर्वकृत शोध की जानकारी देकर उससे आगे बढ़ने तथा नये क्षितिजों का संकेत देने में भी सहायक होता है। इस दिशा में

दोनों ही दिशाओं में जैन विद्याएँ अभी काफी पीछे हैं। वैसे तो जैन पत्र-पत्रिकाओं की संख्या, संपर्क, २००० के अनुसार, अर्ध-सहस्र तक पहुंच गई है, पर शोध पत्रिकाएँ कम ही हैं। जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त, तुलसी प्रज्ञा, अर्हद्वचन, शोधादर्श, जिनमंजरी, श्रमण, प्राकृत विद्या, जैन विद्या, संबोधि एवं निर्ग्रंथ के समान पत्रिकाएँ ही इस कोटि में आती हैं। इनमें प्रायः पत्रिकाएँ त्रैमासिक हैं और प्रत्येक औसतन १० लेख प्रकाशित करती हैं। यदि हम औसतन प्रतिवर्ष ५० शोध एवं अनेक लघु शोध निबन्ध मानें, और प्रत्येक में औसतन ३ शोध पत्र की संभावना मान लें, तो प्रायः २००शोध पत्र प्रतिवर्ष प्रकाशित होने चाहिये। इसके अतिरिक्त उपाधि-निरपेक्ष तथा उपाधि उत्तर शोध को इसमें और समाहित करना चाहिए, जो प्रायः इससे दुगुनी हो सकती है। इस प्रकार प्रायः ६०० वार्षिक शोध-पत्रों के लिये जैन शोध-पत्रिकायें अपर्याप्त हैं। साथ ही शोध की महत्ता एवं उपयोगिता उसके शीघ्र संप्रसारण में ही है। इस हेतु 'केमिकल एब्स्ट्रेक्ट' के समान 'जैन शोध निष्कर्ष' का प्रयास किया जा सकता है, जिसमें शोध पत्रों एवं शोध लेखों के सार रहें। इस दिशा में एक पत्रिका कुछ कर रही है, पर यह नितांत अपर्याप्त है। आजकल बहुतेरी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की जैन संस्थाएँ सामने आ रही हैं। वे इस कार्य को हाथ में ले सकती हैं।

शोध पत्रों के प्रकाशंन के अतिरिक्त, शोध प्रबंधों का प्रकाशन भी शोध संचारण का एक उपाय है। लेकिन यह अधिक व्यय-साध्य है। साधु-साध्वियों की शोधों के अतिरिक्त केवल संबली लोग ही इन्हें प्रकाशित करा पाते हैं। फिर भी सारणी-१ से स्पष्ट है कि १९८३-९३ के दशक में शोध प्रबंध प्रकाशन का प्रतिशत पिछले दशक की १५ प्रतिशत की तुलना में २१.५ प्रतिशत हो गया है। यह उत्साहवर्द्धक है। अगले दशक में यह और भी बढ़े ऐसी कामना है। शोधकार्य की जानकारी में शोध संदर्भ भी उपयोगी हैं, पर वे प्रकाशित शोधकार्यों का स्थान नहीं ले सकते।

जैन विद्याओं में शोध के नये क्षितिज

इस लेख में हमने यथास्थान अनेक क्षेत्रों में शोधकार्य की संभावना का उल्लेख किया है। कुछ क्षेत्र फिर भी छूट गये हैं। उदाहरणार्थ, आजकल वास्तु शास्त्र का युग चल रहा है। जैन ग्रंथों में वास्तुशास्त्र, गृहनिर्माण, सैन्यागार निर्माण, नगर एवं मंदिर के निर्माण के अनेकविध विवरण मिलते हैं। अनेक उद्योगों के संबंध में भी विवरण मिलते हैं। इनके अध्ययन शोध की पर्याप्त सामग्री दे सकते हैं। आहार, शरीर एवं चिकित्सा-विज्ञान के विषय अभी तक

लगभग अछूते ही हैं। कल्याणकारक विषय पर शोध होनी चाहिये। आयुर्वेद के ग्रंथों की विशाल सूची है। ऐसे ही अन्य अनेक विषयों की ओर ध्यान देना चाहिये। इसके लिए श्रमशील एवं अध्ययनशील शोधकों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

१९८३-१९९३ के दशक के संक्षिप्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट है कि ललित साहित्य और उससे सहचरित विषय जैन विद्या शोध के मुख्य अंग अभी भी बने हुए हैं। अन्य विषयों की शोध में कुछ सुधार हुआ है, पर यह आशा के अनुकूल नहीं है। मुझे विश्वास है कि अगले दशक में इन क्षेत्रों पर और अधिक उत्साहवर्धक एवं जैन विद्या संवर्धक काम होगा।

-जैन सेण्टर, १२/६४४, बजरंग नगर, रीवां (म.प्र.)

जीवन मात्र जीना नहीं

श्री प्रकाश कर्णावट, इजरायल

(1)

नदी निर्मल जल, बहता पानी,
तालाब थमता जल, थमता पानी।
समुद्र समाता जल, समाधि जानी,
मानव भुलाकर सब, बिगाड़ता जिन्दगानी।।

(2)

स्वप्न को कह दो, साकार हो जाए,
तार को कह दो, झंकार हो जाए।
सदा तुम पर न रखूं, निगाह अपनी,
दोष को कह दो, घुलकर प्यार में बदल जाए।।

(3)

मित्र मात्र साथी ही नहीं, सारथी हो तो मजा आ जाए,
जीवन मात्र जीना नहीं, परमार्थी बनें तो मजा आ जाए।
जहाँ सहकार वहाँ उद्धार, जहाँ तकरार संहार हो जाए,
समता समाधि ही नहीं, वह जन्म-मरण मिटा जाए।

(4)

शान्ति जिसके मन में, समाधि उसी के तन में,
पाता वही संथारा, समझे जो पंडित मरण में।
सरलता, संतोष, नम्रता क्षमाशीलता,
समझता, आचरता जो, निकट भवि वह बन जाता।

अहंकार है विनाश का मूल

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

अहंकार के लिये आगमों में 'मान' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'मान' एक प्रकार का कषाय है। कषाय चार हैं- क्रोध, मान, माया और लोभ। ये जन्म-मरण के मूल कारण हैं। चारों कषाय संसार में परिभ्रमण कराने वाले और मुक्ति के प्रतिबन्धक हैं।

मानव को चारित्र-आराधना के लिये सर्वप्रथम प्रमाद का त्याग करना आवश्यक है। प्रमाद के पाँच प्रकार हैं-

"मज्जं विसयकसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया।
एए पंच पमाया जीवं पाडंति संसारे।।"

मद्य, इन्द्रिय-विषय, कषाय, निद्रा तथा विकथा ये पाँच प्रमाद हैं जो जीव को संसार में भटकाते हैं। इन प्रमादों में कषाय को भी लिया गया है। कषायों में अहंकार भी है जो व्यक्ति पर ऐसा छा जाता है कि वह सत् एवं असत् में भेद नहीं कर पाता। मान कषाय महाविनाशकारी है और नरक गति की ओर ले जाता है।

मानव जीवन में जब तक अहंकार की भावना रहती है तब तक कितने ही प्रयत्न करने पर भी आत्मोत्थान की पूर्णता असंभव है, संयम की साधना नहीं हो सकती है।

हम जिसे अहं कहते हैं उसके कई नाम अहंकार, दर्प, गर्व, अभिमान, मद आदि हैं। अहंकार को आठ फन वाले भुजंग की उपमा शास्त्रों में दी गई है। मानव में अहंकार १. जाति २. कुल ३. लाभ ४. ऐश्वर्य ५. बल ६. रूप ७. तप और ८. ज्ञान के कारणों से आता है।

संक्षेप में उक्त आठ मदों पर अपने विचार लिखने का प्रयास कर रहा हूँ-

1. जाति मद— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार जातियों में ब्राह्मण अपने को ऊँचा मानते थे। क्षत्रिय, वैश्य से अपने को श्रेष्ठ समझते थे और वैश्य अपने को शूद्र से ऊँचा मानते थे। जैन धर्म के अन्तिम तीर्थंकर श्रमण सम्राट् भगवान महावीर ने अपने अन्तिम प्रवचन में फरमाया-

"कम्मुणा बंभणो होई, कम्मुणा होई खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणो होई, सुद्दो हवई सकम्मुणा।।"

मनुष्य अपने कर्म अर्थात् धंधे से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है। वर्ण-व्यवस्था कर्म से बनती है। जैन धर्म जातिवाद को कोई महत्त्व नहीं देता

है। उच्च जातिवाला नीच कर्म करता है तो वह नीच जाति का है और नीच जाति वाला उच्च कर्म करता है तो वह उच्च जाति का है। जाति मद नहीं होना चाहिए, क्योंकि मनुष्य जन्म से ऊँच-नीच जाति का नहीं बनता, वह कर्म से ही ऐसा बनता है। जातियां कर्म के अनुसार बदलती रहती हैं। इसलिये जाति मद निराधार है।

2. **कुल मद**– मनुष्य किसी तथाकथित कुल में जन्म लेने के कारण अपने आपको उच्च और दूसरों को नीच मानने लगता है। खानदान या झूठा घमण्ड करता है। उच्च कुल में पैदा होने वाला व्यक्ति दूसरों को घृणा, द्वेष, ईर्ष्या और नफरत से देखता है। ऐसे बहुत से मनुष्य हैं जो कुल की डींग हांकते हैं। खानदानी नशे ने उग्र रूप धारण किया है। नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन होता है, फिर भी अहंकार पोषण किया जाता है, दूसरों से घृणा की जाती है। खानदान के अहंकार में हजारों रुपये व्यर्थ किये जाते हैं, परन्तु किसी दीन-हीन गरीब को सहायता देने का प्रश्न आता है तो हिचकिचाते हैं। कुल के गर्व पर अपना जीवन बर्बाद करते हैं। कुल-मद न करने का संकल्प विरले व्यक्तियों में है। अधिकांश लोग तो कुल मद के प्रवाह में बहते चले जाते हैं।

3. **लाभ मद**– हर व्यक्ति को अपने भाग्य पुरुषार्थ से होने वाले लाभ पर गर्व होता है। हाथों से व्यापार बढ़ाना, लाखों रुपये कमाना, अपना सिक्का बाजार में चलना, अपनी मिल या कारखाने में उत्पादन आदि अनेक बातों को लेकर व्यक्ति अहंकार करता हैं। बच्चे अपने लाभ और अपने द्वारा प्राप्त वस्तु की बड़ाई करते हैं। स्त्रियाँ घर में अच्छा काम होने की तारीफ करती हैं। लाभ मद व्यक्ति की क्षमताओं और शक्तियों को विषाक्त बना देता है। यह लाभमद आत्मा का भयंकर शत्रु है।

4. **ऐश्वर्य मद**– ऐश्वर्य का मद खतरनाक है। ऐश्वर्य मद से व्यक्ति का तौर-तरीका बदल जाता है। सोचने का ढंग और हो जाता है। उच्च पद पर पहुंचने पर, मिनिस्टर बन जाने पर नेता आदि बनने पर अहंकार हावी हो जाता है और अपने अतीत को व्यक्ति भूल जाता है। प्रश्न पैदा होता है कि ऐश्वर्य मद का क्या कारण है? मनुष्य में ऐश्वर्य मद तब आता है जब उसके पास धन इकट्ठा हो जाता है। धनवान होना और धन का गर्व करना अलग-अलग है। अपने न्यायपूर्ण और नीतिपूर्ण पुरुषार्थ से धनवान होना बुरा नहीं है। धन का मद बुरा है। कवि बिहारी ने धन मद का नशा धतूरे से भी बढ़कर बताया है–

''कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

वा खाये बौरात जग, वा पाये बौराय।।"

धतूरा और सोना दोनों को कनक कहते हैं। धतूरा तो खाने पर व्यक्ति पागल होता है, किन्तु सोना हाथ में आते ही वह अभिमान के नशे से पागल हो जाता है।

5. बल मद— बल का मद मनुष्य को पतित कर देता है। शारीरिक बल जवानी में अधिक होता है वह बुढ़ापे में क्षीण हो जाता है। बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु के आगे किसी भी बलवान का घमण्ड नहीं चल सकता है। जन बल का अहंकार व्यर्थ है। बुद्धि बल भी आयुष्य, वृद्धावस्था, बीमारी आदि के सामने व्यर्थ हो जाता है। तपोबल पर अभिमान करना भी मनुष्य को पतित व क्षीण कर देता है। बलों में आत्म बल ऊँचा है, परन्तु वह भी अभिमान, आसक्ति, प्रसिद्धि, लालसा, प्रदर्शन आदि से क्षीण हो जाता है। सूरदास जी ने ईश्वर के आत्म बल (राम बल) के लिये प्रार्थना की–

"सुने री मैंने निर्बल के बल राम।"
अप बल, तप बल और बाहुबल, चौथा है बलराम।
सूर किशोर–कृपा ते सब बल हारे को हरिनाम।।

मनुष्य को जप बल, तप बल, तन बल, धन बल आदि पर अभिमान नहीं करना चाहिए। बल पर अभिमान होने पर परमात्म बल प्राप्त नहीं होता। आत्म बल भी प्राप्त नहीं होता।

6. रूप मद— मनुष्य को अपने रूप, लावण्य और सौन्दर्य पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। मौत और बुढ़ापा उसकी हंसी उड़ाते हैं और कहते हैं कि तेरा रूप मिट्टी में मिल जाएगा। नर्तकी वारांगना वासवदत्ता को अपने रूप पर बड़ा नाज था। उसके शरीर में भयंकर कोढ़ फूट पड़ा। सारे शरीर में रक्त व मवाद झरने लगा। जो राजा उसके सौन्दर्य पर मुग्ध था उसने उसे बाहर फिंकवा दिया। उपगुप्त भिक्षु ने उसकी सेवा सुश्रूषा की। उसे अपने रूप मद पर पश्चात्ताप हुआ। उपगुप्त भिक्षु के उपदेश से वह अपना वेश्याकार्य छोड़ कर बौद्ध भिक्षुणी बनी। निष्कर्ष यह है कि रूप का मद भी निःसार एवं थोथा है।

7. तप मद— तपोमद मनुष्य को नीचे गिराता है, तपस्या का बल क्षीण हो जाता है। गोशालक ने अपनी तपस्या का मद कर वेश्यायन बाल तपस्वी को छेड़ा। उसने गोशालक पर क्रुद्ध होकर तेजोलेश्या छोड़ी। भगवान महावीर ने शीतल लेश्या से गोशालक को बचाया, अन्यथा गोशालक तेजोलेश्या के प्रभाव से भस्म हो जाता। तपोमद उसके लिये अनर्थकारक बना। तपोबल भी अभिमान, आसक्ति, राग–द्वेष, क्रोध आदि के कारण से दूषित हो जाता है। अभिमान तपस्या के फल को भी नष्ट करता है:–

"जब तक जल रही अहंकार की आग।
तब तक कितना भी करो सभी व्यर्थ तप त्याग।।"

8. ज्ञान मद– ज्ञान का मद भी बड़ों-बड़ों को सताता है। वह अपने अलावा सभी को मूर्ख समझने लगता है। ज्ञान मद से ग्रस्त व्यक्ति का सुन्दर चित्र भर्तृहरि ने खींचा है-

"यदा किं चिज्ज्ञोऽहं गज इव मदान्धः समभवम्,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित् किञ्चिद्बुधजनसकाशादवगतम्,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।"

जब मैं थोड़ा बहुत जानने लगा तब हाथी की तरह (ज्ञान के) मद में अन्धा हो गया और मेरा मन उस समय इस प्रकार के अहंकार से लिप्त हो गया कि मैं सर्वज्ञ हूँ। किन्तु जब विद्वानों के सम्पर्क से कुछ-कुछ ज्ञान किया तब मुझे लगा कि मैं तो मूर्ख हूँ। इस प्रकार मेरा ज्ञानमद बुखार की तरह उतर गया। ज्ञान का मद और शास्त्र का अहंकार मनुष्य को इस हद तक दूषित और पतित कर देता है कि व्यक्ति उसके नाम पर मानवता, भ्रातृभाव और प्रेमभाव को तिलाञ्जलि दे देता है।मनुष्य को विद्या प्राप्त करके या शास्त्रों का अध्ययन करके नम्र बनना आवश्यक है, परन्तु अनुभव बतलाता है कि उसके बदले विद्या पढ़कर व्यक्ति अधिकाधिक अहंकारी, उद्धत और अविनीत बनते जाते हैं। भगवान महावीर ने साधकों को चेतावनी दी कि ज्ञान का मद भी मानव जिन्दगी को बर्बाद करता है, सत्य की प्राप्ति से वंचित रखता है।

आठ मदों के संक्षिप्त वर्णन से ज्ञात होता है कि अहंकार की भावना जब तक विद्यमान रहती है तब तक कोटि प्रयत्न करने पर भी आत्मोत्थान की पूर्णतः प्राप्ति होना असंभव है। बाहुबलि जी के आत्मोत्थान के लिये अडोल स्थिति में ध्यानस्थ खड़े रहने पर बेलें उनके शरीर से लिपट गई, पक्षी उनके शरीर पर बैठने लगे, परन्तु इतनी तपस्या के बावजूद केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकी। इसका एक मात्र कारण अभिमान था। अभिमान को देखकर बहनों ने इन शब्दों को सुनाया-

"वीरा! गज चढ़े केवल न थाय।"

बाहुबलि जी की विचारधारा बदली। उन्होंने आत्म-निरीक्षण किया और अभिमान का त्याग करते ही केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। अंग्रेजी में कहा है-

१. "Pride comes before the fall."

जब विनाश या पतन का समय होता है तो उसके पूर्व अभिमान आ

जाता है।

२. "Pride is followed by shame"

गर्व आगे चलता है और कलंक उसका अनुसरण करता है।

३. "Pride is the most dangerous of all faults for it precedes ignorance and thoughtlessness.

अहंकार समस्त अपराधों से ज्यादा खतरनाक होता है, क्योंकि यह अज्ञानता और विचारहीनता के पहले रहता है।

४. "We should not be puffed up with pride in prosperity and cowed down in adversity"

हमें सम्पन्नता में अभिमान से फूलना नहीं चाहिए और आपत्ति में दीन-हीन नहीं बनना चाहिए।

अभिमान आ जाता है तब कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता, पूरा जीवन निष्फल हो जाता है। अहंकार जीवन का सर्वनाश करने वाली वस्तु है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक रस्किन का कथन है "अभिमान में व्यक्ति फूल सकता है, परन्तु फैल नहीं सकता।" धर्माचार्य कहते हैं कि जाति, लाभ, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप और श्रुत (शास्त्र दाता) का जिसे अभिमान होता है वह जीव अपने अगले भवों में हीन जाति, लाभ, कुल आदि को प्राप्त करता है। क्रोध यहीं से जन्म लेता है, मान भी यहीं से। भगवान महावीर ने कहा है-

"माणेणं अहमा गई"-उत्तराध्ययन सूत्र 9.34

अभिमान से अधम गति होती है। अभिमान से सिर ऊँचा नहीं करना ही हितकर है। जो मनुष्य अभिमान करते हैं, उनके संबंध में कबीर ने उचित कहा है-

"धरती करते एक पग करत समन्दर फाल।
हाथों परबत तोलते तो भी खाये काल।।"

मनुष्य के धन, वैभव, शक्ति आदि उसके पुण्योदय तक साथ रहता हैं। इसलिये अस्थायी वस्तुओं का अहंकार क्यों? यह अनर्थक है।

अब प्रश्न पैदा होता है अहंकार का विसर्जन कैसे किया जा सकता है क्योंकि "माणो विणयनासणो" (दशवैकालिक सूत्र) मान विनय का नाश करता है और मद (अहंकार) जीव को भटकाता है। तुलसीदास जी के शब्दों में "पाप मूल अभिमान"। अभिमान से मनुष्य के समस्त गुण एक साथ नष्ट हो जाते हैं। इस संबंध में सबसे श्रेष्ठ क्रिया नमस्कार की क्रिया है जिससे अपने अहंकार का विसर्जन किया जा सकता है। आचार्य श्री पद्मसागर जी सूरि

कहते हैं-

"नमस्कार इसलिये किया जाता है कि यदि अहम् का अंश अन्दर हो तो नमस्कार के उपरान्त उसका विसर्जन हो जाय। बोतल के अन्दर यदि कोई गलत चीज हो और आप उसे झुकाएँ तो वह निकल जाती है। इसी प्रकार मन की बोतल के अन्दर यदि अहंकार प्रवेश हो गया हो किसी कारण से यदि ज्ञान का अजीर्ण हो गया हो, मन के अन्दर विकृति आ गई हो तो नमस्कार जैसी क्रिया के द्वारा मन की बोतल में से अहंकार का विसर्जन हो जाता है।"

स्वामी विवेकानन्द ने भी अहंकार को छोड़ने हेतु प्रेरणा देते हुए कहा है- "अगर तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी धर्म-पुस्तक की एक भी पंक्ति पढ़े बिना तथा किसी मंदिर में प्रवेश किये बिना तुम जहाँ बैठे हो, वहीं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।"

कबीर ने कहा है-

"कबीरा गरव न कीजिए, नेकु न हंसिये कोय।
अजहू नाव समुद्र में ना जाने क्या होय।।"

तुलसीदास जी की दृष्टि में-

"कंचन तजना सरल है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, तुलसी दुर्लभ एह।।"

कंचन और कामिनी का त्याग सरल है, परन्तु अभिमान, बड़प्पन की प्रशंसा (आत्म श्लाघा) और ईर्ष्या का त्याग अति कठिन है।

अतएव भगवान महावीर ने फरमाया-

"माणं मद्दवया जिणे" -दशवैकालिक सूत्र 8.39

मान को मार्दव से जीते।

अहंकार का विसर्जन करने के लिए व्यक्तियों को नम्र और विनय शील बनना चाहिए- **"धम्मस्स मूलं विणओ।"**

श्रमण सम्राट भगवान महावीर का कथन है कि धर्म का मूल विनय है और विनय से व्यक्ति प्रेम का साम्राज्य स्थापित कर सकता है।

इस लेख को समाप्त करने के पहिले पाठकों से मेरा निवेदन है कि जीवन का सच्चा आनन्द लेना चाहते हैं और आत्मोत्थान की तीव्र आकांक्षा है तो अहंकार (आठ फने मद सर्प) को त्याग दीजिए और मनुष्य जीवन में नम्र, विनयशील और सौम्य बनिये। यही उत्कृष्ट पथ है। इति

-पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय
संरक्षक- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
"चन्दन", बी-2 रोड़, पावटा, जोधपुर-342010

मिश्र गुणस्थान और मिश्र योग

श्री धर्मचन्द जैन

प्रश्न– मिश्र मोहनीय गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर– जिस गुणस्थान में दर्शन सप्तक (अनन्तानुबंधी चतुष्क, मिथ्यात्व, मिश्र व सम्यक्त्व मोहनीय) में से मात्र मिश्र मोहनीय का ही उदय हो, जिसके कारण से यथार्थ तत्त्व निर्णय नहीं हो सके। अर्थात् न तो जैन धर्म पर एकान्त दृढ़ आस्था रूप प्रीति हो और न एकान्त द्वेष रूप अरुचि हो। गुण दोष की परीक्षा किये बिना जीव सभी देव, गुरु व धर्मों को समान ही समझता हो, उस अवस्था को मिश्र मोहनीय गुणस्थान कहते है।

प्रश्न– मिश्र मोहनीय गुणस्थान तथा अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व में क्या अन्तर हैं?

उत्तर– गुण दोष की परीक्षा किये बिना ही सब धर्मों को बराबर समझना अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व है। जबकि एक बार समकित का स्पर्श हो जाने के पश्चात् कभी अनिर्णय की स्थिति हो जाना मिश्र अवस्था है। टीका साहित्य में नारिकेल द्वीप का दृष्टांत दिया गया- जिसके निवासी मनुष्य ने कभी गेहूँ देखा नहीं, अतः उसके विषय में उसे न कोई राजीपना है, न ही नाराजीपना, वह अनिर्णय में है, तटस्थ है। सभी सही-यह मानना अनाभिग्रहिक है तथा कौनसा सही, यह निर्णय नहीं हो पाना मिश्र मोहनीय है।

तीसरे मिश्र मोहनीय गुणस्थान में अधिक रुकना संभव नहीं, जबकि अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व बहुत लम्बे समय तक रह सकता है। मिथ्यात्व और मिश्र अवस्था में क्रिया, उपयोग-अज्ञान, दर्शन आदि अनेक समानताएँ होते हुए भी स्थिति, योग, दण्डक, जीव के भेद आदि अनेक असमानताएँ भी होती हैं। प्राचीन पुस्तकों में तीसरे गुणस्थान में भी देवों, सभी गुरुओं, सभी धर्मों को समान मानने का उल्लेख वास्तव में अनाभिग्रहिक-मिथ्यात्व का लक्षण है। कदाचित् ऐसा हो सकता है कि ऐसी समानता की भावना वाला जीव प्रारंभिक क्षणों में तीसरे गुणस्थान में रहकर भावना की दृढ़ता होने पर प्रथम गुणस्थान में लम्बे समय तक रहे।

प्रश्न– मिश्र मोहनीय गुणस्थान की क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

उत्तर– १. मिश्र मोहनीय गुणस्थान में जन्म नहीं होता है। २. मरण नहीं

होता है। ३. अगले भव का आयुष्य बन्ध नहीं होता है। ४. किसी भी प्रकार की लब्धि (वैक्रिय, तैजस, आहारक, पुलाक आदि) का प्रयोग नहीं होता है। ५. असन्नी जीवों में नहीं पाया जाता, सन्नी में भी किसी-किसी जीव में ही व पर्याप्त अवस्था में ही पाया जाता है।

प्रश्न– मिश्र योग किसे कहते हैं?

उत्तर– मन, वचन अथवा काया के योगों में जब मिश्रता होती है अथवा जब तक अपूर्णता की अवस्था रहती है, तब तक उसे मिश्र योग कहते हैं। सत्य-असत्य से मिश्रित चिन्तन मिश्र-मनोयोग तथा मिश्रित कथन मिश्र-वचनयोग कहलाता है। जबकि औदारिक आदि काया के योगों की मिश्रता से अथवा अपूर्णता से बनने वाली अवस्था मिश्र काययोग कहलाती है।

प्रश्न– औदारिक मिश्र का योग कब-कब होता है?

उत्तर– १. जब जीव मनुष्य अथवा तिर्यंच गति में उत्पन्न होता है, तब प्रथम समय में आहार ,पर्याप्ति पूर्ण कर लेता है। उसके बाद जब तक औदारिक शरीर की शरीर पर्याप्ति पूर्ण न कर ले, तब तक की अन्तर्मुहूर्त की अवस्था में औदारिक मिश्र काय योग होता है। शरीर पर्याप्ति की पूर्णता के पश्चात् औदारिक काय योग प्रारंभ हो जाता है।

२. जब कोई वैक्रिय अथवा आहारक लब्धि धारक मनुष्य तथा वैक्रिय लब्धि धारक तिर्यंच वैक्रिय लब्धि को समेटकर पुनः अपने औदारिक शरीर में आते हैं तब अन्तर्मुहूर्त काल की अवस्था में औदारिक मिश्र काय योग होता है।

३. जब किन्हीं सयोगी केवली भगवन्तों को आठ समय के लिये केवली समुद्घात होता है तब उस केवली समुद्घात के दूसरे, छठे एवं सातवें समय में होने वाली क्रिया को औदारिक मिश्र काय योग कहते हैं।

प्रश्न– वैक्रिय मिश्र का योग कब-कब होता है?

उत्तर– १. जब जीव नरक अथवा देव गति में उत्पन्न होता है, तब प्रथम समय में आहार पर्याप्ति पूर्ण कर लेता है। उसके बाद जब तक वैक्रिय शरीर पर्याप्ति पूर्ण न कर ले, तब तक की अन्तर्मुहूर्त की अवस्था में वैक्रिय काय योग रहता है।

२. जब कोई वैक्रिय लब्धि धारक पर्याप्त मनुष्य अथवा तिर्यंच वैक्रिय लब्धि का प्रयोग करते हैं उस समय जब तक उनके वैक्रिय शरीर की

शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो जाय तब तक के अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण में वैक्रिय मिश्र काय योग होता है।

३. नारकी व देवता जब पर्याप्त अवस्था में उत्तर वैक्रिय करते हैं तब उनमें भी वैक्रिय मिश्र काय योग होता है, कारण कि उस समय वे अनेक वैक्रिय पुद्गलों का त्याग करते हैं तथा अनेक नये वैक्रिय पुद्गलों को ग्रहण करते हैं। जिस प्रकार १. लाल गेहूँ और सफेद गेहूँ, २. खारा पानी और मीठा पानी, ३. गाय का दूध और बकरी का दूध, इन तीनों को अलग-अलग मिलाने पर उनमें सजातीय मिश्र होता है, ठीक उसी प्रकार नारकी, देवों के पर्याप्ता में भी उत्तर वैक्रिय करने पर वैक्रिय पुद्गलों का (सजातीय) मिश्र मानना चाहिये।

प्रश्न— आहारक मिश्र काय योग कब होता है?

उत्तर— जब चौदह पूर्वधारी आहारक लब्धिवन्त अणगार आहारक शरीर बनाना प्रारंभ करते हैं, तब आहारक शरीर की शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो जाय तब तक की अन्तर्मुहूर्त की अवस्था में होने वाले योग को आहारक मिश्र काय योग कहते हैं।

आहारक लब्धि का प्रयोग निम्न चार कारणों से किया जाता है-

१. चौदह पूर्व चितारते समय स्वयं को शंका होने पर २. वादी के प्रश्न पूछने पर अपना उपयोग नहीं लगने पर, ३. तीर्थंकर केवली भगवन्त की ऋद्धि देखने के लिये और ४. जीव दया का प्रसंग होने पर।

ज्ञातव्य तथ्य— मिश्र काय योग संबंधी उपर्युक्त विवेचन भगवती सूत्र ८ उद्देशक १ की टीका के अनुसार है। प्रज्ञापना सूत्र व कर्मग्रन्थ में इस संबंध में मान्यता भेद है। प्रज्ञापना सूत्र पद १६ के विवेचन में यह माना है कि जिस शरीर से लब्धि का प्रयोग कर रहे हैं, प्रयोग करते समय उसी का मिश्र होता है। जैसे मनुष्य व तिर्यंच जब वैक्रिय लब्धि का प्रयोग करते हैं तो प्रयोग करते समय औदारिक मिश्र तथा पुनः समेटते समय वैक्रिय मिश्र माना है। इसी प्रकार आहारक लब्धिवन्त अणगार जब आहारक लब्धि का प्रयोग करते हैं, उस समय औदारिक मिश्र तथा समेट कर औदारिक शरीर में आते समय आहारक मिश्र काय योग माना है।

कर्मग्रन्थ की मान्यता के अनुसार तो पर्याप्त अवस्था में जिस लब्धि का प्रयोग करते हैं, उसी को प्रमुख मानकर प्रयोग करते समय तथा पुनः समेट कर

मूल शरीर में प्रवेश करते समय, इन दोनों ही अवस्थाओं में लब्धि वाले शरीर का ही मिश्र माना जाता है। जैसे- लब्धिधारक मनुष्य या तिर्यंच वैक्रियलब्धि का प्रयोग करे तो प्रयोग करते समय तथा पुनः समेट कर मूल शरीर में प्रवेश करते समय, इन दोनों ही अवस्थाओं में वैक्रिय मिश्र काय योग ही होता है। इसी प्रकार आहारक लब्धि का प्रयोग करते तथा मूल शरीर में पुनः प्रवेश करते समय इन दोनों अवस्थाओं में आहारक मिश्र काय योग ही होता है।

यद्यपि भगवती, प्रज्ञापना व कर्मग्रन्थ की मान्यता अलग-अलग है, किन्तु फिर भी हमें सर्वप्रथम उल्लिखित भगवती सूत्र की (टीका की) मान्यता को ही प्रमुखता देनी चाहिये।

भगवती सूत्र की मान्यता को सरलता से समझने के लिये एक बात याद रखनी चाहिये कि जिस लब्धि का प्रयोग कर रहे हैं, प्रयोग करते समय उसी का मिश्र होगा तथा पुनः समेटकर जिस मूल शरीर में जा रहे हैं, लौटते समय उस मूल शरीर का मिश्र होगा। जैसाकि उपर्युक्त प्रश्नोत्तरों में उदाहरण सहित बतलाया जा चुका है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

स्वाध्याय की महत्ता

- स्वाध्याय में 'अहम्' गलता है और 'मैं' की खोज शुरू हो जाती है। खोजने लगता है व्यक्ति कि 'मैं कौन हूँ' मेरे होने का प्रयोजन क्या है, क्या मैं शरीर हूँ, देहातीत हूँ, कोई क्षण हूँ या क्षण की सत्ता से परे कुछ हूँ, आखिर क्या हूँ?
- स्वाध्याय से जो आँच मिलती है, वह मनुष्य में साँच को समृद्ध करती है, अतः व्यक्ति अप्रमत्त चित्त से अपनी जीवन यात्रा में लग जाता है।
- स्वाध्याय एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें निजता बनी रहनी चाहिये, अपने 'मैं' को किसी की 'अस्मिता' पर थोपना इस क्षेत्र में निषिद्ध है। यह एक परम पावन, पुनीत तीर्थ क्षेत्र है, जिसकी निर्मलता को हर हालत में बरकरार रखने की आवश्यकता है।
- स्वाध्याय में सौन्दर्य-शोध और बोध दोनों के लिए जगह है। भीतर के सौन्दर्य को खोजना और उस ढूँढे हुए खजाने को दूसरों के लिए उन्मुक्तता से खोल देना स्वाध्याय का लक्ष्य है।

-संकलनकर्ता : चेतनप्रकाश डूंगरवाल, चेन्नई

निंदक नहीं, प्रशंसक बनिये

श्री नितेश नागोता 'जैन'

किसी भी व्यक्ति, परिस्थिति और पदार्थ की निन्दा, आलोचना करना बहुत अधिक सरल है, जबकि गुणग्राही बनकर व्यक्ति, परिस्थिति और पदार्थ की प्रशंसा करना अपेक्षाकृत बहुत कठिन है। मानव का स्वभाव तो जीवन के प्रारम्भ से ही गुणग्राही रहा है, जन्म लेने के बाद देखते-देखते खाना-खेलना, चलना, बोलना आदि सभी क्रियाओं को मानव समझता, करता और अपनाता है, किन्तु ज्यों-ज्यों मानव मस्तिष्क विकसित होता है त्यों-त्यों वह विकृत रूप प्राप्त करता है और इसी विकृति का रूप होता है निंदा, ईर्ष्या, आलोचना और दूसरों की व्यर्थ चिन्ता।

ज्ञानियों का मत है कि "निंदा वही करता है, जो कुछ नहीं करता।" अर्थात् निंदा को फुर्सत का कार्य माना गया है, जबकि प्रशंसा को शोध और गुणग्राही कार्य का दर्जा दिया गया है। निंदा और प्रशंसा का यह व्यवहार मानव जीवन की प्रवृत्तियों को बहुत अधिक प्रभावित करता है, क्योंकि मानव का स्वभाव अनुकरणशील है। अतः हम जैसा देखते हैं, वैसा करते हैं और जैसा करते हैं वैसे ही बन जाते हैं। अर्थात् यदि हम किसी व्यक्ति के दुर्गुणों को देखते हैं, उसकी बार-बार निंदा आलोचना करते हैं तो सहज ही उसके जीवन की बुराइयाँ हमारे जीवन में प्रवेश करने लगती हैं, जबकि गुणग्राही बनकर गुण देखने पर जीवन में उत्साह-उमंग जागृत होते हैं और गुणों का अर्जन करने की होड़ व ललक में व्यक्ति गुणवान बनता जाता है।

यदि हम चाहते हैं कि हम अच्छे नागरिक बनें, हमारा जीवन औरों के लिए आदर्श हो, हम सभी की प्रेरणा के प्रणेता बनें तो आवश्यकता है गुणग्राही बनकर गुणों को अपनाने की, गुण एवं गुणवानों की प्रशंसा की। क्योंकि निंदा करने से एक ओर जहाँ हमारे कर्मों का बंधन होता है वहीं दूसरी ओर मन में अशांति, ईर्ष्या व द्वेष के भाव उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण जीवन में चिंता, तनाव और दुःख की परिस्थितियाँ बनती हैं। महापुरुषों के कथनानुसार निंदा करने वाला व्यक्ति अधिकांशतः अशांत, व्याकुल और परेशान रहता है, चिंता की रेखाएँ उसके चेहरे पर एवं व्यवहार में झलकती हैं, क्योंकि वह खाता तो स्वयं के घर का है, पर चिंता उसे दूसरों की सताती है। जबकि प्रशंसा करने से हम जन-प्रिय बनते हैं, लोकप्रिय बनते हैं, शुभ चिन्तन के दर्जे को प्राप्त करके प्रमोद, उत्साह और शान्ति के भावों में रमण करते हैं। विभिन्न शोधों के बाद

आज यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रशंसा करने वाला गुणग्राही व्यक्ति अधिकाधिक हँसमुख, प्रमुदित और खुश रहता है। उसके मन में वात्सल्य, आत्मीयता और प्रेम की भावनाएँ तीव्रता से पनपती हैं तथा वह शुभ विचारों में रमण करता है व औरों के लिए आशाओं के दीप जलाता है।

महापुरुषों का फरमाना है कि निंदा करने वाला व्यक्ति दूसरों का तो कुछ नहीं बिगाड़ता है, किन्तु स्वयं के समय, व्यवहार व जीवन को बिगाड़ लेता है। जबकि गुणग्राही व्यक्ति की प्रशंसा की प्रवृत्ति उसके लिए शुभ कर्मों के बंधन का कारण तो बनती है, साथ ही साथ उसके जीवन को ऊँचा भी उठाती है, इसीलिए गुरु भगवंत बार-बार फरमाते हैं कि "निंदक नहीं, प्रशंसक बनिये।"

प्रशंसा करना एक देवत्व गुण है। जिनके हृदय में दूसरों के प्रति स्नेह, सम्मान और आत्मीयता के भाव होते हैं, दूसरों के जीवन व्यवहार व कार्य को देखकर खुशी होती है, सच्चे अर्थों में वे ही व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा कर सकते हैं। प्रशंसा करने से एक ओर जहाँ मानव व्यवहार गुणग्राही बनता है वहीं दूसरी ओर समाज में श्रेष्ठ कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को समर्थन, उत्साह व संबल तो प्राप्त होता ही है, साथ ही सद्कार्यों को व्यापक वेग भी प्राप्त होता है। समाज के अधिकांश व्यक्ति अपना समय निंदा, आलोचना और दूसरों के अवगुणों की तलाश में बिता देते हैं। ऐसा करने से मानव को दुगुनी हानि होती है। पहली तो यह कि जिस समय में वह दूसरों के जीवन से प्रेरणा लेकर कुछ सीख सकता था, गुणवानों की प्रशंसा करके पुण्यार्जन कर सकता था, किन्तु दुर्गुणों की तरफ ध्यान लगाकर कर्मों का बंधन कर लेता है। दूसरी हानि के तहत निंदा के स्वभाव से स्वयं के जीवन में गुणों की कमी और दुर्गुणों का प्रवेश प्रारम्भ होता है। यही कारण है कि निंदा व आलोचना करने वाला व्यक्ति अपने आपको अशांत, व्याकुल और अकेला पाता है। जबकि गुणग्राही व गुणवान व्यक्ति उत्साह, प्रमोद, शांति से परिपूर्ण होकर एक समय में अनेक कार्य या लक्ष्य साध लेता है। इसलिए आवश्यकता है-

चुम्बक से लेकर के प्रेरणा, गुणग्राही बन जाएँ।
हंस-बगुले के सम हम भी, गुण सार अपनाएँ।।
दुर्लभमानव जीवन पाया, चिंतन-मनन बढ़ाएँ।
निंदा से नहीं मिलता कुछ भी, गुणग्राही बन जाएँ।
बार-बार नहीं मिलता अवसर, ज्ञानी गुरु फरमाएँ।
गुणग्राही स्वभाव बनाकर, जीवन सफल बनाएँ।।

-१७५, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.)

पुण्य–तिथि पर

गुणों के सागर : गुरु हस्ती

श्री मनमोहनचन्द बाफना

गुरुवर के गुण कैसे गाऊँ,
क्या दिनकर को दीप दिखाऊँ,
महिमा का नहीं पार तुम्हारी,
मैं कैसे सामर्थ्य जुटाऊँ।।

हस्ती अभिनव रूप था पाया,
चिंतन से स्वरूप जगाया,
ज्ञान की अमृतधारा में तो,
डुबकी लगा कर, मैं उतराऊँ।।

नैनों की क्षमता दर्शन की,
कर को दे रज चरण स्पर्श की,
अनुपम क्रिया थी नाथ तुम्हारी,
चिंतन कर बलिहारी जाऊँ।।

गज तुम जीवन का अवलम्बन,
बढ़े भावना फिर चिंतन हो,
अन्तर में जब दीप प्रज्वलित हो,
सद्गुरु ऐसी शक्ति जुटाऊँ।।

आत्मिक शक्ति गुरु में इतनी,
जनम मरण से मुक्ति मिलती,
आलोकित त्रिरत्न की ज्योति,
शिवपुर पथ मैं जब पा जाऊँ।।

गुरुवर दया की वृष्टि कर दो,
नेह बिन्दु से झोली भर दो,
अर्पित श्रद्धा–सुमन गुरु को,
करुणा कृपा के कुछ कण पाऊँ।।

हस्ती जन्मोत्सव शुभ दिन पर,
गुण भावों के पुष्प खिलाऊँ,
निजस्वरूप को पाकर मैं जब,
'मनमोह न' कर मैं तिर जाऊँ।।

-११२/१०९, पोखरपुर, कानपुर-२०८०१०

क्रमशः (5)

महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन

श्री चंचलमल चोरड़िया

कषाय की मंदता : साधना एवं स्वास्थ्य का मापदण्ड

साधक कितना ही उग्र तप करे, परन्तु उसमें यदि कषाय मंद न हों अर्थात् क्रोध का शमन, अहंकार का दमन, माया से मुक्ति तथा लोभ में कमी न हो तब तक तप की साधना हितकर नहीं होती।

जब तक आत्मा मन, वचन और काया के योग से युक्त होती है, तब तक प्रवृत्ति करने का भाव पैदा होता रहता है। आत्मा के परिस्पन्दन से ऊर्जा पैदा होती है। परन्तु उस ऊर्जा का सम्यक् उपयोग नहीं किया जा रहा है तो, आत्मा अशुभ प्रवृत्तियों के परिणाम स्वरूप कर्म-बन्धन कर विकार ग्रस्त बन जाती है। परन्तु उसी ऊर्जा का उपयोग बाह्य और आभ्यन्तर तप में करके साधक संयमित् जीवन जीने लगता है, फिर सम्यक् पुरुषार्थ से उसका प्रमाद छूटने लगता है अर्थात् प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं। जीवन में विवेक बुद्धि और सजगता का प्रादुर्भाव होने से संयोग-वियोग, अनुकूलता-प्रतिकूलता, हानि-लाभ में समभाव रहने लगता है, परदोष दृष्टि समाप्त हो जाती है। समभाव की साधना का विकास जब पूर्ण रूप से हो जाता है तो, साधक राग-द्वेष पर पूर्ण विजय प्राप्त कर वीतराग बन जाता है। साधना की विकास यात्रा का जितना क्रमबद्ध तर्कसंगत विवेचन १४ गुणस्थानों के स्तरों के माध्यम से भगवान महावीर ने किया, वैसा अन्यत्र प्रायः नहीं मिलता। आत्म-साधकों को पूर्वाग्रह के बिना उसका अवश्य चिन्तन, मनन और अध्ययन करना चाहिये।

महावीर के अनुसार आध्यात्मिक योगी सत्य का खोजी होता है, स्वावलम्बी होता है। परावलंबी व्यक्ति सत्य की अनुभूति नहीं कर सकता। स्वतंत्र साधक ही अपने चारों तरफ उपस्थित अज्ञात रहस्यों को जानने के लिए चेतना के सूक्ष्म स्तरों से गुजरता है। जब तक आत्म-साक्षात्कार न हो जाये, तब तक उसकी साधना चलती रहती है।

साधक शरीर का तभी तक खयाल रखता है, जब तक शरीर आत्म-विकास की साधना में सहयोग देता है। दूसरी बात साधना का आधार आत्मा होने से आत्मार्थी साधक शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आत्मा को कर्मों से बोझिल नहीं बनाता। उपचार हेतु यम-नियम की उपेक्षा करना साधक को मंजूर नहीं होता। अतः उसका उपचार पूर्ण अहिंसक एवं अन्य दोषों से यथासंभव

रहित होता है। साधक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का सम्यक् उपयोग करता है। अर्थात् चारों की शुद्धि का विशेष खयाल रखता है।

जो चिकित्सा-पद्धतियाँ कर्म-बन्धन में सहयोगी होती हैं, महावीर ने उनका पूर्ण निषेध किया। रोग का मूल कारण अप्राकृतिक जीवन-शैली अनियन्त्रित, स्वच्छन्द एवं असंयमित मन,वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही होती हैं। अतः महावीर ने प्राकृतिक स्वावलम्बी जीवनशैली और मन, वचन एवं काया के संयम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जितनी ईमानदारी से उनका पालन किया जाता है,उतना ही साधक स्वस्थ होता है तथा पूर्व संचित असातावेदनीय कर्म के कारण रोग की स्थिति बन भी जाती है तो वह हाय हाय नहीं करता, परेशान नहीं होता। वह शरीर को आत्मा से पृथक्, गलन और विध्वंसन होने वाला मानता है। अतः उसकी प्राथमिकता शरीर पर नहीं रहती। शरीर से ध्यान हटते ही शरीर के दर्द, पीड़ा आदि कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जहाँ रोग का आदर सत्कार नहीं होता, वहाँ रोग अधिक दिनों का मेहमान नहीं रहता।

-चोरड़ियाभवन, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर(राज.)

समझौता

गजमल लोढ़ा

जितना जल्द हो जाय, अच्छा है।
देरी हुई नहीं,
दूर दूर होने लगता है-
नदी के किनारों की तरह।
चाहने पर भी हो नहीं सकता
समझौता।
करना चाहो तो-पाटने को मांगता,
अनेकों अनेक कुरबानियां।
अतः अच्छा है, जितना जल्द हो जाय-
समझौता।
क्षमा-दान, मोह-माया दान,
समझौता दान, महादान

-१४/७८, चौ.हा.बोर्ड, जोधपुर

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

आस्रव-संवर तत्त्व—*कन्हैयालाल लोढ़ा* ***प्रकाशक***— *प्राकृत भारती अकादमी, 13—ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर—302017* ***पृष्ठ*** *20+283*, ***मूल्य*** *100 रुपये, सन् 2002*

'जीव-अजीव तत्त्व' एवं 'पुण्य-पाप तत्त्व' पुस्तक के अनन्तर महान् चिन्तक, साधक एवं विद्वान् श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा की 'आस्रव-संवर तत्त्व' पुस्तक भी कुछ नये तथ्यों एवं चिन्तन के साथ प्रस्तुत हुई है। आस्रव और संवर तत्त्व के स्वरूप एवं आधार का निरूपण करते हुए मिथ्यात्व-सम्यक्त्व, अविरति-विरति, प्रमाद-अप्रमाद, कषाय-अकषाय और अशुभ-शुभ योग के विवेचन से सम्बद्ध कुल ३८ लेख इस पुस्तक में संकलित हैं। विद्वान् लेखक का मन्तव्य है कि आस्रव और संवर तत्त्व का प्रतिपादन पाप को आधार मानकर किया गया है, पुण्य को आधार बनाकर नहीं। आस्रव को त्याज्य बताते समय पाप का ही आस्रव त्याज्य होता है, पुण्य का नहीं तथा इसी प्रकार पाप प्रवृत्ति का ही संवर अभीष्ट होता है, पुण्य प्रवृत्ति का नहीं। मिथ्यात्व के विवेचन में उन्मार्ग को सन्मार्ग मानने रूप मिथ्यात्व का स्वरूप आपने इस प्रकार निरूपित किया है-"विषय-विकारों एवं भोगों के त्याग के लक्ष्य से की गई प्रवृत्ति सन्मार्ग है और विषय-भोगों की प्राप्ति के लिए की गई प्रवृत्ति-निवृत्ति (त्याग-तप) उन्मार्ग है। उन्मार्ग को सन्मार्ग मानना मिथ्यात्व है। इसी प्रकार सन्मार्ग को उन्मार्ग मानने रूप मिथ्यात्व का प्रतिपादन करते हुए आपने कहा है- "करुणा, दया, दान, वैयावृत्त्य, सेवा, परोपकार, नमस्कार, मृदुता, मित्रता आदि समस्त सत्प्रवृत्तियों को पुण्य-बन्ध का हेतु कहकर इन्हें संसार परिभ्रमण का कारण मानना सन्मार्ग को उन्मार्ग मानने रूप मिथ्यात्व है।"

पुण्यास्रव के निरोध को जैन दर्शन में संवर न मानने के लेखक ने अनेक कारण प्रस्तुत किए हैं, यथा- (१) पुण्य के आस्रव का निरोध सयोगी अवस्था में किसी भी जीव के संभव नहीं है। (२) पुण्य आस्रव से जीव के किसी भी गुण का घात नहीं होता है। (३) आठवें गुणस्थान तक पुण्यास्रव का निरोध होने पर उसकी विरोधिनी पाप प्रवृत्तियों का आस्रव होता है, आदि।

पुस्तक में सम्यग्दर्शन और भेदविज्ञान, व्रत, त्याग, दोष-त्याग, समिति-गुप्ति की साधना, अहिंसा, विकथा-त्याग, प्रत्याख्यान, वोसिरामि, करुणा और मोह में भेद, शुभ योग संवर क्यों, सामायिक, जप, मौन एवं भक्ति पर भी विवेचनात्मक लेख उपलब्ध हैं। आपका चिन्तन वर्तमान में आबद्ध मान्यताओं पर पाठक को पुनर्विचार करने हेतु प्रेरित करता है। यही इस पुस्तक का ध्येय भी प्रतीत होता है। पुस्तक सामान्य एवं विशेष सभी पाठकों एवं स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी है।

समाचार-संकलन

पूना में अक्षय तृतीया एवं पावन प्रव्रज्या का सुयोग

पूना सकल श्रीसंघ की भावपूर्ण विनति पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने तप और दान के विशिष्ट पर्व की साधुभाषा में स्वीकृति फरमा दी थी। पूना श्री संघ को यह ज्ञात हुआ कि आचार्यप्रवर कतिपय दीक्षाओं का चिन्तन भी कर रहे हैं, संघ-सेवी सुश्रावक श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल सकल श्रीसंघ की विनति लेकर पुनः आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में उपस्थित हुए और जैन भागवती दीक्षा का लाभ पूना को प्रदान करने की विनति रखी। "भक्ति में शक्ति होती है" आचार्यप्रवर ने वैशाख शुक्ला एकादशी, सोमवार, दिनांक १२ मई को चार मुमुक्षु बहिनों वीरमाता श्रीमती पिस्तादेवी जी कांकरिया-चेन्नई, मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया-हैदराबाद, मुमुक्षु सुश्री नूतन जैन-गंगापुर सिटी, मुमुक्षु सुश्री माला जैन, गंगापुर सिटी की दीक्षा की संभावना का संकेत किया तो पूना के सुज्ञ श्रावकों ने जय-जयकार के जयनाद कर अपना हर्ष व्यक्त किया।

पूना शहर में वैशाख शुक्ला तृतीया, रविवार, ४ मई को अक्षय तृतीया, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म. सा. का १२ वाँ पुण्य दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी, गुरुवार, दिनांक ८ मई एवं वैशाख शुक्ला एकादशी, सोमवार, दिनांक १२ मई को चार मुमुक्षु बहिनों की जैन भागवती दीक्षा का सुयोग प्राप्त हो रहा है।

पूना सकल श्री संघ प्राप्त सुअवसरों का लाभ उठाने हेतु सक्रिय है। अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त के पुण्य दिवस एवं दीक्षा महोत्सव पर पधारने वाले श्रीसंघ व श्रद्धालु अपने कार्यक्रम की पूर्व सूचना निम्न पते पर करें- **श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल, 601-602 मार्केट यार्ड, पुणे-411037 (महा.) फोन नं. 020-4271243/4271244, मोबाइल -9823081825**

विचरण-विहार

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ का सूरत शहर से १८ फरवरी को विहार हुआ। सूरत में ८ फरवरी को मुमुक्षु बहिन सुश्री पायल खींवसरा की भागवती दीक्षा एवं तदनन्तर १६ फरवरी को बड़ी दीक्षा अत्यन्त भव्यता से हुई। सूरत शहर एवं उपनगरों को पावन कर आचार्यप्रवर ने पूना की ओर बढ़ने का संकेत पूर्व में फरमा दिया था, तदनुसार चलथान, वेस्मा स्पर्श करते नवसारी पधारे। नवसारी से अष्टगांव, खारेल, चीखली, बाघलधरा, डूंगरी

आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन करते बलसाड़ पधारे। बलसाड़ में सुश्रावक रसिकभाई, गृहपति रायचन्द्र गुलाबचन्द छात्रावास एवं शिक्षक श्री भीकमचन्द जी ने आचार्यप्रवर की प्रेरणा से शीलव्रत के खंद किए। सुश्रावक श्री हर्षदकुमार जी कांकरिया एवं श्री चेतनबाबू जी पूनमिया ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर आचार्यप्रवर के पदार्पण को सार्थक किया।

आचार्यप्रवर १९ मार्च को बाणगांव, २० को बोईसर, २१ को पालघर विराजे, जहाँ धर्म-ध्यान का अपूर्व ठाट रहा। पालघर वालों ने आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर धर्म-साधना की रूपरेखा रखते निवेदन किया कि आपश्री यहाँ विराजें तो त्याग-तप अधिक होगा। आचार्यप्रवर यशोगान से प्रायः दूर रहते हैं, अतः श्रावकों की विनति पर अपने दो आज्ञानुवर्ती संतरत्नों को छोड़कर विहार किया। पालघरवासी आचार्यप्रवर की सरलता-सहजता से अत्यन्त प्रभावित हुए और अष्टमी पर त्याग-तप में अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। केलवा रोड़-सफला-वेतरणा आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करते आचार्यप्रवर मुम्बई महानगर के विरार क्षेत्र पधारे। नालासपोर, बसन्तनगर, कामण, खारम्बा, भिवण्डी, कल्याण आदि क्षेत्रों में सामायिक- स्वाध्याय के प्रति जन-जन में रुचि और भावना प्रमोदजन्य रही। आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में विभिन्न क्षेत्रों के श्रीसंघ व श्रद्धालु अपने-अपने क्षेत्रों की भक्तिभाव से विनतियाँ रख रहे हैं। आचार्यप्रवर के विचरण-विहार से गुजरात-महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों में धर्म-प्रभावना के सुन्दर रूप से शासन की प्रभावना हो रही है।

- **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा., विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा ३ उज्जैन से झारड़ा, बडौद, डग, आवर आदि ग्राम-नगरों में धर्मप्रभावना करते हुए ७ मार्च ०३ को भवानीमण्डी पधारे। यहाँ चार दिन धर्मोद्योत कर आप रामगंजमण्डी होकर १५ मार्च की शाम कोटा पधार गये। यहाँ फाल्गुनी चतुर्दशी पर जोधपुर, सवाईमाधोपुर आदि अनेक स्थानों से विनतियां लेकर संघ उपस्थित हुए। कोटा में धर्माराधन के पश्चात् आपका बून्दी पदार्पण हुआ। बून्दी से हिण्डोली, देवली होते हुए मारवाड़ की ओर विहार संभावित है।
- **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.**, तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २ जोधपुर के उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं। आप कमला नेहरू नगर के पश्चात् चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, देवनगर में धर्मोद्योत करके १५ मार्च को नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ फाल्गुनी चतुर्दशी एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस तप-त्याग पूर्वक मनाने के अनन्तर आप २ अप्रेल को सरस्वती नगर पधारे हैं।

- साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ घोड़ों का चौक स्थान में सुख-शान्ति पूर्वक विराजमान हैं।
- शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा जोधपुर नगर की पी.डब्ल्यू. डी. कॉलोनी से सिविल लाइन्स, गोल्फ कोर्स, महावीर नगर, सूर्या कॉलोनी आदि उपनगरों में धर्म प्रभावना करते हुए फाल्गुनी चतुर्दशी पर नेहरू पार्क स्थित श्री नवरतनजी लोढ़ा के मकान पर विराजे। आपने फाल्गुनी चतुर्दशी एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्मदिवस नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म. सा. के सान्निध्य में मनाया।
- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ के जोधपुर पदार्पण के पश्चात् महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. की आंख का ४ मार्च को ऑपरेशन हुआ। स्वास्थ्य लाभ हेतु आप कुम्भट भवन, सरदारपुरा विराजे। कुम्भट भवन से ४ अप्रेल को पावटा स्थानक पधारे हैं।
- शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ स्वास्थ्य संबंधी कारणों से भोपालगढ़ विराजते हुए भोपालगढ़वासियों में धर्म-भावना की वृद्धि कर रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा जायखेड़ा से ताहाराबाद, सटाणा, देवला में धर्मप्रभावना करते हुए चांदवड़ पधारे। यहाँ धर्मोद्योत करने के पश्चात् फाल्गुनी चतुर्दशी पर पालखेड़ा विराजे। यहाँ से पिपलगांव, केलवा रोड़, ओझर, आड़गांव, नासिक रोड़ होकर पूना की ओर बढ़ रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ अहमदाबाद सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। महासती श्री उषाजी म.सा. के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है। अहमदाबाद के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं और चिकित्सकों का श्रमणोचित उपचार में सहयोग प्रशंसनीय है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ सूरत दीक्षा महोत्सव के पश्चात् नवसारी, वलसाड़, वापी, डहाणु, सावटा होते हुए पालघर पधारे। वहाँ फाल्गुनी चतुर्दशी सम्पन्न कर केलवा रोड़, सफाला, विरार, नालासोपारा, वसई होते हुए आपका मुम्बई की उपनगरी भायन्दर में पदार्पण हुआ। जहाँ आपके सान्निध्य में २५ मार्च को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया।
- व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी(सोहनजी) म.सा. आदि ठाणा ४ बिलाड़ा से जैतारण, निमाज, गिरी, नानणा, चांग होते हुए २६ मार्च को ब्यावर

पधारे हैं। ब्यावर से अजमेर की ओर विहार की संभावना है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा अजमेर से नसीराबाद, विजयनगर, गुलाबपुरा, आगूचा होकर धनोप पधारे हैं। महासती रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ४ भी आगे-पीछे विहार करते हुए धनोप पधारे, जहाँ फाल्गुनी चतुर्दशी सम्पन्न हुई। महासती मण्डल का धनोप के समीपवर्ती क्षेत्रों में विचरण विहार चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा ३ बड़ौदा से सूरत, नवसारी (फाल्गुनी चतुर्दशी पर विराजे), अंकलेश्वर, वापी, भिलाड़, संजान होते हुए २५ मार्च को उमरगांव पधारे। महासती मण्डल का विचरण विहार पूना की ओर चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा ३ बजरिया से गंगापुर, करौली, मण्डावर आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए हिण्डौन की ओर बढ़ रहे हैं।

-अरुण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

१९ जनवरी २००३ को आयोजित परीक्षा का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा १९ जनवरी २००३, रविवार को आयोजित की गयी कक्षा पहली से आठवीं तक का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा चुका है। विभिन्न कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वालों की अस्थायी योग्यता सूची इस प्रकार है-

स्थान	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	प्राप्तांक
	1. जैन धर्म परिचय		
प्रथम	सौ. प्रेमलता जी रतनलाल जी कटारिया	मीरा रोड़,मुम्बई	100
द्वितीय	सौ. ललिता जी राजेशकुमार जी छाजेड़	चेन्नई	99.5
तृतीय	कु. आशा जी भागचन्द जी सुराणा	अजमेर	99
तृतीय	कु. श्वेता जी बाबूलाल जी भण्डारी	कंजार्डा	99
तृतीय	सौ. लाड जी अशोककुमार जी संचेती	भायन्दर, मुम्बई	99
तृतीय	कु. प्रीति जी राजेन्द्र जी गेलड़ा	अजमेर	99
	2. जैन धर्म प्रवेशिका		
प्रथम	कु. रोहित जी अशोक जी सुराणा	घोटी	100
प्रथम	सौ. प्रमिला जी दीपककुमार जी लोढ़ा	चेन्नई	100
द्वितीय	सौ. प्रतिभा जी दिनेशकुमार जी लोढ़ा	शिर्डी	99.5
तृतीय	सौ. स्मिता जी नंदकिशोर जी झामड़	नागपुर	99
तृतीय	सौ. प्रभा जी विवेक जी संचेती	हांगकांग	99
तृतीय	सौ. सुनिता जी सुनिलकुमार जी लुणावत	हांगकांग	99
तृतीय	सौ. अंजू जी राजेशकुमार जी लोढ़ा	चेन्नई	99
तृतीय	कु. डिम्पल जी प्रकाशचन्द जी मुणोत	चेन्नई	99

तृतीय	कु. मंजू जी भागचन्द जी बांठिया	सिरकाली	99

3. जैन धर्म प्रथमा

प्रथम	सौ. सरोजादेवी जी सुरेश जी चोरड़िया	चेन्नई	100
द्वितीय	सौ. मीना जी राजेन्द्र जी चौपड़ा	अहमदाबाद	99.5
तृतीय	सौ. उज्ज्वला जी रमेशकुमार जी चोरड़िया	आलेफाटा	99
तृतीय	कु. ममता जी राजकुमार जी जैन	संगरिया	99

4. जैन धर्म मध्यमा

प्रथम	सौ. नीता जी नरेश जी बोथरा	नरडाणा	98
द्वितीय	सौ. ज्योति जी राजेन्द्र जी तातेड़	धुलिया	97
तृतीय	सौ. सुरेखा जी प्रदीप जी चोरड़िया	नरडाणा	96
तृतीय	सौ. अल्का जी त्रिलोकचन्द जी दुग्गड़	नरडाणा	96

5. जैन धर्म चन्द्रिका

प्रथम	सौ.कोशल्या जी संजयकुमार जी सिंघवी	चेन्नई	96.5
द्वितीय	सौ. संतोष जी राजेश जी सिंघवी	चेन्नई	96
तृतीय	कु. प्रियंका जी महावीरप्रसाद जी जैन	गंगापुर सिटी	95.5

6. जैन धर्म विशारद

प्रथम	श्री राजेन्द्र जी विमलचन्द जी डागा	हांगकांग	97
द्वितीय	श्री त्रिलोकचन्द जी शांतिलाल जी जैन	जलगांव	96
तृतीय	सौ. नलिनी जी मोतीलाल जी बोहरा	जामनेर	95
तृतीय	श्री राकेश जी लक्ष्मीनारायण जी जैन	सुमेरगंजमण्डी	95

7. जैन धर्म कोविद

प्रथम	कु. मंजू जी गौतमचन्द जी छाजेड़	भोपालगढ़	95
द्वितीय	सौ. मंजू जी सुभाषचन्द जी डागा	जयपुर	94
तृतीय	श्री नरेन्द्रकुमार जी चांदमल जी जैन	अलीगढ़	93

8. जैन धर्म भूषण

प्रथम	सौ. ज्योति जी विजयकुमार जी गादिया	भुसावल	98
द्वितीय	सौ. सुनिता जी संजय जी डोसी	ब्यावर	97
तृतीय	श्री प्रेमराज जी भूरालाल जी पीपाड़ा	हैदराबाद	96
तृतीय	सौ. ज्योति जी विजयकुमार जी चोरड़िया	जामनेर	96

देश के २०७ केन्द्रों पर आयोजित परीक्षा में कुल ४०८७ परीक्षार्थियों ने भाग लिया। कक्षावार एवं श्रेणीवार परीक्षा परिणाम इस प्रकार है-

कक्षा	कुल परीक्षार्थी	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल उत्तीर्ण	प्रतिशत
जैन धर्म परिचय (पहली)	1832	813	379	263	1455	79.42
जैन धर्म प्रवेशिका (दूसरी)	1031	494	227	144	865	83.89
जैन धर्म प्रथमा (तीसरी)	595	243	140	87	470	78.99
जैन धर्म मध्यमा(चौथी)	324	155	86	44	285	87.96
जैन धर्म चन्द्रिका(पांचवी)	196	90	55	29	174	88.77
जैन धर्म विशारद(छठी)	49	30	11	6	47	95.91
जैन धर्म कोविद (सातवीं)	30	15	10	3	28	93.33

जैन धर्म भूषण (आठवीं)	30	21	7	1	29	96.66
योग	**4087**	**1861**	**915**	**577**	**3353**	**82.04**

धन्यवाद– उन सभी परीक्षार्थियों को जिन्होंने ४००० की संख्या का कीर्तिमान पूर्ण करने का बोर्ड को सुअवसर प्रदान किया। परीक्षार्थियों ने श्रेष्ठ अंक प्राप्त किये एवं ज्ञानवर्द्धन भी किया।

आभार– केन्द्रअधीक्षक, निरीक्षक, पर्यवेक्षक, प्रश्नपत्र निर्माता, उत्तरपुस्तिका जांचकर्ता एवं परीक्षा आयोजन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी महानुभावों के साथ ही स्वाध्याय संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं श्रावक संघ के पदाधिकारियों और सदस्यों का बोर्ड आभारी है, जिनके अथक परिश्रम से बोर्ड अपनी परीक्षाएँ विधिवत् सम्पन्न करा सका।

कृतज्ञता–पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वाले उदारमना महानुभावों को, पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने वाले विद्वान लेखक-स्वाध्यायियों को, जिनके सहयोग से कक्षा प्रथम से दसवीं तक की पुस्तकें बोर्ड प्रकाशित कर सका।

आह्वान–**आगामी परीक्षा 27 जुलाई 2003, रविवार दोपहर 12 से 3 बजे** तक कक्षा १ से ११ तक के लिये आयोजित होगी। **जिन्होंने 19 जनवरी 2003 की परीक्षा के लिये आवेदन पत्र भरा था, उन्हें अब पुनः फार्म भरने की आवश्यकता नहीं है।** जो इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं, उन्हें पुनः उसी कक्षा का तथा उतीर्ण होने वालों को अगली कक्षा का एवं जो इस परीक्षा में अनुपस्थित रहे उनको भी पुनः उसी कक्षा का प्रवेश-पत्र बोर्ड कार्यालय द्वारा भिजवाया जा रहा है।

१६ जनवरी २००३ की परीक्षा देने वालों के अतिरिक्त जो नये अथवा पुराने परीक्षार्थी हैं उन्हें ही ३१ मई २००३ तक आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाना आवश्यक है। प्रत्येक कक्षा की वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले परीक्षार्थियों को संघ के वार्षिक अधिवेशन में संघाध्यक्ष के कर-कमलों से स्वर्णपदक द्वारा सम्मानित किया जायेगा।

हमारा आप सभी से आह्वान है कि इस बार परीक्षार्थियों की संख्या ११००० तक पहुंचाने में आप अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा करावें, आप भी परीक्षा में अवश्य भाग लें, ऐसा विनम्र अनुरोध।

विमला मेहता — संयोजक
नवरतन डागा — सचिव
धर्मचन्द जैन — रजिस्ट्रार

धार्मिक प्रचार-प्रसार एवं सम्पर्क यात्रा कार्यक्रम सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में चार दिवसीय धार्मिक प्रचार-प्रसार एवं सम्पर्क कार्यक्रम दिनांक ६.३.०३ से ९.३.०३ तक आयोजित किया गया, जिसमें १. श्रीमती विमला जी मेहता, संयोजक-आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं अध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, २. श्री नवरतन जी

डागा, सचिव-आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, ३. श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार-आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, ४. श्रीमती शान्ता जी कर्णावट, सचिव-अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ५. श्रीमती उजास जी डाकलिया, सचिव-अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने अपनी सेवाएँ दी।

बजरिया, आवासनमण्डल, सवाईमाधोपुर, कुस्तला, चौथ का बरवाड़ा, चोरू, अलीगढ़, जयपुर, दूदू, मदनगंज, अजमेर, ब्यावर, पीपाड़, भोपालगढ़ इन १४ स्थानों पर शिष्ट मण्डल ने अपनी प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन ने बोर्ड के उद्देश्यों, गतिविधियों एवं परीक्षार्थियों की वर्तमान संख्या आदि की जानकारी प्रदान की। बोर्ड के सचिव श्री नवरतन जी डागा ने ज्ञानवृद्धि को कर्म-निर्जरा का साधन बताते हुए परीक्षाओं से जुड़ने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। बोर्ड की संयोजक एवं श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती विमला जी मेहता ने शिक्षा और संस्कार दोनों की प्रेरणा की तथा परीक्षाओं से जुड़ने एवं श्राविका मण्डल की शाखाएँ व्यवस्थित चलाने की प्रेरणा प्रदान की। श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती शान्ताजी कर्णावट एवं श्रीमती उजास जी डाकलिया ने भी परीक्षा देने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। ***-नवरतन डागा, सचिव***

श्री स्थाकनवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन स्थानीय शिविरों का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं उसकी विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने हेतु दिनांक १७ मई २००३ से ३० जून २००३ तक विभिन्न स्थानों पर बालक और बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने हेतु स्थानीय शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जो भी संघ अपने यहाँ शिविर आयोजित करवाना चाहते हैं वे प्रधान कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- **संयोजक/सचिव-स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक,जोधपुर-342001(राज.) फोन नं. 2624891 फैक्स :2636763**

जैन अध्यापक तैयार करने की दो आकर्षक योजनाएँ

तीन वर्ष तक विद्यापीठ में रहकर धार्मिक अध्ययन–न्यूनतम योग्यता-१२वीं पास, आयु-१७ से २१ वर्ष। अध्ययनकाल में भोजन, आवास तथा धार्मिक शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था के साथ प्रथम वर्ष में रु. ६०० प्रतिमाह, द्वितीय में रु. ७५० प्रतिमाह तथा तृतीय वर्ष में रु. ९०० प्रतिमाह छात्रवृत्ति। पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर समाज सेवा में रु. ५००० प्रतिमाह पर सर्विस की गारन्टी। १० वर्ष तक समाज सेवा में निरन्तर सर्विस करने पर १ लाख रु. का सम्मान पुरस्कार। प्राइवेट परीक्षा की छूट।

पत्राचार योजना– घर बैठे तीन वर्ष में कुशल साधक, प्रशिक्षित अध्यापक, प्रभावशाली प्रचारक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ समाजसेवी बनने योग्य भाई-बहन (न्यूनतम

योग्यता १२वीं पास) इस योजना में शामिल हो सकते हैं। तीन वर्ष का नियत पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर आकर्षक पुरस्कार तथा बेचलर ऑफ जैनोलोजी की उपाधि से अलंकरण। साधु-साध्वी तथा शिविरों में अध्यापन का सुअवसर।

पाठ्यक्रम तथा नियमावली के लिए सम्पर्क करें- **प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य- श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर, जलगांव-425001 (महा.)**

टोहाना में तीन मुमुक्षुओं की दीक्षा

घोर तपस्वी रसना-विजेता श्री फकीरचन्द जी म.सा. की तपो-भूमि टोहाना की पुण्य धरा पर दिनांक १५ फरवरी २००३ शनिवार को तीन मुमुक्षु आत्माओं- श्री प्रणीत जैन (आदमपुर), पुनीत जैन (टोहाना) एवं राजीव जैन (पानीपत) का जैन भागवती दीक्षा समारोह अद्भुत आनन्द, उल्लास एवं शासन-प्रभावना के मधुर-क्षणों में सम्पन्न हुआ। समारोह में संघ शास्ता शासन प्रभावक गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.के धर्मसंघ के सभी मुनिराज-महास्थविर तपस्वीराज श्री प्रकाशचन्द्र जी म.सा., संघनायक महाप्रभावी शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.सा., शान्तमूर्ति श्री शान्तिचन्द्र जी म.सा. आदि २८ ठाणा एवं दृढ़ संयमी परीषह-विजेत्री महासाध्वी श्री शान्तिदेवी जी म.सा. एवं महापुण्यवान् साध्वी श्री भागवन्ती देवी जी म.सा. की सुशिष्या संयमसिंहनी श्री संयमप्रभा जी म.सा. 'कमल' आदि ठाणा १५ विराजमान थे।

१५ तारीख की प्रातः जब तीनों दीक्षार्थियों की शोभायात्रा हाथी पर सवार होकर शुरु हुई, तो मानों सारा शहर ही उनके स्वागत में उमड़ पड़ा। जम्बू जी द्वारा आठों पत्नियों को प्रबोध, श्रीपाल-मैनासुन्दरी, रानी त्रिशला के १४ स्वप्न, चारित्र-साधकों की मोक्ष मार्ग-यात्रा, जीने का अधिकार मांगते विभिन्न पशु-पक्षी, गो-सेवा, राष्ट्र सेवा एवं भ्रूण हत्याः महापाप आदि की मनोरम सन्देशपरक झाँकियों ने जुलूस की शोभावृद्धि की।

शहर के वरिष्ठ पत्रकारों के अनुसार दीक्षा समारोह में २५ से ३० हजार की भारी जनमेदिनी उपस्थित थी, जिनमें विशेष रूप से जलगांव से पधारे रत्नवंशीय श्रावक संघ के अध्यक्ष श्रीमान् सेठ रतनलालजी बाफना, दिल्ली जैन महासंघ के अध्यक्ष श्री आननन्दप्रकाश जैन, महामंत्री प्रो. रतन जैन, हरियाणा महासभा के प्रधान बाबू राधेश्यामजी जैन, विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र जी जैन एवं स्थानीय विधायक श्री निशान सिंह जी मुथा मुख्य थे। ***-सतपाल जैन***

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

समताविभूति आचार्य श्री नानेश की पावन-स्मृति में स्थापित आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु समतामय जीवन वाले समत्व योगी राष्ट्रीय मनीषी का चयन किया जाना है। एक लाख रुपये का यह पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिह्न

के साथ ऐसे व्यक्तित्व को दिया जाता है, जिन्होंने अपने जीवन में समता साधना को साकार कर लिया हो। स्वाभाविक ही है कि ऐसे समता साधक स्वयं आवेदन करने में संकोच कर सकते हैं। अतः समतामय आचरण युक्त ऐसे मनीषी के विषय में पूरी जानकारी रखने वाले अन्य ज्ञाता भी उनके नाम की प्रविष्टि भिजवा सकते हैं। यह पुरस्कार दो वर्षों में एक बार दिया जाता है, अतः अभी वर्ष २००१-२००३ के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। इच्छुक व्यक्ति श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर से वांछित जानकारी पत्राचार से प्राप्त कर सकते हैं। इस पुरस्कार हेतु आवेदन की अंतिम तिथि ३० अप्रैल २००३ है। ***-संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार***

सेवा मन्दिर धार्मिक शोध पुस्तकालय से लाभ उठाइए

धर्मनिष्ठ, त्यागी (स्व.) श्री जौहरीमल जी पारख द्वारा संस्थापित सेवा मन्दिर, रावटी का पुस्तकालय जोधपुर शहर की अजीत कॉलोनी में स्थित बादलचन्द सुगनकंवर चोरड़िया उच्च माध्यमिक विद्यालय में द्वितीय तल के हॉल में स्थानान्तरित हो गया है। पुस्तकालय में आगम, दर्शन, न्याय, टीका, इतिहास, कथा, व्याकरण आदि से सम्बद्ध प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं में लगभग २५००० पुस्तकों का अनोखा संग्रह है। पुस्तकालय खुलने का समय प्रातः ११ से ५ बजे तक है। शोध करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए भी पुस्तकालय अतीव उपयोगी है। सम्पर्क सूत्र-**शुभराज मेहता, 2511144 (विद्यालय) 2512120(घर)**

भक्तामर स्तोत्र का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद

पूज्य मानतुङ्गाचार्य रचित भक्तामर स्तोत्र (आदिनाथ स्तोत्र) को मूल एवं विभिन्न भाषाओं के गद्यानुवादों एवं पद्यानुवादों के साथ प्रकाशित करने की योजना है। हमें हिन्दी, अंग्रेजी एवं गुजराती भाषा के अनुवाद तो उपलब्ध हैं। अन्य भाषाओं में यथा राजस्थानी, मराठी आदि में अनुवाद उपलब्ध कराने या नये अनुवाद करने का स्वागत है। जिनवाणी के पाठकों से निवेदन है कि इस विषय में सामग्री उपलब्ध करवा कर अथवा सूचित कर सहयोग करें। सहयोग का आभार प्रकट किया जायेगा।

-आसूलाल संचेती, डी-१२१, शास्त्री नगर, जोधपुर

संक्षिप्त समाचार

जयपुर—अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर कार्यालय प्रभारी श्री नौरतन जी मेहता की सुपुत्री श्रीमती वीणा जी जैन के ससुराल पक्ष ने अपनी फर्म बी.एस.बी. ओडियो विजुअल लेब, जयपुर के तत्त्वावधान में प्रथम पुण्यतिथि पर वीणा जैन स्मृति पुरस्कार प्रारम्भ किया, जिसमें लोक संस्कृति से जुड़े कलाकारों का सम्मान किया गया। पिंकसिटी प्रेस क्लब में आयोजित समारोह में उप मुख्य सचेतक श्री महेश जी जोशी मुख्य अतिथि थे और समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्र जी सुराना आई.ए.एस. ने की।

हैदराबाद—आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ के तत्त्वावधान में गुलाबसदन बोलारम में त्रिदिवसीय जैन स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में विजयवाड़ा, तिरुपति, कामारेडी, बैंगलोर, चेन्नई, गंगावती, बल्लारी, हैदराबाद, सिकन्द्राबाद आदि अनेक स्थानों के ६५ स्वाध्यायी बन्धुओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविर के संयोजक श्री मीठालाल जी मकाणा थे। शिविर में अध्यापन श्री ज्ञानराज जी मेहता, श्री महावीर जी लुणिया, बैंगलोर, श्री पारसमल जी मुरड़िया, बल्लारी एवं स्थानीय वरिष्ठ शिक्षकों ने कराया। उद्योगपति श्री मांगीलाल जी नरेन्द्र जी सुराणा, अध्यक्ष श्री जैन संघ, बोलारम ने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग किया।

लुधियाना—पण्डित रत्न श्री रमेशमुनि जी शास्त्री एवं उपप्रवर्तक डॉ. राजेन्द्र मुनि जी ने आगामी चातुर्मास हेतु लुधियाना के उपनगर सुन्दरनगर को स्वीकृति प्रदान की है। महावीर जयन्ती पर आप जालन्धर में तथा अक्षयतृतीया पर अमृतसर में विराजें, ऐसी संभावना है। **–राकेश जैन, साड़ी म्युजियम, कलां बाजार, जालन्धर (पंजाब), फोन नं. 0181–2224621, 2211306**

बधाई/चुनाव

आलनपुर—यहाँ २३ मार्च को सम्पन्न श्रावक संघ के चुनावों में श्री विनयचन्द जी जैन पटवारी (बजाज) को अध्यक्ष, श्री फूलचन्द जी जैन, ठेकेदार को उपाध्यक्ष, श्री नाथूलाल जी जैन को मंत्री, श्री जम्बूकुमार जी जैन सुपुत्र श्री कजोड़मल जी जैन को उपमंत्री एवं श्री ओमप्रकाश जी ओलवाड़ा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

बैंगलोर—हिन्दी पत्रकार संघ की वार्षिक सभा में श्री देवीलाल जी सुखलेचा जी

(अमर रिषभवीर) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष सुखलेचा ने मंत्री पद पर मोक्षद्वार पत्रिका के सम्पादक श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल का मनोनयन किया । ओस्तवाल जी रत्नवंश के प्रतिष्ठित श्रावक एवं मोक्षद्वार पत्रिका के कुशल सम्पादक हैं।

ब्यावर—श्री जैन रत्न युवक परिषद्, ब्यावर की कार्यकारिणी में मिलापचन्द जी बुरड़ को निदेशक, श्री प्रसन्नकुमार जी सिंघवी एवं श्री महेन्द्र कुमार जी गोलेच्छा को संरक्षक, श्री लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी को अध्यक्ष, श्री संजय कुमार जी डोसी एवं श्री अशोक कुमार जी सुराना को उपाध्यक्ष, श्री दिलीप कुमार जी भण्डारी को कोषाध्यक्ष श्री हेमन्त कुमार जी भण्डारी को मन्त्री एवं श्री अनिल कुमार जी बुरड़ को प्रचारमन्त्री मनोनीत किया गया।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल में श्रीमती सुशीला जी सुराना को निदेशक, श्रीमती सरोज जी सुराना को अध्यक्ष, श्रीमती सुनिता जी डोसी को उपाध्यक्ष, श्रीमती मंजू जी भण्डारी को मन्त्री, श्रीमती रेणुका जी भण्डारी को सहमन्त्री एवं श्रीमती इन्द्रा जी बोहरा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

श्रद्धांजलि

वीर पिता श्री मांगीलाल जी सुराणा का देहावसान

नागौर—वीर पिता श्रावकरत्न श्री मांगीलाल जी सुराणा का १४ मार्च ०३ को

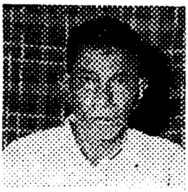

देहावसान हो गया। आप आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एवं महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. के सांसारिक पिताश्री थे। सामायिक-स्वाध्याय के साथ व्रत-प्रत्याख्यान में आपकी भावना अनुकरणीय रही। दृढ़संकल्पी, कुशाग्रबुद्धि, धर्मशील, सरलमना एवं सादगीपूर्ण जीवन के धनी श्री सुराणा साहब ने महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. के दीक्षा प्रसंग पर आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार कर लिया था। संघ-सेवा एवं सन्त-सती सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अटूट आस्था एवं अगाध श्रद्धा-भक्ति रही। वेदना के समय भी आपने समाधि-भाव बनाये रखा। अस्वस्थता के कारण विगत ११ दिनों से आपने अन्न-जल का त्याग कर दिया था। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा. के नागौर चातुर्मास में आपने सेवा का पूरा लाभ लिया। आपका सम्पूर्ण परिवार धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धाभक्ति से सम्पन्न है। जिनशासन की सेवा में आपने दो सुपुत्रियों को स्वीकृति प्रदान कर रत्नवंश की गौरव-गरिमा को बढ़ाया है। आपकी सुपौत्री कु. चन्दनबाला सुराणा महासती जी की सेवा में ज्ञानार्जन कर रही है। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री महावीरचन्द जी, श्री प्रकाशचन्द जी, श्री अशोककुमार जी और श्री विमलेश कुमार जी का संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। मरणोपरान्त आपकी भावनानुसार नेत्रदान किया गया।

जोधपुर— रत्नवंश के गौरव स्व. श्री मगनमुनिजी म.सा. के सांसारिक जीवन की

सबसे छोटी पुत्रवधू सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी जी मुणोयत धर्मपत्नी सुश्रावक श्री जेठमल जी मुणोयत का ५३ वर्ष की वय में २१ मार्च ०३ को असामयिक देहावसान हो गया। आप बचपन से नियमित धर्मध्यान एवं सन्त-सतियों की सेवा में तत्पर रहती थी। कई बोल-थोकड़ों की जानकार श्रीमती मुणोयत श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की मन्त्री रहीं तथा उन्होंने स्वाध्यायी के रूप में बाहर जाकर सेवाएँ भी प्रदान की। गत एक वर्ष से वे कैंसर से पीड़ित होने पर भी आत्मबल के साथ अन्तिम दिन तक सचेत रहीं। आप अपने पीछे तीन पुत्र, एक पुत्री, पौत्र-पौत्री, दौहित्र-दौहित्री का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

पालासनी— श्रद्धानिष्ठ गुरुभक्त सेवाभावी सुश्रावक श्री सम्पतराज जी रांका का १८ मार्च ०३ को देहावसान हो गया। आप रत्नवंश के सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आपकी परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के प्रति अनन्य आस्था एवं अगाध भक्ति थी। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के विगत पालासनी चातुर्मास में आपने सन्त-समागम का भावनापूर्वक लाभ उठाया। ऐसे सुज्ञ श्रावकरत्न के देहावसान से रत्नवंश में अपूरणीय क्षति हुई है।

नागौर— अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री डूंगरमल जी सुराना का १८ मार्च को देहावसान हो गया। सुराना साहब परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य कृपापात्र श्रावक रहे। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा अग्रणी रहने वाले श्रावक रत्न ने संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में जीवन पर्यन्त सक्रियता प्रदर्शित की। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नागौर के वर्षों तक अध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन करते हुए आपने संघ को गतिशील बनाए रखा। सामायिक-स्वाध्याय भवन निर्माण में तन-मन-धन से सहयोगी सुराना साहब ने आचार्यप्रवर की धर्मस्थान में सामायिक करने की प्रेरणा को मूर्तरूप देने में अपनी रुचि दर्शायी। परिणाम स्वरूप गणेश चौक स्थानक में नित्यप्रति एवं साप्ताहिक सामायिक-साधना निर्बाध रूप से चल रही है। सन् १९९९ में आचार्यप्रवर के नागौर चातुर्मास में उनकी विशेष भूमिका रही। सबको साथ लेकर चलने के गुण के कारण आपका संघ-समाज में वर्चस्व था। असाध्य रोग से पीड़ित होने पर भी वे कुछ दिनों पूर्व जोधपुर में विराजित सन्त-सतियों के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण हेतु उपस्थित हुए। उस समय ऐसा नहीं लगता था कि उनका थोड़ा सा आयुष्य ही अवशेष रहा है।

श्री सुराना साहब का जीवन प्रेरणादायी था। वे स्वयं धर्म-साधना में सक्रिय रहते और दूसरों को भी प्रेरित करते। उदारता के साथ उनमें सामंजस्य का विशेष गुण था। ऐसे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक के देहावसान से संघ में सुयोग्य श्रावकरत्न की अपूरणीय क्षति हुई है।

थांवला—श्रद्धाशील, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती भंवरीबाई जी डूंगरवाल धर्मपत्नी सुश्रावक श्री फतेहराज जी डूंरवाल का २६ फरवरी २००३ को देहावसान हो गया। आप रत्नवंश की सुज्ञ श्राविका थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध आस्था और अगाध भक्ति थी। सरलता-सादगी के साथ उदारता उनका विशिष्ट गुण था। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में वे सदा अग्रणी रहने वाली श्राविका रत्न थी। गुरु हस्ती के

सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग के प्रति आपकी जागरूकता का सुपरिणाम है कि डूंगरवाल परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों में सेवा-भक्ति की भावना के साथ धर्म साधना-आराधना का सुन्दर रूप देखने को मिलता है। श्राविका रत्न की सेवाभावना अनुकरणीय थी। आप सुयोग्य एवं संस्कारित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर—श्राविकारत्न श्रीमती राजकंवर जी गिड़िया (राजाबाई सा) धर्मपत्नी स्व.

श्री कुन्दनमल जी गिड़िया का ८२ वर्ष की आयु में २३ मार्च ०३ की रात्रि में स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका का जीवन धर्मक्रिया एवं सन्त-सतियों की सेवा में समर्पित रहा। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। विवाह के १० वर्ष पश्चात् ही पतिदेव के देहावसान से उत्पन्न विषम परिस्थितियों में आपने अपने दोनों पुत्रों श्री पुखराज जी एवं श्री पारसमल जी गिड़िया को सुसंस्कारित करके धर्म में मजबूत रखा और स्वयं श्रम करके दोनों को अच्छी शिक्षा दिला कर योग्य बनाया, जो आज रत्नवंश के विशिष्ट श्रावकों में से हैं। सुश्राविका ने घोड़ों का चौक में सज्जनकंवर बाई सा एवं इन्द्रकंवर बाई सा से क, ख, ग आदि सीखते हुए सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि अनेक थोकड़ों का ज्ञान करते हुए यह सिद्ध कर दिया कि लगन हो तो सीखने में उम्र कोई रुकावट नहीं होती है। प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. एवं प्रवर्तिनी श्री लाडकंवर जी म.सा. से आपकी धार्मिक भावना पुष्ट हुई। प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकंवर जी म.सा. एवं प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. के पावटा स्थानक में स्थिरवास विराजने पर आपने रात्रि में संवर, पौषध, उपवास, आयम्बिल, प्रवचन-श्रवण आदि धर्मक्रिया का पूरा लाभ लिया एवं सती-मण्डल की सर्वतोभावेन सेवा की। आपने जीवनकाल में तेला, अठाई, दस एवं पन्द्रह दिवसीय तप करने के साथ आयम्बिल ओली, रात्रि चौविहार त्याग आदि अनेक व्रत-नियमों का पालन किया। आप अनेक वर्षों से स्थानक में ही रात्रि-संवर करती थी। आप स्वावलम्बी, श्रमशील एवं स्पष्ट वक्ता थी। परिवारजनों ने अन्तिम समय में नमस्कार मन्त्र, मांगलिक, धार्मिक स्तवन आदि सुनाकर आपकी धर्मभावना को पुष्ट किया तथा अन्तिम समय में सागारी संथारे के प्रत्याख्यान करा कर सहयोग दिया। आप अपने पीछे पुत्रों-पौत्रों एवं प्रपौत्रों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर—सुश्राविका श्रीमती बृजकंवर जी डागा धर्मपत्नी श्री रिखबराज जी डागा का २२ मार्च २००३ को देहावसान हो गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म. सा. आदि सन्तों एवं सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। पारिवारिक

सुसंस्कारों से संस्कारित श्राविकारत्न का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप संघ-सेवा एवं सन्त-सती सेवा में सदा समर्पित रहीं। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण घर- परिवार और संघ-समाज में आपकी प्रतिष्ठा रही। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री अचलराज जी डागा का भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

मुकटी– श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री दगडूलाल जी दुग्गड़ सुपुत्र श्री माणकचन्द जी

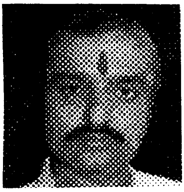

दुग्गड़ का ४२ वर्ष की युवावय में २४ नवम्बर ०२ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप रत्नवंश के समर्पित, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं मिलनसार श्रावक रत्न थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का गत चातुर्मास मुकटी में कराने में आपकी सक्रिय भूमिका रही। आपने चार माह में सन्त-सती एवं साधर्मी- सेवा के साथ दान, शील, तप एवं भाव की विशिष्ट आराधना की। आप तपस्वी श्रावक थे। इतने छोटे जीवनकाल में आपने ८,६,११,१५,३१,३३ एवं ६१ दिवसीय तप का आराधन कर लिया था। आपने महासती श्री सरलेशप्रभा जी के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत का नियम लिया। दो वर्ष पूर्व हृदय के वाल्व-परिवर्तन के बाद भी आपने तपाराधन जारी रखा। स्वाध्यायी के रूप में आपने इस वर्ष भी मांजलगांव में पर्युषण पर्व पर सेवाएँ दी। आपके असामयिक देहावसान से मुकटी संघ में रिक्तता का भारी अनुभव हुआ।

जलगांव–धर्मनिष्ठ सुश्राविका स्वाध्यायी बहिन सौ. शकुन्तलाबाई विरेन्द्र जी

कावड़िया का १६ फरवरी ०३ को आकस्मिक निधन हो गया। सुशील बहूमण्डल के माध्यम से तथा जैनॉलॉजी व प्राकृत की परीक्षाओं के माध्यम से आपने अपने धार्मिक ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि की तथा सभी धार्मिक कार्यक्रमों में सदैव उपस्थित रहती थी। आप महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ की सक्रिय स्वाध्यायी थी। आपने अपने पतिदेव को भी सामायिक व धर्माराधना के साथ जोड़ कर धर्मनिष्ठा का परिचय दिया।

सवाईमाधोपुर– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी जैन बोहरा (जे.एम.बी.)

का ७६ वर्ष की आयु में १४ मार्च २००३ को आकस्मिक निधन हो गया। आप विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी, सरल स्वभावी, मिलनसार, स्पष्टवादी, विनम्र एवं सेवाभावी श्रावक थे। देव, गुरु व धर्म के प्रति समर्पित आपका जीवन सेवाभावना, स्वधर्मिवात्सल्य आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आपने श्यामपुरा, बसवा एवं इन्दौर के पश्चात् सवाईमाधोपुर को कर्मस्थली चुनकर सन्त-सतियों की सेवा भावना के साथ सामायिक-स्वाध्याय को जीवन का अंग

बनाया। पोरवाल समाज की विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर आपने स्थानीय श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रीसंघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष पदों पर सफलतापूर्वक कार्य किया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी जैन, ज्येष्ठ पुत्र श्री हनुमान प्रसाद जी जैन वरिष्ठ पत्रकार, श्री चौथमल जी जैन व्यवसायी एवं लघु पुत्र श्री पारसचन्द जी जैन पार्षद तथा तीन पुत्रियों का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। महावीर भवन में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि सभा में गुणगान पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। *-महावीर प्रसाद जैन*

जोधपुर-श्रीमती ज्ञानकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री विजयमल जी सुराणा (बाली वालों) का ८२ वर्ष की अवस्था में १३ मार्च २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप जीवन में सामायिक, प्रतिक्रमण, तप आदि धर्मक्रियाओं का प्राथमिकता से आराधन करती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर-उदारमना सुश्रावक श्री दीपचन्दजी सुखलेचा का १५ मार्च ०३ को समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिभा सम्पन्न होनें के साथ देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित व्यक्तित्व थे। आप सरलता, सहजता, सादगी, सेवाभाव, धर्मनिष्ठा, स्वधर्मि-वात्सल्य आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

नगरी(छत्तीसगढ़)-सुश्राविका श्रीमती हरखूबाई जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री

अनराज जी नाहटा (एवं माता श्री कमलचन्द निर्मलचन्द व महेश नाहटा) का १३ फरवरी ०३ को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। श्रीमती हरखूबाई हंसमुख स्वभाव, आत्मीय व्यवहार, सरलता, सहजता, जीवदया-प्रियता आदि अनेक गुणों के लिए प्रख्यात थीं। प्रतिदिन प्रार्थना, सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, धर्माराधना आपके जीवन के अंग थे। आपके सुपुत्र श्री महेश जी नाहटा ने छत्तीसगढ़ ही नहीं पूरे देश में अहिंसा, शाकाहार, जीवदया एवं व्यसनमुक्ति हेतु उल्लेखनीय कार्य किया है एवं कर रहे हैं। *-रूपेश छाजेड़*

जावद- सुश्रावक श्री भंवरलाल जी चौपड़ा का ७ फरवरी ०३ को ७८ वर्ष की

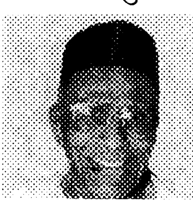

आयु में निधन हो गया। आप जैन समाज जावद के आधार स्तम्भ एवं अंचल के प्रमुख समाजसेवी दानवीर श्रावक थे। आप कानोड़ विद्यापीठ के निदेशक, अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के कार्यकारिणी सदस्य, अ.भा. जैन दिवाकर संगठन के उपाध्यक्ष एवं महात्मा गाँधी महाविद्यालय जावद के १० वर्षों तक अध्यक्ष रहे। सम्प्रति आप श्रावक संघ के अध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन कर रहे थे।

मण्डी गोलूवाला- सुश्रावक श्री ठाकरदास जी छाबड़ा का १ फरवरी ०३ को

स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, साहसी एवं उदारमना थे। आपने अनाथ गोशाला के प्रधान एवं निरीक्षक के रूप में अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित किया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित श्रावक थे।

विजयनगर (अजमेर)—जैन समाज के आधारस्तम्भ प्रमुख उद्योगपति,

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, राष्ट्रीय विचारधारा के प्रबल प्रेरक-पोषक बाबू जी श्री गुलाब चन्द जी चोरड़िया का ८४ वर्ष की आयु में दिनांक २ मार्च ०३ को आकस्मिक रूप से हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। शिक्षा, चिकित्सा, दीन-जन सेवाओं के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। श्री प्राज्ञ महाविद्यालय, श्री महावीर इन्टरनेशनल, विजयनगर की स्थापना में वे नींव के पत्थर थे। इस क्षेत्र की सभी संस्थाओं के निर्माण व पोषण में विभिन्न पदों पर रहकर वे आजीवन सक्रिय रूप से प्रयत्नशील रहे। ***-रतनलाल जैन***

जयपुर—सुश्रावक श्री कुशलचन्द जी नाहर का २५ मार्च २००३ को आकस्मिक

निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धालु श्रावक थे। आपके पिता स्व. श्री कुन्दनमल जी नाहर ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय को अपनी अमूल्य सेवाएँ दी। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की सेवा में रहकर भी उन्होंने सेवा का लाभ लिया। कर्मठ सेवाभावी श्री कुशलचन्द जी नाहर भी अपने पिता श्री के पदचिह्नों पर चलते हुए समाज को सेवाओं से लाभान्वित करते रहते थे।

जयपुर—सुश्राविका श्रीमती कंचनकुमारी जी झाडचूर धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनलाल जी झाड़चूर का २१ मार्च २००३ को अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थीं तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

सांवलता कलां (पाली)—सुश्रावक श्री रायचन्द जी देसरला सुपुत्र श्री

प्रेमराज जी देसरला का १३ मार्च २००३ को ७० वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव था। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने पूज्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार कर श्रद्धा समर्पित की थी। आप अपने पीछे पाँच पुत्रों एवं चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। जोधपुर में आपके दोनों अनुज श्री इन्द्रचन्द जी एवं श्री मोहनलाल जी देसरला

संघ-सेवा एवं सन्त-सती सेवा में समर्पण भाव से अग्रणी भमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

भगवान महावीर जयंती पर पशुवध, मांस और शराब की बिक्री पर पाबंदी लगवाएँ

जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा- दिल्ली ने पूरे देश में अभियान शुरू किया है कि तीर्थंकर प्रभु महावीर की जन्म-जयन्ती पर पूरे देश में पशु-पक्षी वध, मांस एवं शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। इस संदर्भ में महासभा ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी को प्रतिवेदन भी भेजा है।

बूचड़खाने मूलतः प्रदेशों की सरकारों के कार्यक्षेत्र में आते हैं। इसलिए महासभा ने सभी प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों को पत्र भेजकर इस संदर्भ में कार्यवाही करने की मांग की है। सभी जैन सांसदों, जैन समाज से जुड़े अन्य सांसदों, विभिन्न प्रदेशों की सरकारों में जैन मंत्रियों और जैन विधायकों को तथा देश के प्रमुख जैन नेताओं को पत्र भेजकर मांग की गई है कि वे इस संदर्भ में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ तथा यह सुनिश्चित करवाएँ कि इस परम पावन दिवस को "मांस एवं शराब रहित दिवस" के रूप में मनाया जाए। जैन महासभा-दिल्ली ने मूर्धन्य जैनाचार्यों से प्रार्थना की है कि इस संदर्भ में अपने प्रभाव का प्रयोग कर नेताओं को प्रेरित करें कि भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती को "अहिंसा दिवस" के रूप में ही मनाया जाए।

देश के सभी जैन नेताओं और संगठनों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों और प्रदेशों में इस मांग को मुखर करें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले तथा अपने क्षेत्र के सांसद और विधायक से व्यक्तिगत एवं प्रतिनिधि मंडल के रूप में मिलकर ज्ञापन दें और उन्हें इस अहिंसक अभियान को अपना समर्थन देने के लिए प्रेरित करें।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और गुजरात प्रदेश की सरकारों ने महावीर जयन्ती के पावन प्रसंग पर बूचड़खाने बंद रखने तथा पशु-पक्षी हत्या पर पाबंदी लगाने की घोषणा कर दी है। इन प्रदेशों के जैन नेता और जैन संगठन यह सुनिश्चित करें कि इन घोषणाओं की व्यवहार में पालना की जाए। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **प्रो. रतन जैन, महासचिव-जैन महासभा ए-161, अशोक विहार द्वितीय, दिल्ली-110052**

नील गायों की हत्या रोकी जाये

जिस धरती पर दया, करुणा, प्रेम, अहिंसा का दरिया बहना चाहिए वहाँ सरकार ही खून की होली खेल रही है। राजस्थान में वन, राजस्व व पुलिस महकमे के

अफसरों को नील गायों की हत्या करने की अनुमति देने का कानूनी अधिकार है। जब धरती पर लहू बह रहा है, वहाँ अकाल व सूखे की स्थिति दूर होना कैसे संभव होगा? पता नहीं गांधीवादी सरकार को यह कब समझ आएगी कि हिन्दुस्तान की संस्कृति में हत्या करना किसी समस्या का कभी समाधान नहीं हो सकता। नील गायों की समस्या से यदि कुछ लोग परेशान हैं तो उनके लिए कोई भी अहिंसक तरीका अपनाया जाए, परन्तु हत्या की अनुमति का कानून महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण, गुरुनानक, गांधी की दया, अहिंसा, करुणा के साथ स्पष्टता खिलवाड़ है।

आप भी मुख्यमंत्री से यह अनुरोध करें कि कृपया नील गायों को भी जीवन दान दें। उनकी हत्या का फरमान तुरन्त रद्द करें। नील गाय भी पूर्णतया वन्य प्राणी है और उसे भी शेर, बाघ, चीतल, मृग, हिरण, भालू, मोर, सांभर आदि वन्य जीवों की तरह जीने का संवैधानिक रूप से भी अधिकार प्राप्त है। जब सारे संसार में वन्य प्राणियों के जीवन के प्रति मानवाधिकारों की बात उठ रही है, फिर नील गायों को भी जीवन दान मिलना चाहिए। यदि दया, अहिंसा की भावना को अपनाकर मुख्यमंत्री जी ने आपकी पहल पर नील गायों की मार्मिक पुकार सुन ली तब यह बहुत बड़ा पुण्य सिद्ध होगा। **–कमलकिशोर गहलोत, पालासनी, जोधपुर**

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य हस्तीमल जी म.सा. की जीवनी का शीघ्र प्रकाशन

सूचित करते हुए प्रमोद का अनुभव हो रहा है कि रत्नवंश के सप्तम पट्टधर अध्यात्मयोगी, चारित्रचूड़ामणि, उच्चकोटि के साधक सन्त, युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. का जीवन-ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है। पूज्यप्रवर के जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सर्वाङ्ग सामग्री से परिपूर्ण ६०० पृष्ठों से भी अधिक के इस अमूल्य मार्गदर्शक एवं प्रेरक ग्रन्थ के प्रकाशन में जो श्रद्धालु साधर्मी बन्धु अर्थ-सहयोग कर अपनी श्रद्धा समर्पित करना चाहें, उनका हार्दिक स्वागत है। प्रत्येक सहयोगी २०,००० रुपये की राशि का सहयोग कर न्यूनतम १० प्रतियाँ निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। अधिक प्रतियाँ उन्हें पचास प्रतिशत मूल्य पर दी जा सकेंगी। अर्थ सहयोगी की नामावली अकारादि क्रम से प्रकाशित की जाएगी। सम्पर्क ३० अप्रेल २००३ के पूर्व अपेक्षित है।

सम्पर्क सूत्र– ज्ञानेन्द्र बाफना,
अध्यक्ष–श्री हस्ती स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति,
सी–55, शास्त्री नगर, जोधपुर–342003 (राज.)
फोन नं. 0291–2434355, 2645061

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9106 Shri Anil Kumar Ji Lodha, Gad Chandur, Chandrapur(M.H)
9107 Shri Nathmal Ji Nirmal Kumar Ji jain, Surat (Gujrat)
9108 श्री अशोक कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
9109 श्री सुरेश जी बंसल, नारनौल (हरियाणा)
9110 Shri Ashutosh Ji Singhvi, Baroda (Gujrat)
9111 श्री (डॉ.) ज्ञानचन्द जी बैद (जैन), रायपुर (छत्तीसगढ़)
9112 श्री सुभाष जी बाफना, जयपुर (राज.)
9113 श्री वीरेन्द्र जी बाफना, जयपुर(राज.)
9120 श्री राजमल जी पुत्र श्री कस्तुरचन्द जी चोरड़िया, उज्जैन (म.प्र.)
9121 श्रीमती शैल जी जैन (सांखला), चालीसगांव (महा.)
9122 श्री राहुल जी राजेन्द्र जी पगारिया, रायपुर, पाली-मारवाड़ (राज.)
9123 श्री कान्तिलाल जी हीरालाल जी खिंवसरा, मुकटी, धुलिया (महा.)
9128 श्री माणकचन्द जी खिंवसरा, मुम्बई (महा.)
9132 श्री (डॉ.) अरूण जी जैन, जोधपुर (राज.)
9133 श्री अनिल जी जैन, जोधपुर (राज.)

श्रीमान अमरचन्द जी मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9124 श्री नवरतनमल जी समदड़ीया, वणी, यवतमाल (महा.)
9125 श्री माणकचन्द जी कोटेचा, वणी, यवतमाल (महा.)
9126 श्री चेतनभाई केवलचन्द जी पूनमिया, बोडीं, ठाणे (महा.)
9127 श्री रमेशचन्द जी गुलाबचन्द जी पारख, सिल्वासा, दादरानगर हवेली (गुज.)
9129 श्री चन्द्रराज जी मिश्रीलाल जी बोथरा, डहाणु, ठाणे (महा.)
9130 श्री भागचन्द जी मिश्रीमल जी कर्णावट, डहाणु, ठाणे (महा.)
9131 श्री प्रकाशचन्द जी भगवानदास जी बाफना, डहाणु, ठाणे (महा.)

300/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9114 श्री महिम जी पुत्र जी.एस. भण्डारी जी, भोपाल (म.प्र.)
9115 श्री (डॉ.) अशोक कुमार जी पुत्र नेमीचन्द जी भण्डारी, जबलपुर (म.प्र.)
9116 श्री विजयकुमार जी समरथमल जी जैन, खाचरोद, उज्जैन(म.प्र.)
9117 श्री संजय जी पुत्र मणिकलाल जी नाहर, भोपाल (म.प्र.)
9118 श्री जतिन जी विजय जी नाहर, इन्दौर (म.प्र.)
9119 श्री विजयसिंह जी पुत्र चन्दनमल जी डागा, भोपाल (म.प्र.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

5100/– गुप्तदान, जयपुर सप्रेम भेंट।

5100/– श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुरत, परम श्रद्धेय आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सुरत पधारकर मुमुक्षु बहन पायल खिंवसरा को दीक्षा प्रदान करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/– श्री एस.सी. जैन एवं श्रीमती प्रमिला जी जैन, जयपुर, अपने सुपुत्र चि. राजेश जैन का शुभ विवाह सौ. का. पायल (सुपुत्री श्री सुरेश जी मेड़तवाल, अजमेर) के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/– स्वर्गीय श्री कपूरचन्द जी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले) के सुपौत्र एवं श्री पारसजी कांकरिया जलगांव के सुपुत्र चि. आकाश (बण्टी) एवं सौ. का रितु का शुभ विवाह 20 जनवरी 2003 को विशाखापट्टनम में होने की खुशी में भेंट।

1100/– श्री सुनील जी, धर्मेन्द्र जी लुणावत, जयपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री विरेन्द्रकुमार जी लुणावत का स्वर्गवास दि. 16 फरवरी 03 को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट। इस संदर्भ में यह लिखना प्रासंगिक होगा कि श्रीमान् विरेन्द्रकुमार जी लुणावत की माताश्री श्रीमती इचरजबाई सा ने कुछ वर्षों पहले 165 दिनों के उपवास किये थे।

1100/– श्री प्रवीण जी नाहर, जयपुर, पूजनीय पिताश्री श्री कुशलचन्द जी नाहर (सुपुत्र स्व. श्री कुन्दनमल जी नाहर) का स्वर्गवास दिनांक 25.03.03 को हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में।

1001/– श्री सुमतिचन्द जी कोठारी, जयपुर, चि. हेमन्त जी कोठारी को दि. 5.02.03 को पुत्र रत्न की प्राप्ति की खुशी में सप्रेम भेंट।

504/– श्री हिम्मतमल जी, जतनमल जी, अरविन्द कुमार जी, बलवन्त कुमार जी चौपड़ा, जावद (म.प्र.), पूज्य पिताजी श्री भंवरलाल जी चौपड़ा की पुण्यस्मृति में भेंट।

501/– श्री हरिप्रसाद जी जैन, मण्डावर (जिला–दौसा, राजस्थान), सुपौत्र चि. प्रताप जी (सुपुत्र श्री किशनचन्द जी जैन) का शुभ विवाह सौ. का. रिंकी (सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जयपुर) के साथ दिनांक 5.03.03 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/– श्री अचलराज, जितेन्द्र, सुरेश एवं हर्ष डागा, जोधपुर, पूज्य माताजी, दादीसा, पड़दादीसा श्रीमती बृजकंवर जी डागा, धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्द जी डागा, जोधपुर के दिनांक 22.03.03 को स्वर्गवास होने की स्मृति में।

501/– श्री पुखराज जी, पारसमल जी गिड़िया, जोधपुर, पूज्य माताश्री श्रीमती राजकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री कुन्दनमल जी गिड़िया की पावन स्मृति में।

501/– श्री भागचन्द जी सेठ, जयपुर, सुपौत्र चि. नन्दन जी (सुपुत्र श्री हेमेश जी सेठ) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/– श्री प्रशान्त जी कर्णावट, जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री मोतीचन्द जी कर्णावट की दिनांक 15.03.03 को उपस्थित पुण्य तिथि पर भेंट।

500/– श्री अचलराज, जितेन्द्र, सुरेश एवं हर्ष डागा, जोधपुर, पूज्य माताजी, दादीसा, पड़दादीसा श्रीमती बृजकंवर जी डागा, धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्द जी डागा, जोधपुर के दिनांक 22.03.03 को स्वर्गवास होने की स्मृति में।

300/– श्री कजोड़मल जी जैन (देवरी वाले), अलीगढ़–टोंक की ओर से सप्रेम भेंट।

251/– श्री उगमराज जी एवं श्रीमती चांदकंवर जी सुराणा, जयपुर द्वारा अपने ज्येष्ठ सुपुत्र श्री महेन्द्र जी सुराणा द्वारा संचालित एवं जयपुर दूरदर्शन से प्रसारित क्विज कार्यक्रम "प्रश्नोत्तरी" के लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस में देशभर के टेलीविजन चैनलों पर चल रहे सभी क्विज कार्यक्रमों में सर्वाधिक लम्बे समय

से चल रहे क्विज कार्यक्रम के रूप में दर्ज होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

251/– श्री उगमराज जी एवं श्रीमती चांदकंवर जी सुराणा, जयपुर, अपने ज्येष्ठ सुपुत्र श्री महेन्द्र जी सुराणा एवं पुत्रवधू सौ. प्रमिला जी सुराणा के परिणय बंधन की 25वीं वर्षगांठ फाल्गुन कृष्णा अष्टमी सं. 2059 दिनांक 24.02.03 को उपस्थित होने के उपलक्ष्य में भेंट।

251/– श्री अमरमल जी मेहता, जोधपुर, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पी. डब्ल्यू. डी. कॉलोनी में पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

251/– श्री हस्तीमल जी एवं श्रीमती कमलादेवी जी बोहरा (रतकुड़ीया वाले), पीपाड़ सिटी, अपने सुपुत्र श्री जितेन्द्रकुमार का शुभ विवाह सौ. का. सुमन सुपुत्री श्री जबरचन्द जी कोठारी (मेड़ता सिटी वाले), चेन्नई के साथ 4 मार्च 03 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

250/– श्री रोशनलाल जी चीपड़, चित्तोड़गढ़, सुपुत्र चि. गौतम का शुभविवाह सौ. का. मोनिका सुपौत्री श्री इन्दरचन्द जी सांखला (सुपुत्री श्री चन्द्रसिंह जी सांखला), ब्यावर के साथ होने के उपलक्ष्य में।

201/– श्री जम्बुकुमार जी जैन, अलीगढ़, सुपुत्र श्री पवनकुमार जी जैन (आर.पी.एस.) का शुभ–विवाह सुश्री मंजु जी सुपुत्र श्री जगदीशप्रसाद जी जैन, इन्दौर के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

201/– श्री प्यारेलाल जी महेन्द्रकुमार जी मुणोत, नागपुर (महा.)

200/– श्री गौतमचन्द जी सिंघवी (जोधपुर वाले), स्व. तनु जी नाहर की पुण्य स्मृति में भेंट।

200/– श्री प्रकाशमल जी बोथरा, चेन्नई, सांवटा में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के होली चातुर्मास पर पावन दर्शनों के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

101/– श्री सरूपचंद जी, जयकुमार जी जैन, हिण्डौन सिटी, अपनी सुपौत्री सौ. कां. राजकुमारी जी जैन का शुभ विवाह18 फरवरी 03 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

101/– श्री नवरतनमल जी लोढ़ा एवं श्रीमती कमलादेवी जी लोढ़ा, जयपुर, अपने विवाह की पचासवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

101/– श्री विनयचन्द जी संचेती, जयपुर, श्रीमान ताराचन्द जी संचेती की पुण्य स्मृति में भेंट।

101/– श्री विनयचन्द जी, प्रकाशचन्द जी खवाड़, जयपुर, अपनी माताश्री श्रीमती मीनादेवी जी खवाड़ (धर्मपत्नी स्व. श्री उमरावमल जी खवाड़) का स्वर्गवास दिनांक 24.02.03 को हुआ, उनकी पुण्यस्मृति में भेंट। श्रीमती मीनादेवी जी खवाड़ ने मृत्यु पर अपने नेत्र दान किये।

100/– श्री धर्मराज जी सुराणा, भण्डारा, चि. अजीत की शादी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

100/– श्री महावीर जी बांठिया सिन्धनूर (कर्नाटक), श्री इन्द्रचन्द जी बांठिया की पुण्य स्मृति में भेंट।

100/– श्री नौरतनमल जी गांग एवं श्रीमती किरणकंवर जी गांग, जोधपुर, चि. अखिल पुत्र श्री अनिल कुमार जी गांग के जन्म–दिवस दिनांक 11.1.03 के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

100/– श्री नौरतनमल जी गांग एवं श्रीमती किरणकंवर जी गांग, जोधपुर, चि. ओमिल पुत्र श्री प्रवीण जी गांग के जन्म–दिवस दिनांक 30.12.02 के उपलक्ष्य

में सप्रेम भेंट।

51/— श्री मगनचन्द जी, मुरारीलाल जी जैन, हिण्डौन सिटी, अपने लघुभ्राता चि. मुकेशकुमार जी का शुभ विवाह सौ. कां. राजकुमारी जैन के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

जीव-दया हेतु साभार-प्राप्त

101/— श्री केवलचन्द जी जैन (जरखोदा वाले), जयपुर, अपने सुपौत्र एवं श्री पुखराज जी जैन के सुपुत्र के जन्मोत्सव की खुशी में भेंट।

100/— श्री स्वरूपचन्द जी, उत्तमचन्द जी संचेती, पिंप्री, जलगांव, श्री दिनेश जी की राजस्थान यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

100/— श्री प्रेरणा जी मेहता, नागपुर, श्री चिन्तन जी मेहता (एम.ई.) मेरिट में आने की खुशी में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को साभार-प्राप्त

2,00,000/—श्री गजेन्द्र निधि, मुम्बई से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को आर्थिक सहयोग।

आचार्यप्रवर श्री हस्तीस्मृति सम्मान हेतु साभार-प्राप्त

11000/— श्री स्वाध्याय समिति, चेन्नई, विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान के लिए आचार्यप्रवर श्री हस्तीस्मृति सम्मान के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग हेतु सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाश हेतु साभार-प्राप्त

30000/—श्री जी.एस. प्यारेलाल जी सा. जैन (कोठारी), चेन्नई से जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग—1 व भाग—4 के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

35000/—श्री स्वाध्याय समिति, मद्रास।

5100/— श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुरत, परम श्रद्धेय आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सुरत पधारकर मुमुक्षु बहन पायल खिंवसरा को दीक्षा प्रदान करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/— श्री रतनचन्द सा लोढ़ा, जयपुर।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को साभार-प्राप्त

501/— श्री सोहनलाल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. शुभकरण की शादी के उपलक्ष्य में।

151/— श्री रामसहाय जी जैन, इन्द्रा कॉलोनी, सवाईमाधोपुर, चि. डॉ. लोकेश जैन की शादी के उपलक्ष्य में।

101/— श्री सौभागमल जी धर्मचन्दजी, कुश्तला, अपने सुपुत्र की शादी के उपलक्ष्य में भेंट।

संशोधन

जिनवाणी मार्च 2003 के सम्पादकीय में भ्रमवश आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 66वाँ जन्म—दिवस लिख दिया गया था, जबकि आचार्य श्री का इस वर्ष 65वाँ जन्म—दिवस ही था। आपका जन्म 13 मार्च 1938 को नहीं 13 मार्च 1939 को हुआ था। *-सम्पादक*

जिनवाणी पर अभिमत

करीब हजारों किलोमीटर की दूरी पर उड़ीसा राज्य के जैपुर झाड़ी नगर में हिन्दी मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' मुझे बराबर मिल रही है। करीब दो वर्ष पहले ही मैंने इसकी आजीवन सदस्यता ग्रहण की। बचपन से ही गुरु हस्ती एवं गुरु हीरा के भी दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। जिनवाणी में किसी भी सम्प्रदाय का आपसी विरोध नहीं। परम पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्रद्धेय श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रवचन, कभी उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी म.सा. के प्रवचन एवं कभी गौतममुनिजी म.सा. के प्रवचन हृदय के अन्तर्गत इतनी गहराई में चिन्तन-मनन को प्रकट करते हैं कि मानो सामने ही प्रत्यक्ष प्रवचन दे रहे हैं। दिल में कभी-कभी तो वैराग्य की भावना जैसे ओतप्रोत हो जाती है। धन्य-धन्य ऐसी महान विभूतियों को कि आज समाज को नई-नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। अभी-अभी इसी फरवरी अंक में पूज्य गुरुदेव ने ऋषि परम्परा और आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के बारे में जो कुछ प्रकाश डाला, पढ़कर काफी जानकारी के साथ हृदय में यह महसूस हुआ कि पूज्य गुरुदेव किसी से भी परस्पर भेदभाव, आपसी छींटा-कसी नहीं करते हैं। प्रवचन बार-बार पढ़ने को मन करता रहता है। जब भी जिनवाणी मिलती है, प्रथम प्रवचन के ऊपर मेरी दृष्टि पड़ जाती है।

दुनियां में पेपर व पत्रिकाओं की आपस में होड़ है। सभी अपना-अपना नाम करने में लगे हुए हैं, लेकिन 'जिनवाणी' जब भी निकलती है सभी लोग पोस्ट का इन्तजार करते रहते हैं। यह पत्रिका न किसी से तुलना करती है, न किसी की आलोचना करती है, यह अपने आप में मस्त रहती है। इसलिए हजारों लोग इसे चाव से, खुशी से पढ़कर आत्मा से गले लगाकर जीवन में कुछ उतारते हैं। पत्रिका जिनवाणी के बारे में जितना लिखा जाये उतना कम है।

दिनांक २५.२.03 *चेतन सांखला, जैपुर झाड़ी (उड़ीसा)*

मार्च २००३ का अंक आज प्राप्त हुआ। सम्पादकीय "वन्दन है अभिनन्दन है" में आचार्यप्रवर की वीरता को उजागर कर जिनशासन का गौरव बढ़ाया है। हमारे बड़ों की कर्मस्थली जामनेर की सुश्राविका सौ. मंगलाबाई चोरड़िया का लेख "स्थानकवासी परम्परा की मान्यताएँ" प्रामाणिक जानकारी की एक मिसाल है। वे भी बधाई की पात्र हैं।

दिनांक १७.3.03 *पारसमल कुचेरिया, जयपुर*

आपके द्वारा प्रेषित जिनवाणी विशेषाङ्क प्राप्त हुआ, धन्यवाद। इस प्रकार के और भी विशेषाङ्क प्रकाशन योग्य हैं। जैसे-जैन कथा साहित्य विशेषाङ्, जैन महाकाव्य विशेषाङ्क, जैन खण्ड काव्य विशेषाङ्क, जैन नीतिकथा विशेषाङ्क, जैन न्याय विशेषाङ्क, जैन पुराण विशेषाङ्क आदि। जैन आगम विशेषाङ्क पठनीय और सराहनीय हैं।

दिनांक १८.03.03 *रमेशचन्द जैन*

"आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान" के लिए कृतियाँ आमन्त्रित

परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रायोजित "आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान" के लिए कृतियाँ आमंत्रित हैं। इसके नियम आदि इस प्रकार हैं-

१. यह सम्मान प्रतिवर्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से जैन धर्म संबंधी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य (काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, जीवनी आदि विधाएँ) विषयक किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ पर दिया जाता है। रचनाओं का मौलिक होना अनिवार्य है। मौलिकता का प्रमाण-पत्र लेखक/ प्रकाशक को देना होगा। सम्पादित (संकलित) ग्रन्थ स्वीकार्य एवं मान्य नहीं होंगे। सम्मान राशि रुपये २१,०००/- (अक्षरे रुपये इक्कीस हजार मात्र) के साथ प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किया जायेगा।

२. मण्डल यह राशि सम्मानार्थ उस विद्वान् को भी भेंट स्वरूप दे सकता है जिसने जैन धर्म संबंधी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य आदि क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है।

३. इस सम्मान के लिए देश-विदेश के विद्वान् समान रूप से अधिकारी होंगे।

४. प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ हिन्दी भाषा में होना चाहिए।

५. सम्मान-वर्ष के पूर्व की अवधि में प्रकाशित ग्रन्थ ही विचारार्थ स्वीकार्य होंगे।

६. ग्रन्थ की (प्रकाशित अथवा अप्रकाशित) चार प्रतियाँ मण्डल कार्यालय को भेजना आवश्यक है।

७. ग्रन्थ ३१ जुलाई २००३ तक मण्डल कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए। इस तिथि के बाद प्राप्त ग्रन्थों पर विचार नहीं किया जायेगा।

८. मण्डल की सम्मान चयन समिति का निर्णय सर्वमान्य होगा।

९. ऐसे ग्रन्थों पर विचार नहीं किया जायेगा जो खण्डों में प्रकाशित हो रहे हों और अभी तक अपूर्ण हों, लेकिन अपने आप में पूर्ण, किन्तु खण्डों में प्रकाशित ग्रन्थ पर विचार किया जा सकता है।

उक्त सम्मान के लिए विचारार्थ अपनी कृतियां निम्न पते पर भेंजे-

प्रकाशचन्द डागा

मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)

फोन नं. 0141-2565997

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

घोड़ों का चौक, जोधपुर – 342 001
फोन : 0291-264 1445, फैक्स : 263 4528 ई-मेल : yuvakparishad@yahoo.co.in

'जिनवाणी स्तम्भ/संरक्षक सदस्य बनाओ' राष्ट्रीय अभियान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित जैन धर्म की ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी मासिक पत्रिका **'जिनवाणी'** के ***स्तम्भ एवं संरक्षक सदस्य*** बन कर इसे सुदृढ़ आधार प्रदान करें।

"जिनवाणी" जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृति की विशिष्ट प्रतिष्ठित लोकप्रिय पत्रिका है जिसका प्रकाशन विगत 60 वर्षों से अनवरत हो रहा है। इस पत्रिका में देश भर के विभिन्न सन्तों, विद्वानों एवं लेखकों की रचनाएं प्रकाशित होती है। पत्रिका की मुख्य विशेषता है कि यह सभी सम्प्रदायों की भावनाओं का आदर करते हुए एक सकारात्मक व नई सोच प्रदान करती है। इस पत्रिका के अध्ययन से जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास व सम्यक दृष्टि प्राप्त होती है। समय-समय पर इस पत्रिका के प्रकाशित विशेषांक अत्यधिक लोकप्रिय हुए है। वर्तमान के इस भौतिक युग में पत्रिका युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

युवक परिषद् द्वारा शासनपति श्रमण भगवान महावीर के 2600 वें कल्याणक वर्ष में युवारत्न बंधुओं एवं आप सभी के सम्मिलित भागीरथ प्रयासों से राष्ट्रीय अभियान के तहत् जिनवाणी के 2712 आजीवन सदस्य बनाये गये, यह एक विनम्र उपलब्धि है। अब हमें जिनवाणी को सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान करने में अपना योगदान देने का कर्तव्य निर्वहन करना है। युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने इस हेतु इस वर्ष में कम से कम 250 **स्तम्भ सदस्य** (सहयोग राशि रु.11000) व **संरक्षक सदस्य** (सहयोग राशि रु.5000/-) बनाने का लक्ष्य रखा है।

आप स्वयं अपना सहयोग तो प्रदान करें ही, अन्य साथियों, इष्ट मित्रों व परिजनों को भी जिनवाणी के **स्तम्भ** व **संरक्षक सदस्य** बना कर इस लक्ष्यपूर्ति में सहभागी बनने हेतु प्रेरित करें व जिनवाणी को सुदृढ़ आर्थिक सम्बल प्रदान करने में अपना महनीय योगदान करें। शाखा प्रमुखों से निवेदन है कि बनाए गए सदस्यों की जानकारी प्रधान कार्यालय में भेजें ताकि उनके नाम पते जिनवाणी में प्रकाशित किये जा सके।

इच्छुक व्यक्ति 11000/- अथवा 5000/- का ड्राफ्ट/मनीआर्डर, जिनवाणी, जयपुर के नाम का बनवाकर स्तम्भ/संरक्षक सदस्य बन सकते है। ड्राफ्ट/मनीआर्डर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ो का चौक, जोधपुर-342001 स्थित प्रधान कार्यालय को भिजवायें।

❖ आपसे सहयोग की आकांक्षा के साथ ❖

अनिल बोहरा, FCA अध्यक्ष	**डॉ. राकेश कांकरिया** महासचिव	**कुशल गोटेवाला** कार्याध्यक्ष

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD

RAVINDRA KAVAD

NAVARATHAN KAVAD

ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान ।।

JAI GURU HASTI

GHT

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है, जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को काटने वाला है।

- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director

HEMANT SANCHETI

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
GRACE
All major credit cards accepted...

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 02
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com
visit us at www.kalpataru.co

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।